
कविकुलगुरु-कालिदास-संस्कृत-विश्वविद्यालयः

शान्तिनाथ जैन (दिगम्बर) मंदिर, रामटेक

पंचमंगल पूजा, पृष्ठसंख्या 84, आकार 18 x 29
पंक्ती - 26, अक्षर - 16, पोथी - संपूर्ण

ACC. No. M 2156.

पंचमंगलभाषा	३		चितुर्ता०
लघुअभिषेक	६	४७	विनती०
जलधारा	७	४८	आरती०
पूजाप्रथमपाठ	८	४९	विसर्जन
प्रथमदेवपूजादेवगुरु	११	४८	तत्वार्थजी
रुशास्त्रकीभाषा		५८	सहस्त्रनाम
बीसतीर्थंकरवहिरमा	१३	६५	सम्मेदसिखरविधान
नपूजाविदेहकीभाषा			भाषा
सीताशीतलमधुडोसः	१४	८०	वहिरमानपूजाकेअंग
सिद्धपूजा०	१५	८२	सिद्धपूजाकेअंग
सोलहकारनपू:भाषा	१७	८३	सोलहकारनपूजाकेअंग
पंचमेरूपूजा०	१९		
दसलाक्षिणपू:भाषा	२६		
रतनत्रयपूजाभाषा	२८		
अष्टानकाकीपूजा	३२		
सिद्धक्षेत्रपूजासि			
खरकीभाषा:	३४		
आदित्तवारव्रत	३६		
पूजा			
अनंतचौदसव्रत	३८		
पूजासंस्कृत०			
पचमेरुपूजाभा	४२		
षा			
जेष्ठजिनवरपूजा	४४		
भाषा०			
शांतिपाठ	४६		

जयर्ह्ंनमः॥सिद्धेभ्यः॥अथ
पंचमंगललिष्यते॥पनवि
विपेचपरमगुरुजेजिणशा
शणं॥सकलसिद्धदातारसौवि
घणविणासणं॥सारदअरुगु
रुगौतमसुमतप्रकासकोमं
गलकराहिं चौसंगतोपापाप
नासणं॥पापापणांसणगुण
हिगरूआदोषअष्टादसर
हे॥धरध्यांणकेवलज्ञाण
अविचलजिणसहे॥प्रभुपंच
कल्याणकविराजतसकलसु
रनरध्याइयै॥त्रैलोकनाथसु
देवजिणवरजगतमंगलगा
ईयै॥आणंदमंगलगाईयैभ
गवांणकैगुणगाईयै॥जासो
परमपदपाईयै॥जिणजूके
गर्भकल्याणकधणपतिआई
यौ॥अवधिज्ञाणपरवांणतौ
इंद्रपठाईयौ॥रुचनववाराजो
जणनगरसुहावनी॥कनकर
यणमणिमंडिफमंडिफअति
वनी॥अनवणीहैपोरपगार
पुरुषां॥सघनउपवनसोहयो॥

प्र: मंगल

१

नरनारसुंदरचतुरभेषसुदेषज
नमनमोहये॥ तहांजराकगरहछह
मासप्रथमहिरतनधाराबर्षियो॥
पुनरुचकवासनीजननिसेवाकर
हिसबविधहर्षियो॥ स्वरकुंजरस्यो
मकुंजरधवलधुरंधरौ॥ केसरीकेहरि
सोभैतोनषासिषस्वंदरौ॥ कमलाक
मलनयनहोयदामसुहावनी
रविससिमंडलमधरमीराजुग
पावनी॥ पावनीकनकघटयुगमपू
रनकमलकालितसरोवरा॥ कल्लो
लमालाकलितसागरसिंघपीठ
मनोहरा॥ रमणीकअमरविमाण
फनिपतिभुवनभविसयछाजर
तायरात्नरासितपंतिदहनसुते
जपुंजविराजए॥ एसषीसोलहि
स्वपनौंसूतीसैनहीं॥ देषमनोहे
रमायपश्चिमरैनहीं॥ ७ प्रभातपि
यपूछियो॥ अवधिप्रकासियो वि
भुअनपतिसुतहौसिफलतिहभा
षियो॥ भाषियोफलतिहचित
दंपतिपरमआनंदअतिभये॥ छ
हमासपरनवमांसबीतरयणाद्दिण
सुषसौगये॥ गरभावतारमहंत
महिमांस्वनतसवसुषपाईये॥ त्रे

गलगाईयौ॥४॥ग्रलिप्रथममंगसं॥१
मालिस्रुत ग्रवधिविराजित जिरा ज
वजन्मियो॥तिहूलोकभयोक्षोभित
सुरगराभरामियौ॥कल्पवासीघ
रघंटग्रनहतवाजियौ॥जोतिषघ
रहरनादसाहितगलगर्ज्जियौ ग
जयातिसद्द जहसंखभावन भवन
शाद्दग्रहावतै॥व्यंतरनिलयप
टपटहिवाजतकहतकौमाहिमा
वनै॥कंपितसुरासनग्रवधिवल
जिगाजन्मनिश्चहजानियो॥धन
राजतवगजराजमायामईनिरभय
ग्रानियौ॥५॥जोजगालाषगयेद
वदगासोनिर्मये॥वदनवदनवसु
दंतदंतसरसरठये॥सरसोपगावी
सकमलनीछाजहीं॥कमलनीक
मलनीकमलपचीसविराजहीं
राजहितैंकमलनकमलग्रठोतर
सोमनोहरदलवनै॥दलदलग्र
पछरानटतिनाटलहावभावसुभाव
नै॥तहंकनककेकरगामनिबिचित्र
सोग्रमरमंडपसोहयौ॥घनघंटच
मरध्वजापताकादेषित्रिभुवरामो
हियौ॥६॥तिहकरहरीचढिग्रायो
स्योपरवारसौ॥पुरहप्रदछिरादेत

मंगल
२

कीजननीकौंसुषनिद्रारची ॥ मायामई
सुतराषतोजिराआन्योशची ॥ अन्यौ
सचीजिरारूपदेषतनथनचपतिन
पूजिए ॥ नवपमिहराषितहृदयहरलोस
हसलोचराङ्गाजिए ॥ पुनिकरिप्रणाम
सुष्षमइंद्र७छंगधरप्रभुसीनये ॥ सो
धर्मेश्वरईसानइंद्रसुचंद्रछविसिर
छत्रसिरप्रभुलीनऐ ॥ ७ ॥ सनत्कुमार
माहिंद्रचमरदोयढारही ॥ शेषचक्र
जयजयजयशवदउचारही ॥ उछव
सहितचतुरविधिसुरहरिषितभयेजो
जरासहसनिस्पानवेगगनउलघे
गयौ ॥ गयेसुरगिरजहांपांडुकवनावि
चित्रविराजये ॥ पांडुकाशिलातहांअर्धे
चंद्रसमाराममरिाछविछाजए ॥ जो
जरापचासविसालदुगानिआपुवसु
उंचीघनी ॥ वरअष्षमंगलकनककल
सनिसिंघपीठसुहावनी ॥ ९ ॥ रचिम
रीमंडपसोभितमध्यसिंहासरां ॥
पाघ्यौपूरवमुष्षतहांप्रभुकमलास
ना ॥ बाजहितालमृदंगवरासावीरा
घनौ ॥ दंद्रिभिप्रमुरवमधुरध्वनिअौ
रजिवाजराो ॥ बाजरोबाजहिसचीस
वमिलधवलमंगलगावही ॥ अतिक
रतिनृत्यसुरांगनासबदेवकौतिकल्पा

षसुरगुरुस्यावही॥सो धर्म्म अरुईसा
नईद्र चंद्रसुकलसले प्रभुन्हावई ॥ ७॥
वदन कुंदरअवगाहकलसगतिओ
नियो॥ एकच्यारिवसु जोजणमाण
प्रमानियै॥ सहसअठो त्तरकलसतेप्र
भुके सिरढरै॥ फुनसिंगारप्रमुखअ्याचा
रसवैकरो॥ करिकरअचर्जपूजागिरिप्रभु
महिमा महीं छव आनि फुनिमातो है
यो॥ धनपति हसेवाराविसुरपतअ्या
पस्वरलो कसिधायो॥ जन्माभिषेकमहं
तमहिमासुन्तसयसुथपाईये त्रै
लोक्यनाथसुदेवजिणवर॥ जगतमे
गतगाईये॥ भानेदमंगलगाईये॥ जा
सोपरमपदपाईये॥ इतिद्वतियमंग
ल॥ २॥ श्रमजलरहितसरीरसदासव
मलरहो॥ षीरबरणबरुधिरप्रथमआ
कृतिलयो॥ प्रथमाहिसारसे हननसरू
पविराजही॥ सहजसुगंधसुलछिनमं
डितछाजही॥ छाजहीअतुलबलपरम
प्रियहितमधुरबचणसुहावने॥ दसस
हजअतिसयसुभगमूरतिवालनील
कहावने॥ आबालकालत्रिलोकपति
मनिरुचितउचितजुनितनये॥ अमरो
पुनीतिअनेकअनुपमसकलभोगत
भोगये॥ ११॥ भयतनुभोगविरक्तकदा
चितचिंतियो॥ धणजोबणपियपुतकलि

व्र: मंगल॥

३॥

तअनित्यसो॥ मोहनशरणामरणादि
नहरवचहुंगतिभरयो॥ दुखसुखए
कोहैभुगतजीवविधिवसुपस्यो॥ परयो
विधिवसिआनचेतनआनजेइसुकले
वस्यौ॥ तनअसुचपरसैहोयआश्रव
परहारहसोसंवरो॥ निर्जरातपबल
होयसमाकितविनुसदात्रिभुवणभ्रम्यो
दुर्लभविवेकविनानकबहुंपर्म्मध
र्मविविखेरम्यो॥ १२॥ एप्रभुबारहप
वणभावणभाइयो॥ लोकांतिक
बरदेवनवैगीआइया॥ कुसमांजलि
देचरनकमलसिरनाइयो॥ स्वयंवुध
प्रभुजीनेथुतिकरीतिणसमजाई
यो॥ समगाथप्रभुकोगयोनिजपरकु
निमहेत्थवहरिषियो॥ रुचिरुचिरचि
चविचित्रशिवकाकरीसुनंदनबन
लियो॥ तिहांपंचमुष्टीलौंचकीनो
प्रथमसिद्धहिस्तुतिकरी॥ मंडियमहा
व्रतपंचदुर्धरसकलपरीग्रहपरिहरी
१३॥ मणिमयभाजणकेसपरीठयो
सुरपति॥ क्षीरसमुद्रजलक्षिपक
रिगयेअमरावती॥ तपसंजमब
लप्रभुजिकैमनपरजैभयो॥ मौनस
हिततपकरतकालकेछुतहांगयो
गयोतहांकछुकालतपबलरिध
[illegible]

णविखेनखिपगये सत्रप्रकृति
प्रसिद्धिया॥सीपसातवैगुणथा
णबलतिहतीनप्रकृतिजुशुद्धबधो
करिकरणतीनप्रपमसुकलबल
खपकश्रेणीप्रभुचढ्यो॥१४॥प्रकृति
छत्तीसनवैगुणथ्यानविनासिया
दसमैंसूक्ष्मलोभप्रकृतितिलेहांत्रा
सिया॥शुक्लध्यांणपदजोफुनि
प्रभुपूरियौ॥बारहमैंगुणसोलहा॥
प्रकृतिजुचूरियौ॥चूरियौत्रैसठप्र
कृतिइहिविधिघातियाकर्मातत
नी॥तपकियौध्यांणपर्यंतवारह
विधितैलोकशिरोमनी॥निःकु
मणकल्यानकसुमहिमासुनतस
बसुखपाईयै॥त्रैलोक्यनाथ्यसुदेव
जिनवरजगतमैगलगाईयै॥१५॥
इतितृतीयमंगलं॥३॥तेरहमैंगुण
थांणसयोगजिणेस्वरौ॥अनंतच
तुष्टयमंडितभयौपरमेस्वरो॥समव
शरनतबधनपतबहुविधिनिरमयो
आगमजुगतिप्रमांणगगनतलपर
ठयो॥परठ्योचित्राविचित्रमाणीमय
सभामंडपसोहयै॥तहमध्यबारह
बणीकोठैवनकसुरनरमोहयै॥मुनक
लपवासनिअर्जकातहां॥ज्योति
भौमभुवनातिया॥फुनिभवणभौम

च. मंगल

॥५॥

सुकल्पस्वरनरपसुनकोठावैठिया
१६॥ मध्यप्रदेसतोरणिमाणिपीठति
हावनै॥ गंधकुटीसिंहासनकमलसु
हावनै॥ तीनछत्रसिरशोभितत्रि
भुवनमोहये॥ अंतरीछकमला
सनप्रभुतनसोहये॥ सोहयेचौस
ठिचमरढरतअशोकतरुतलछा
जए॥ धुनिदिव्यध्वनिप्रतिशब्दजन
तहदेवदुंदुभिवाजए॥ सुरपुष्पवृष्टि
सुप्रभामंडलकोटिरविछविछाजए
इमअष्टअनुपमप्रातिहार्यवरविभू
तिविराजए॥ १७॥ योजनशात
प्रमाणसुभछविचहूंदिसोग
गणमगणअरिप्राणिवधणाञ्च
होनिसैं॥ निरूपमसर्गनिहारसहि
जगदीसियै॥ आननच्यारोचहूं
दिसशोभितदीसिये॥ दीसेअशे
षविशेषविद्याविभववरईस्वरप
नो॥ छायाविवर्जितसुद्धस्फटि
कसमानतनप्रभुकोबन्यो॥ नहि
नयणपलकलगनकदाचितके
शनखसमछाजए॥ पहघातिया ॥५
छयजाणअतिशयदसविचित्र
विराजए॥ १८॥ सकलअर्धिमाग
धीभाषाजानियै॥ सकलजिवजगमे

फूलिवनस्पतीमनहरै॥ दर्पण
समांणअवनिपवनगातिअनु
सरै॥ अनुसरैपरमानंदसबकोन
रिरज्यौंसेवता॥ योजणप्रमांण
धरासुजुलमारजहीमारूतदेव
ता॥ फुनकरीहमेघकुमारगंधोदक
सुवृष्टस्वहावनौ॥ पदकमलतल
सुरहूपहिकमसुधरिनिशाश्री
सोभावनौ॥ १५॥ अमलगगनत
लअरुदिसअनुसारही॥ चतुरन
काईदेवकरतजयकारही॥ धर्म
चक्रचलआगैरविजहांलाजहीं॥
फुनिभंगारप्रमुखबसुमंगलराज
ही॥ राजहीतचउदह्अतिशअति
शयदेवरचीतसुहावने॥ जिणराज
केवलग्यानमहिमाअवरकहतक
हांबने॥ तवइंद्रआयेकियोमहो
छहसभाशोभितअतिबनी॥ ध
र्मपदेसाकियोतहांउछसीयबा
नीजिणतनी॥ २०॥ क्षूधात्रिखाअ
रुरागद्वेषअसुहावने॥ जन्मजराअ
रुमरणत्रिदोषभयवने॥ रोगसोक
भयविस्मइअरुनिद्राघनी॥ खेद
खिदमदमोहअराचिंताघनी॥ गिनि
येअठारहदोषतिनकररहितदेवनिरं

चोथो मं:
॥५॥

जनोनवपरमकेवललब्धिमंडितशि
वरमणामराजनो॥ श्रीग्यानकल्याण
कसुमहिमासुनतसबसुखपाईये॥ तै
लोक्यनापसुदेवजिनवरजगतमग
लगाइयो॥ आनंदमंगलगाईये॥ आ
सोपरमपदपाईयो॥ २१॥ इतिचतुर्थे
मंगलकेवलज्ञाण॥ ७॥ केवलदि
ष्टयरापरेखोजासो॥ भव्यनप्रति
उपदेस्योजिनवरतासो॥ भवभय
भीतिमहाजनसरनजुआईयो॥ रत
नत्रयदसलाछिनपंथजुलाईयो॥
लाईयोतेपंथजेभव्यपुंनप्रभुलति
यथुकलआरंभियो॥ तहांतेरहैगुण
थांनाप्रभुतहैसमयोगनसोरह्यो॥
फूनिचोदहैगुनथानातिपच्यासी
तुरीयसुकलबलहती॥ समघातिब
सुविधिकर्मपडेंचैसमयमैंपचमग
ती॥ २४॥ सोकासिखरतनुबात॥ विलै
महीजोठयो॥ धरमद्रव्यविनुआगे
गमनजिहकियो॥ मदनरहितमुखोद
रअंबरजासो॥ किमपिहीननिजुतन
तेभयोप्रभुतासो॥ तासोजुपर्जप
नित्यअविचलअर्थपर्जयछनछ
ई॥ निश्चयनयनअनंतगुनव्यवहार
नयवसुगुणमई॥ वस्तुस्वाभाव

हितसुद्धपरनातिपरणा
स्मानेदमंदिरसुद्धपर
रथ॥नतुपरमाणुद्दामि
गये॥हे न्रोषनरखके
ाये॥तवहरषप्रमुखच
निसुभसच्यो॥माया
हितजिनततनरच्यो॥र
प्रमुखपरिमलख्य
मा॥पदपातिलश्रग
लसुविधसंस्कारि
पागाकसु महिमा॥
पारियै॥त्रैलोक्यनाथ
गतमंगलगारियै॥
ड्ढूयै॥भगवांसाथेसु
परमपदपारियै॥२८
तिवसु भावनाभा
प्रवंधसुजिरागुरा
निवषानैसुरधरणा
लसोनरनिहश्चै
यौ॥सिद्धनवानिध
नियै॥भ्रमभावछूटै
रूपसुजानिर॥
रविघनसुहोपमं
ारूप चंदात्रैलो
ोसंघहिगयो॥२५

अभषेक

॥ ६ ॥

अथ पंचामृताभिषेक लिख्यते ॥ १
जैने पांडुका मिलसि सागति मध्य
देवा मिरत्ना पयामि स्वरस्वरा सुसे
नमु श्रीं कल्पारातामिस्फुरयमा हि
ततो पुष्पे संभावयामि पुरये व तदेव
बिंबं ॥ बिंब श्री स्थापनं ॥ १ ॥ सत्य
रत्नवार्चित मुख्योल्लकल धौतरूपा
नतं म्राम्रकूट घट तापयसं सपू
र्णान् संभावतोय मिदगता चतुरा
समुद्रान् संस्थापयामि कलसान्
जिनवेदकांते ॥ कलस स्थापनं ॥
२ ॥ दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटी
शालग्न रत्न किरना छवि धुसुरंहीप्र:
स्वेतपरी मुलना मुकुरंत क्रमो वें ॥ भत्तया
जल जिन पातिव दुग्धाभिषेचं ॥ जल
स्नपनं ॥ ३ ॥ भत्तया ललाटतट देस
निविस्पतो च्चो हस्तेस्तुता सुवरा
सुरमंलिनाथे ॥ तत्काल पील तमहेक्षु
रसस्य धारा संख्या पुनां नमिराभि
वगतख्य पुष्पांन ॥ इक्षुरस स्नापनं
४ ॥ उत्कृष्ट वर्णान वहेमरसा मिरामा
देही प्रभाव लय संकमल प्रहीलछं धारा
घृतस्य शुभ गंधगुनानु मेयं ॥ वंदेऽहंतं सु
रभि संनविनोपयुक्तं ॥ घृत स्नपनं
५ ॥ संपूर्ण सारदशशांक मरीच

घोघैस्सैरैजिनासुचितैरैरभिषिंच
मानं संपादयंतममचित्यममीइसा
सां ॥ दुग्धस्नपनं ॥ ८ ॥ दुग्धांभि
चितपसाचितफेनरासैः पांडुत्वकां
तिमिधारयतांमतीवा दुग्धंगता
जिनपतेप्रतमंसुधारा संपादत
स्यपदवांछितसिद्धये ॥ दधिस्न
पनं ॥ ७ ॥ सस्नापितस्यघृतदुग्ध
दधिप्रवाहैः सर्वाभिरोषधिभिरर्हत
उज्वलाभी उद्वर्तितस्यविदधांम
भिषेकमाला कालीयकुंकुमरसो
त्कटवारपूरैः ॥ सर्वौषधीस्नपनं ॥
८ ॥ इष्टैमनोरथसतैरिवभव्यपुंसैः
पूर्णो सुवर्णकलसैर्निरवीलावसाने
संसारसागरविलंघनहेतसेतो म
प्यावयेत्रिभुवनाधिपतेजिनेंद्रं
चतुष्कोणकलशस्नपनं ॥ ९ ॥ द्रव्यै
रनल्पघनसारचतुःसमुद्रै रा
मोदिवासितसमस्तदिगंतराले
मिश्रीकृतेनपयसाजिनपुंगवानां
त्रैलोक्यपावनमहं स्नपनंकरोमि
सुगंधधारास्नपनं ॥ १० ॥ निर्म्म
लानिर्मलीकरणं पवित्रंपापनासि
नं जिनगंधोदकंवंदे कर्म्माष्टकवि
नासनं ॥ ११ ॥ अथजयमाला ॥ श्री

८

अभीष: ॥७॥

इंद्रइक्कैनसंजोइउ॥ तसुदेषिचितन
कंप्यो॥ हियराजंप्यो॥ स्वरूपं परबो
लिय॥१॥ रिषभकलसठरैवालोजिनं प्र
तसुमननमेजंप्यो सुखरिद॥ दीठोजिने
द्रवालोसरीरा॥ तसुमेरुकंप्यंगुठाहण
हवीरा॥२॥ डगमगहदीपकंप्योमहे
स॥ देवाधिदेव वीराधिवीर॥ सुतसा
तयमैंकेनयोआनंद॥ त्रैलोक्यनाथ
जिहभुवणाचेद॥३॥ जयजयबालोपु
नभुअनपंप॥ कंदप्पंदलनिनिजमु
क्तिपंथ॥ सुरनगपातीपिंजहगुणाहि
रिद्धि॥ तुमदरसनस्वामीहोहिसिद्धि
ध॥ तहांइंद्रइक्कैनकरायजंत्र ते
तीसकोटिसिरठरहिछत्र॥ ढरैकल
सासैअष्टमी॥४॥ सधिगहरधिमहोदधि
क्षीरनीरा॥५॥ कुंकुमचंदनचरच्योश
रीर॥ भवतापदहणानासणासुवीर॥ जे
अन्नसरसगुरुकरीयिभाव॥ जेअमर
लहैसिवपुरहिठाव॥६॥ उज्वलअछि
तआगेधरेहि॥ अरहंतासिद्धपुनपुन
भनेउ॥ नेवजवहुविधपारलेहु॥ मन
वचरास्कफलकायाकरेइ॥ आरति
उद्दंडकरीचलहसंत॥ मनरयनोह
पञ्चजलंत॥७॥ तिहधूपअगरखे
वेसुगंध॥ मयभंजयनरिधरिपादवं

करीभावधरैपुनलहैभोग॥चा॥अठ
विधपूजाकरीयलह इं९ दुंदभिवाजे
सुभयेआनंद भरपुरुमलोइहंजे
महेंद्र कैसीवजनंदनकरैहसेव
प॥घत्ता॥सम्यकदरसनमन
ध्यावे॥जिनवरमनन्यावै॥सिवप
दपावैभवसमुद्रनरजेतरही॥१०
इतिअभिषेकसंपूर्ण॥अथ
जेसधारापधारलिष्यते॥छ॥
जहांपांडुकामनसिलागतमध्य
देवा॥मिस्नापयामिस्यात्वरा सुरसे
समो श्री॥कल्याणमैंसुरमहिछे
ततोयपुछे॥संभाव-ओमपुरि
पेषतदेवविंवं॥श्रीजिनविंवजी
छापणां॥सत्पद्मवार्जितमुखा
न्कलधौतरूपान॥ताम्राम्बकूरघट
तान॥पयसंप्राहूनीता॥संभावतोय
मिरगलाचतुरासमुद्रांता॥सल्छाप
यामकलशानजेणावेदको ते॥कलस
छापणां॥३॥इरावनाग्रस्वरनाथ
करीटकोटी॥मालग्नरत्नकिरणाछ
विधौसुरेंद्रीं॥प्रःस्वेदतपरिमुक्तामकुरू
मेषकौपे:॥भत्तयालसाटभतेजिणा
पातिदुग्धाविषेकं॥इथैमनोरपस
तोरिवभव्यरंसे॥पुर्णौस्वणमकलशा

जलधारा
८॥

नहेतसेतो॥भत्क्यापयो त्रिभूवनै
दिपतेजिनेंद्रं॥ जयजैनमः सिद्धेभ्य
आध्यायेजंबूद्वीपेभरतक्षेत्रे आ
र्यखंडे भाद्रमासे कृष्णपक्षे आज
पुष्पुवारकौंजिनजूकोभावमाभा
येताकेपापनिकौछय॥ श्री श्री श्री
रिषभदेवजी॥ श्री आजितजी २ श्री
संभवजी ३ श्री अभिनंदनजी ४
श्रीस्वमतजी ५ श्रीपद्मप्रभजी ६
श्रीसुपार्सजी ७ श्रीचंद्रप्रभुजी ८
श्रीपुष्पदंतजी ९ श्रीसीतलजी १०
श्री श्रेयांसजी ११ श्रीवासपूज्यजी
१२ श्रीविमलजी १३ श्रीअनंतजी
१४ श्रीधर्मजी १५ श्रीसांतजी १६
श्रीकुंथजी १७ श्रीअरहजी १८
श्रीमल्लिजी १९ श्रीमुनसोव्रतजी
२० श्रीनमजी २१ श्रीनेमनाथजी
२२ श्रीपार्सनाथजी २३ श्रीवर्द्धमा
नस्वामीजी आदिचतुर्विंसततीर्थं
करौंकेमाथेजलधारास्थापरां॥ ७
गाथा॥ भवनालाचालीसा व्यंत
रदेवानिद्रंतिवत्तीसा कप्पामरचौ
वीसा चंद्रोसूर्योतिरयोतिरयो॥
वदनवदरअवगाहकेतसघटजो
नियोमेंगलगीतप्रबंधनोजिरागु

बदनवदरलभुवगाहकलसघटआमि
यो। एकचयारिवसुयोजनमानप्रमा
नियो। सहसअठोत्तरकलसतेप्र
भुजीकेसिरढरे। फुनिश्रृंगारप्रभुरव
आचारजसवकैरे। करिकरिहेअ
चारजप्रगठप्रभुमहिमामहोछुवआ
निपुननिमातेहये। धरापतिहसेवार
रसुरपतिआपसुरलोकहिगये। जन्मा
भिषेकमहंतमहिमांसुरातसबसुख
पाईयै। त्रैलोक्यनाथसुदेवजिनवर
जगतमंगलगाईयै। आलद्दमंगलगा
ईये। भगवानकेगुनगाईये। जासोपरम
पदपाईये।।१।। इतिजलधारासंपूर्णं
छ।। अथापूजालिख्यतेप्रथमपाठ
जयउंनमःसिद्धेभ्यः।। जयजयज
य।। णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ण
मोअरहंताणं। णमोसिद्धाणं। णमो
आयरियाणं। णमोउवझायाणं। ण
मोलोयेसव्वसाहूणं।। ॐह्रींअर्हंता
दिपंचपरमेष्ठीभ्योनमः परपुष्पांजु
लिंछिपेत।। चत्तारमंगलं। अरहंत
मंगलं। सिद्धमंगलं। साहूमंगलं। केव
लीपण्णत्तोधम्मोमंगलं। चत्तारि
लोगोत्तम। अरहंतलोगोत्तमा। सि
द्धलोगोत्तमा। साहूलोगोत्तमा। केव

त्तारिसरणंपवज्जामि। अरिहंतसर
णंपवज्जामि। सिद्धसरणंपवज्जा
मि। साहूसरणंपवज्जामि। केवलि
पण्णत्तोधम्मोसरणंपवज्जामि॥
ॐ ह्रीं अणादिमूलमंत्रसर्वशांति
कुरु कुरु स्वाहा॥ अपवित्रः पवि
त्रोवा सुस्थितो दुस्थितोपिवा। ध्याये
त्पंचनमस्कारान् सर्वपापैप्रमुच्यते
१। अपवित्रपवीत्रोवासर्वावस्थांग
तोपिवा। यः स्मरेतपरमात्मानं सवा
ह्याभ्यंतरः शुचि॥ २। अपराजितमं
त्रोयै। सर्वविघ्नविनासनं॥ मंगलेषु
चसर्वेषु। प्रथमंमंगलंमतः॥ ३। ए
सोपंचणमोकारो। सव्वपापप्पणासनो।
मंगलाणंचसव्वेसी। पढमंहोइमंगलं
गलं॥ ४। अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म। वाच
कंपरमेष्टिनः॥ सिद्धचक्रस्यसद्वि
जं। सर्वतः प्रणमाम्यहं॥ ५। कर्मा
ष्टकविनिर्मुक्तं। मोक्षलक्ष्मीनिकेत
नं। सम्यक्त्वादिगुणोपेतं। सिद्धचक्रं
नमाम्यहं॥ ६। ॐ ह्रीं णमो अर्हते स्वा
हाः। प्रभोभवांगभोगेषु। निर्विण्णोदु
खभीरुकाः॥ एसोपंचणमोयारो
विज्ञापयामि तं। सरणं पंकरनानिमि
हं। सुकलासरस्यादिमोहाग्रालक्ष

तत्वार्थ

।१०।

चरणज्ञातवरणपुरा ॥ अर्हंमोहाग्रावे
शा ॥ शोयस्यादिकिंचनक्षुरवा ॥ अरां
तगुणमामाक्षेभ्यो ॥ स्तंभ्कतबस्तोक्षुभ
ते ॥ भहत्पापयोदसुर्यमानोपी ॥ हूरं
सन्नयातरस्कृता: ॥ स्तं नामासहश्रे
ण ॥ स्त्वातमाणंप्रणामाम्यहं ॥ जिण
सर्वज्ञजज्ञारहा ॥ तीर्थंकृतनाथजोगन:
निर्धांराभ्रेलवोहंता कृतानचाष्टोत
रसते ॥ नघत ॥ परपुस्पांजुलिंछिपेत ॥
परकंचंदणातंदुलपुष्पके ॥ चरुसु
दीपसुधूपफलार्घके ॥ धवलमंगलत
गारणारिवाकुले ॥ जिणागहैजिणनोम
श्रहंजजै ॥ ॐह्रीं ॥ भगवानकेएकह
जार आठनामनको ॥ अर्घं ॥ श्रीमा
जिणोंद्रमभिवंद्यजगत्त्रयेशं स्या
द्वदनायकमनंतचतुष्टयार्हं श्री
जैनसंघसुहृशांसुकृतेकहेतुं ॥ जैनेंद्र
यज्ञविधिरेषमयाभिदायि ॥ ७ ॥ स्वस्ति
त्रिलोकगुरुवेजिणपुंगवाय ॥ स्वास्ति
स्वभावमोहिमोदयस्वास्थेताय
स्वास्तिप्रकाससिमहज्जोर्जितदृग्मवा
या ॥ स्वस्तिप्रसन्नललिताद्भुतवैभवा
य ॥ ध ॥ स्वास्ति छलविमलवोधसु
धाल्पवाय ॥ स्वातिस्वभावपरभाव
विभासकाय ॥ स्वस्तित्रलोकविचे
[illegible]

।१०।

सकलावतविस्मृताय ॥ ॐ ॥ द्रव्यस्य
शुद्धिमाधिगम्यय्यानुरूपं ॥ भाव
स्यशुद्धिमाधिकामधिगंतुकामा
आलंबनानिविवधान्यबलंब्य
बालान् ॥ भूतार्थयज्ञपुरुषस्यक
रोमियज्ञं ॥ १० ॥ अर्हन्पुरांनपुरुषो
त्तमपावनानि ॥ वस्तुन्यनूनमखि
लान्ययमेकमेव ॥ अस्मिन्ज्वल
द्विमलकेवलवोधवह्नौ ॥ पुरायंस
मग्रमहिमेकमनाजुहोमि ॥ ११ ॥ ॐ
विधियज्ञप्रतिज्ञानायजिनप्रति

पु मा्ग्रेपरीपुष्पांजलिंक्षिपेत

श्रीरषभः स्वास्ति ॥ स्वास्तिश्रीअ
जितः ॥ श्रीसंभवःस्वास्ति ॥ स्वास्ति
श्रीभिनंदन ॥ श्रीसुमतिःस्वास्ति ॥
स्वास्तिश्रीपद्मप्रभ ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्वः
स्वास्तिः ॥ स्वास्तिश्रीचंद्रप्रभः ॥ श्री
पुष्पदंतःस्वास्ति ॥ स्वास्तिश्रीसीतल
श्रीश्रेयांसःस्वास्ति ॥ स्वास्तिश्रीयांस्व
पूज्य ॥ श्रीविमलःस्वास्तिः ॥ स्वास्तिअ
नंतः ॥ श्रीधर्मःस्वास्तिः ॥ स्वास्तिश्री
शांतिः ॥ श्रीकुंथुस्वास्तिः ॥ स्वास्तिश्री
अरहनाथः ॥ श्रीमल्लिःस्वास्तिः
स्वास्तिमुनसुव्रतः ॥ श्रीनमिस्वास्तिः
स्वास्तिश्रीनेमनाथ ॥ श्रीपार्श्वकपा
स्वास्तिः ॥ स्वास्तिश्रीवर्द्धमानः ॥ यत्र

पूजा०

११

ध्यांजुलिंछिपेत ॥ अथ्यांप्रथम
देवपूजा देवगुरुशास्त्रजीकीभा
षा ॥ प्रथमदेवअरहंत ॥ सोश्रुत
सिद्धांतजी ॥ गुरुनिर्ग्रंथमहांसुमुक
तपुरपंथजी ॥ तीनरतनजगमांहि
सोएभावेध्याईये ॥ इनकोभक्तिप्र
शादपरमपदपाईये ॥ १ ॥ दोहा ॥
पूजोपदअरहंतके ॥ पूजोंगुरुपदसा
र ॥ पूजोदेवीसरस्वती ॥ नितप्रति
अष्टप्रकार ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं देवशास्त्रगु
रुभ्योनमः ॥ अत्रावतरावतरसंवौ
षट् आह्वाननं ॥ अत्रतिष्ठतिष्ठ
ठः ठः स्थापनं ॥ अत्रममसन्निहि
तोभवभववषट् सन्निधिकरणं ॥
अष्टक ॥ गीताछंद ॥ स्वरपतन
रगनरनापतिनकर वंदनीकसो
पदप्रभः ॥ अतिसोलनीकसुवरन
उत्तम ॥ देषसवमोहतसभा ॥ वरक्षी
रनीरसमुद्रघटभरअग्रतस्कवहुवि
धनचो ॥ अरहंतश्रुतसिद्धांतगुरु
निरग्रंथनितपूजारचो ॥ दोहा ॥ म
लिनवस्तकौंलेतसव ॥ जलसुभाव
मलछीन ॥ जासोपूजोपरमपददेव
शास्त्रगुरुतीन ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरब्रह्म
णे अनंतानंतज्ञानसरूपेभ्यो

११

साधुभ्यः। प्रथमानुयोग। करणानु
योग। चरणानुयोग। द्रव्यानुयोग
श्रीसम्यक्दर्सन। सम्यक्‌ज्ञान स
म्यक्चारित्रेभ्यो:॥ जलं॥ १॥ नि
र्वपामितेस्वाहा॥ जलं॥ १॥ जे
त्रिजगतउधरिमंकारप्रांणीनिपत
अतिदुधरषडे। तसुभ्वाहितहरन
सुवचनातिनकौ। परमपुनीत लता
नरौ। तसकन्नृमरलोभ्नृतसुज्ञानवा
वनसरसचंदनाघिससचौ। अर
हंतश्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथनि
तपूजारचौ॥ दोहा॥ चंदनशी
तलताकरै। तपतवस्तपरवीन॥
जासोपूजौपरमपद देवशास्त्रगु
रुतीन॥ चंदनं॥ २॥ यहभवसमु
द्रअपारतारनकौनिमित्तसविधठ
ई। एदिढपरमपावनजथारथभ
क्तिवरनौकासही। उज्जलअखंडित
सालतंदुलपुंजधरत्रिगुननचौ। अ
रहंतश्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथनित
पूजारचौ॥ दोहा॥ तंदुलसाल
सुगंधिअति परमअखंडितबी
न॥ जासोपूजौपरमपद देवशास्त्र
गुरुतीन॥ अक्षितं॥ ३॥ जेविनप
वंतसोभवतरअंबुजप्रकासानिभी

जगमों वृषधारा होे॥ नेकुंदकमलादिकपुहुपभवभववहु देवनतेवचौ अरहंतश्रुतसिद्धांतगुरनिरग्रंथनितपूजारचौ॥ दोहा॥ विविधिभांतिपरमलसुवस॥ भ्रमरतासुआधीन॥ जासोपूजोपरमपद देवशास्त्रगुरुतीन॥ पुष्पं॥ ५॥ अतिसवलमदकरदवंजाको॥ छुधा गरग अमनहो॥ दुस्सहिभयानिकजासनासनकोंसुगरुड समाराहो॥ छ्लमछुहुंरसयुक्तनितनैवेदकरिघृतमैंपकौ॥ अरहंतश्रुतसिद्धांतगुरुनिरगंथनितपूजारचौं॥ दोहा॥ नानाविधसंयुक्तरस॥ व्यंजणसरसनवीन जासोपूजोपरमपददेवशास्त्रगुरुतीन॥ नैवेद्यं॥ ५॥ जेत्रिजगउद्दितमनासकीनो॥ मोहतिमरमहावली॥ तसुकरनघातिसुजासदीपप्रकासजोतप्रभावली॥ इहिभांतिदीपप्रजालकंचयाकेसुभाजणमेंरवचौ॥ अरहंतश्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथनितपूजारचौ॥ दोहा॥ सुपरप्रकासकजोततस॥ दीपकतमकरहीन॥ जासोपूजोपरमपददेवशास्त्रगुरुतीन॥ दीप॥ ६॥ जेकर्मईंधनदहनअग्नि॥ समूहसमउद्दितनसौं॥ वरधूपतासुसुगंध

ताकरसकलपरमलतातसो ग्रहि
चांतिधूपचढाय भवनितज्वलन
मध्यनाहितचौ॥ अरिहंतश्रुतसिद्धं
तगुरुनिरग्रंथनितपूजारचौ॥ दो
हा॥ अग्निमांहिपरमलदहौ चंद
नादगुनलीन॥ जासोपूजोपरमप
ददेवशास्त्रगुरुतीन॥ सुगंधं॥ ७
लोचनासरसनाघ्राणउर उत्सा
हकेकरतारहौ॥ मोपरमउपमांजा
तवरणीफलसरसघनसारहैं॥ सो
फलचढावतहर्षपूरणपरमरस
अमृतअचो॥ अरहंतश्रुतसिद्धंतगु
रुनिरग्रंथनितपूजारचौ॥ दोहा॥
जेप्रधानफलफलविषै पंचकरन
रसलीन॥ जासोपूजोपरमपददेवशास्त्र
गुरुतीन॥ फलं॥ ८॥ जलपरमउ
ज्जिलगंधअक्षितपुष्पचरुदीप
कधरौ॥ वरधूपनिरमलफलविव
धबहुजन्मकेपातिकहरौ॥ यहभक्ति
सक्तिअपरतारनकरतसुअवं
वतमचौ॥ अरहंतश्रुतसिद्धंतगु
रुनिरग्रंथनितिपूजारचौ॥ दोहा
वसुविधिअर्घसंजोयकै अति
उछाहमनकीन॥ जासोपूजोपरमपद
देवशास्त्रगुरुतीन॥ अर्घं॥ ८
अथ जयमाल॥ देवशास्त्रगुरु

रत्नत्रयशुभ ॥ तीन रतनकरतार ॥ भिन्नाभि
न्नकहूं आरति ॥ अलपसुगमविस्तार
॥ ॥ पद्धडी छंद ॥ घनकर्मतिरेसठप्र
कृतनास ॥ जीते अष्टादसदोषरास
जैपरमसुगुरअरहंतधीर ॥ कहीपेत
कछैयालिससुगुनगंभीर ॥ ४ ॥ सवसमो
सरनसोभाअपार ॥ सोइंद्र नमनकरसी
सधार ॥ देवाधिदेवअरहंतदेव ॥ वंदो
मनवचतनकरसुसेव ॥ ३ ॥ जिनकीध्व
नीऊँकाररूप ॥ निरअक्षरसुमहिमाअ
नूप ॥ दसअष्ट महाभाषासमेत ॥ लघु
भाषासातसैकपतसमेत ॥ सोस्याद्वादम
यसप्तभंग ॥ सोगरणधरगुथेवारेसुअंग
रविसासिनहरैसोतुमहरेय ॥ सोसास्त्रन
मैंपरमीतरूप ॥ ५ ॥ गुरुआचारजउवझा
यसाध ॥ तनरनगनरत्नत्रयनिधअगा
धि ॥ संसारदेहवैरागधार ॥ अठवीस
निरवंधलपतसिवपदनिहार ॥ ६ ॥ गु
नछतीसपचीसआठवीस ॥ भवितार
नतरनजिहाजईस ॥ गुनकीमहिमा
वरनीनजाय ॥ गुरुनामजपोंमनवचन
काय ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ कीजैसकतसमान
सकतविनासरधाधरो ॥ द्यानतसरधावा
न ॥ अजरअमरपदभोगवै ॥ ८ ॥ इति
देवशास्त्रगुरुभ्योनमः ॥ अर्घं ॥ ३

अथ बीस विहरमान पूजा लिख्यते
पूर्वापरविदेहेषु। विद्यमानं जिनेश्वरा
स्थापयामि अहं अत्र। शुद्ध सम्यक्त हे
तवे॥१॥ ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी बीस
तीर्थंकर विहरमान विराजमान लि
नके गुणगण की से ह्वैप पूजा स्थाप
न॥ अत्र अवतर अवतर संवौषट् आ
ह्वाननं॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः
ठः स्थापनं॥ अत्र मम संनिहितो
भव भव वषट् सान्निधापनं॥
अथाष्टकं॥ कर्पूरवासित जलौ
छित हेमभृंगो। धारा चयं दलितजन्म
जरापहानौ। तीर्थंकराय जिन विंस
ति विद्यमानां। संचर्चयाम पद पंकज
शांति हेतू॥ ॐ ह्रीं श्री बीस तीर्थंक
रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥
काश्मीर चंदन विलेपन पद्म युग्मं
संसार ताप हर दूर करो लि नि स्व। ति
र्थंकराय जिन विंसति विद्य मानं। सं
चर्चयाम पद पंकज शांति हेतू॥ गंधं
२॥ अखिंड अक्षत सुगंध करौमि पू
जा॥ अक्षैपद स्य सुख संपति प्राप्त
हेतो। तीर्थंकराय जिन विंसति विद्य
मानं। संचर्चयाम पद पंकज शांति हेतू
अछितं॥३॥ अंभोज पंकज सुगं
ध [illegible] जाती कामारि [illegible]

कपोत्तुममाजिनाय॥ तीर्थंकराय०॥
पुष्पं॥४॥ नैवेद्यकैः सुचितरैः घृत
पक्वखंडैः क्षुधादिरोगहरि दुरीवि
नाशनाय॥ तिर्थंकराय०॥ नैवेद्य॥
५॥ दीपैः प्रदीपितजगत्त्रयरासिमते
जः॥ ईदैकरा॥ तिमिरमोहाविनासनाय
तिर्थंकराय०॥ दीपं॥६॥ धूपे सुगं
धकिरन्नागुरुचंदनाद्यै॥ सुगंधाकृत
सागरमनोहरानै॥ तीर्थंकरापजिनावि
नातिविद्यमान॥ सेप्यर्चयामपदपंकज
संतहेतू॥ धूपं॥७॥ नारिंग दाडिम
मनोहरश्रीफलाद्यै॥ फलंचश्राभिष्टसु
षदायकप्राप्तये हं॥ तीर्थंकरायजि
णाविंसतिविद्यमानं॥ संचर्चयामपद
पंकजसांतहेतू॥ फलं॥८॥ जलै
स्वगंधाक्षितपुष्पचरुभिः॥ दीपस्व
धूपफलमिश्रीत हेमपात्रैः॥ अर्घंकरो
मिजिनपूजनशांतिहेतु॥ संसारपार
उरुपूरणासेवकाणां॥ अर्घं॥ ९॥
अथ जयमाल॥ जयवीसजिने
श्वर॥ नामितसुरासुर चक्रीसुरपूज
त चरणं॥ जयज्ञानदिवाकर गुरुरत्ना
गुणारत्नाकर॥ पूजितनासेविघन
घने॥१॥ चौवीसजिणेश्वर विहरमा
णा॥ प्रणामामिपंचसे धनुप्रमाणा॥ जे

देहातुमजअंतहरंत॥१॥श्रीमंधरप्रण
ऊंजिणवरंद॥जुगमंधरवंदौदुहदलिं
द ऊंवंदौबाहुसुबाहुस्वामि॥जंबूवि
देहजेसिद्धगामा॥३॥संजातस्वयंप्रभजि
नजयंत॥रिषभाननधर्मपपासवंत
अनंतवीर्य्यसूरोप्यहोत॥वंदौविशा
लवज्रधरेश॥४॥चंद्राननअभ्रमवीर
देव ऊंपसाउप तलभव हरेव॥नहपुलक
राधंजितयं द्रबाहु॥भुजंगमईश्वरजग
हनाहु॥५॥नेमीप्रभुप्रणऊंवीरसेन॥म
हाभद्रभद्रभवतारियजेन॥पैपनऊं
देवजुजसभाव॥अनुअजितवीर्य
जेमोक्षपाव॥६॥घत्ता॥इयबीस
जिनेश्वर॥नमीतसुरासुर॥विहरमा
नमैसवधुनिपां॥जेपूजेध्यावैपद
पदावे॥तेनरपावैपरमपद॥७॥
अर्घं॥इतिश्रीविहरमानपूजासं
पूर्णं॥अप्पावडोअर्घचौताको
तमको लिख्यते॥कृत्यांकृत्यंच
रचैतनिलयं॥नित्यंतलोकेनतं॥
वंदेभावनयंतराद्युतकरा॥कल्पा
रामरेसर्वगं॥सद्गंधारितपुष्पतं
मचरुकै॥संदीपधूपैफलै॥नीरादैच्य
पुप्रमाणासिरसदु कम्मराणं शांतये॥
सातकिरोडबहत्तरलाषसोल्न बरा
जिरापातालमै॥मध्यलोऊंमें चारिसै

पूजा

॥१५॥

अठावनवेजजो अधमलटाल में अव
लष चोरासीहजार संतावे अधिक
तेईसठरकहो॥विसंषजोतिसविंतरा
लैजजोमनवचतनकरठये॥अर्घ॥
वर्षेषु:वर्षां तरपर्वतेषु नंदिश्वरेषु
तिमंदिरेषु॥यावंति चैत्यायतनानि
लोके॥सर्वाणितानि वंदेजिणपुंगवाणां
॥४॥अवनतलगतानां कृत्त्रिमाकृत्रि
मानां॥वनभवनगतानां दिव्यवैमानि
कानां॥इहमनुजकृतानां देवराजार्चि
तानां॥जिनवरनिलयाणां॥भावतोहं
स्मरामी॥३॥जंवुधातुकीपुष्करार्ध
वसुधा॥क्षेत्रत्रयेयेभवा॥श्चंद्राभोज
सिखंडकंठकनकप्रावृड्घनाभाजि
नां॥सम्यग्ज्ञानचारित्रलक्षणधरा
दग्धाष्टकर्मेंधनां॥भूतानागतवर्तमा
नसमयेतेभ्योजिनेभ्योनमः॥४॥श्री
मनमेरौकुलाद्रौरजतगिरवरेशाल्म
लीजंवूवृक्षे वृक्षारे चैत्यवृक्षेरतिक
ररुचिकेकुंडलेमानुषांके॥इष्वाकार
यंतरस्वर्गलोकेज्योतिसलोकेभिवंदे
भवनमहितलेयानिचैत्यालयानि॥
५॥द्वौकुंदेंदुतषारहारधवलो॥द्वौवि
द्रनीलप्रभौ॥द्वौवंधूकसमप्रभौजि
नवृषौ॥द्वौचप्रियंगुप्रभौ॥शेषोषो
डसजन्ममृत्युरहिता॥...

प्रभौ स्तेसे ज्ञानदिवाकरा सुरस्तुता
सिद्धिप्रियं छंतु न॥ ६ ॥ अपांसि
कुसुमाञ्जलिं क्षिपेत्॥ ॐ ऊर्ध्वाधोरयुतं स
बिंदु सपरं ब्रह्मा स्वरा वेष्टितं वर्गा
पूरितदिग्गतांबुजदलं तत्संधित
त्त्वान्वितं॥ अंतः पत्रतटेषेष्वना
हितयुतं॥ ह्रींकारसंवेष्टितं॥ देवं
ध्यायति यः॥ समुक्तिसुभगो वैरी
भकंठीरवः॥ १॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धा
णं॥ सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावत
रावतर संवौषट् स्वाहा॥ आ
ह्वाननं॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
स्थापनं॥ अत्र मम सन्निहितो
भव भव वषट् स्वाहा॥ सन्निधा
पनं॥ अथाष्टक॥ निजमनोमन
भाजनभारया॥ समरसैकसुधारसधा
रया॥ सकलबोधकलारमणीयकं स
हजसिद्धमहं परपूजये॥ ॐ ह्रीं णा
मो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जलं
निर्वपामीति स्वाहा॥ सम्यक्त्व॥ १॥ ज्ञान॥ २
दर्शन॥ ३॥ वीर्य॥ ४॥ सुक्ष्म॥ ५॥ अवगा
हण॥ ६॥ अगुरुलघु॥ ७॥ अव्याबा
धा॥ ८॥ एवं अष्टगुणेभ्यो नमः॥ ज
लं॥ १॥ सहजकर्मकलंकविनास
नै॥ रमलभावसुवासितसुचंदनैः॥ अ
[illegible]

सिद्धअर्हंपरपूजिए॥सुगंधं॥२॥
सहजभावसुनिर्मलतंदुलं॥सकल
दोषविसालविशोधनै॥अराधप्रमांयं
गुनावलनायकं॥सहजासिद्धअर्हं
परपूजिए॥अक्षितं॥३॥समयसा
रसौपुष्पसुमालया॥सहजकर्मकरे
णविसुद्धया॥परमयोगबलेनवशी
कृतं॥सहजसिद्धअर्हंपरपूजिए॥
पुष्पं॥४॥अकृतबोधसुदिव्यनि
वेद्दनै॥विहतजातिजरामरणांतकै॥
निरवधिप्रचुरात्मगुणालयं॥सहज
सिद्धअर्हंपरपूजिए॥नैवेद्यं॥५॥
सहजरत्नरुचिप्रतिदीपकै॥रुचिवि
भूतितमप्रविनासनै॥निरवधिसु
प्रकासविकासकं॥सहजासिद्धअर्हं
परपूजिए॥दीपं॥६॥निजगुणो
क्षयरूपसुधूपनै॥सुगुनघातमल
प्रविनासनै॥विसदबोधसुदीर्घसु
खात्मकं॥सहजासिद्धअर्हंपरपूजिए
धूपं॥७॥परमभावफलावलसा
रया॥सहजभावकुभावविसुद्धया॥
निजगुणाष्फुटरात्मनिरंजनं॥सहज
सिद्धअर्हंपरपूजए॥फलं॥८॥नेत्रो
न्मीलनविकासभावनिवहैरत्यं
तवोधावहं॥वार्गंधाक्षितपुष्पदाम
चरुकै॥दीपधूपै॥फलौघविसि...

शुद्धभावपरमं ज्ञानात्मकैरञ्चे
सिद्धास्वादम ॥ बोधमचलं सं
धामो वप ॥ ॥ अथजयम
त्रैलोक्येश्वरवंदनीयचरणाः
श्रियं शाश्वती ज्ञानाराधनि
चेद्धमनसा ॥ संतोषितीर्थंकरा
सम्यक्त्वविबोधवीर्यविशुद्धा
ाधताद्येर्गुणैर्युक्तस्तानिहंतो
सततं ॥ सिद्धानविशुद्धोदयान्
रागसनातनशांतनिरंस नि
यनिर्भयनिर्मल हंस सुधाम
ाधनिधानविमोह ॥ प्रसीद
द्धसुसिद्धसमूह ॥ १ ॥ विदूर
ातिभावनैरंग समामृतपू
देवविसंग ॥ श्वेवंदकरवायवि
विमोह प्रसीदविशुद्धसुसिद
॥ ३ ॥ निवारतिदुःकृतकर्मवि
सदामलकेवलकेलिनिवास
दधिपारगशांतविमोह प्रसी
द्धसोसिद्धसमोह ॥ ४ ॥ प्रशांत
मृतसागरधीर कलंकरजो
रिसमीर विखंडितकामवि
मोह प्रसीदविशुद्धसोसिद्ध
॥ ५ ॥ विकारविवर्जिततत्तर्जि
विबोधसुनेत्रविलोकत्रे
विहारविराववि विरंकविमोह

पूजा०
१७

प्रशीदविशुद्धसोसिद्धसमोह॥६॥र
जोमलषेदविमुक्तयेविगात्र॥निरंत
रनित्यसुखामृतपात्र॥सुदर्सनराजित
नाथविमोह॥प्रशीदविशुद्धसोसिद्धस
मोह॥७॥नरामरवंदितनिरमलभाव
अनंतमुनीस्वरपूज्यविभाव॥सदोद
यविश्वमहेशविमोह॥प्रशीदविशु
द्धसोसिद्धसमोह॥८॥विदंभाविलृष्ण
विदोषविनिंद॥परंपरशंकरसारवि
तिंद्र॥विकोपविरूपविसंकविमोह
प्रशीदविसुद्धसोसिद्धसमोह॥९॥
विवरीविगंधविमोरूपविलोभ॥विमा
यविकायविशव्दविशोभ॥अनाकु
लकेवलसर्वविमोह॥प्रशीदविसुद्ध
सोसिद्धसमोह॥१०॥घत्ता॥अस
मपसमयसारं॥चारुचैतन्यचिह्नं॥पर
परनतिमुक्तं॥पद्मनंदीइवंद्यं॥निरिव
लगुणनिकेतं॥सिद्धचक्रंविसुद्धं॥स्मर
तिनमतियोवा॥स्तोतिसुभांतिमुक्तिं॥
इतीमहार्घं॥अथाष्टकीवंद॥अ
विनासीअविकारपरमरसधांमहो॥
समाधांनसर्वज्ञसहजअभिरांमहो॥
सुद्धबुद्धअविरुद्धअनादिअनंत
हो॥जगतसिरोमनिसिद्धसदाजय
वंतहो॥१॥ध्यांनअगनिकरकर्मकलं

१.

होरहै॥ यापदके आकारममताने
वारकै। सोपरमात्तम सिद्धनमूसिर
नायकै॥ १॥ इति आशीर्वाद॥ इती
सिद्धपूजासंपूर्णं॥ अथ सोल
हकारणपूजाभाषा लिख्यते॥ सो
लकारनभायसुतिर्थंकरभये हर
खेइंद्र अपारमेरुपरलेगये पूजाक
रीनिजधांम खरवावद्भ्याहसों
हमादिषोडसभावनाभावेभावमें
१॥ ॐ ह्रींदरसनविसुद्धिषोडसकार
नेभ्यो॥ अत्रावत्रा सं वौषट् कता
हवानं॥ अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्था
पनं॥ अत्र ममसान्निहितोभ
विभवविषट् सान्निधापनं॥ पर
पुष्पांजुलिंछिपेत्॥ अथ अव
केचोपई॥ कंचनझारी निरमल
नीर॥ पूजोजिनवरगुणगंभीर॥ पर
मगुरुहो॥ जैजैनाथपरमगुरु हो॥
दरसविशुद्ध भावनाभाय सोलह
तीर्थंकरपदपाय॥ परमगुरु हो॥०॥
ॐ ह्रींदरसनविसुद्धायषोडसका
रननेभ्यो॥ जलं॥ १॥ चंदराघसौं
करपूरमिलाय॥ चर्चोश्रीजिनव
रकेपाय॥ परमगुरुहोजैजैनाथपरम
गुरुहो॥ दरसविशुद्ध भावनाभाय॥

१८॥

सोलहतार्थंकरपदपाय॥ परमगुरुहो०
सुगंधं॥३॥ तंदुल अछित सुगंध अनूप
पूजोजिनवरतिहुंजगभूप॥ परमगुरु०
अछितं॥४॥ फूलसुगंधमधूपगुंजार॥
पूजोजिनवरजगआधार॥ परम०॥ पुष्पं
५॥ सदनेवजवहुविधपकवांन॥ पूजोश्री
जिनवरगुणखान॥ परम०॥ नैवेद्यं॥ ६॥
दीपकज्योतितिमरछयकार॥ पूजोश्रीजिन
केवलधार॥ परम०॥ दीपं॥ ६॥ अगरक
पूरसुगंधदसेय॥ श्रीजिनवरआगेमहिके
य॥ परमगुरु०॥ धूपं॥ ७॥ श्रीफलआदिव
हुतफलसार॥ पूजोजिनवांछितदातार प
रमगुरु०॥ फलं॥ ८॥ जलफलआठोदर
वचडाय॥ द्यानतविरतकरोमनल्याय॥
परमगुरुहोजयजयनाथपरमगुरुहो
दरसविशुद्धभावनाभाय॥ सोलहतीर्थं
करपदपाय॥ परमगुरुहो जैजैनाथपर
मगुरुहो॥ अर्घं॥ ९॥ अथअंगलिख्यते
ॐह्रींदर्शनविसुद्धायेनमः॥ अर्घं॥ १
ॐह्रींविनयसंपन्नतायेनमः॥ अर्घं॥ २
ॐह्रींरतीचारसीलव्रतायेनमः॥ अर्घं॥ ३
ॐह्रींअभीक्ष्णज्ञानोपयोगायनमः॥ अ
र्घं॥ ४॥ ॐह्रींसंवेगायनमः॥ अर्घं॥ ५
ॐह्रींसत्त्यागायेनमः॥ अर्घं॥ ६॥ ॐह्रीं
सक्तितपसेयेनमः॥ अर्घं॥ ७॥ ॐह्रींसाधु

पूजा०
१९

वसकरवदेखे ।४। ओतपतपेष्षपेष्षभि
लाषा । चूरैकरमसिरवरगुरुभाषा । साधु
समाधिसदामनल्यावे । तिहूंजगभोग
भोगिसिवपावे ।५। निसदिनवैयाव
त्तकरैया । सोनिहचैभवनीरतरैया । मो
ख्यरहंतभगतिमनआनो । सोजनविष
यकखायेनजानो ।६। जोआचारजभग
तिकरहै । सोनिरमलआचारधरेहै । ष
हुश्रुतवंतभगतजोकरइ । सोनरसंपू
रणश्रुतधरइ ।७। प्रवचनभगतिजो
कारलियाता । तहेग्यांरमपरमानंदद
ता । षटआवसककालजोसाधे । सोई
रतनत्रयआराधे ।८। धर्मप्रभावकरेजे
ग्यांनी । तिनासिवमारगरीतिपिछानी
वछलअंगसदाजोध्यावे । सोतीर्थं
करपदवीपावे ।९। दोहा । इहसोल
हभावना । सहेधरेव्रतजोइ । देवइंद
नरचंद्रपति । द्यानतसिवपदहोइ ।१०
इतिमहार्घं । इतिसोलहकारणपू
जासंपूर्णं ॥ ॥ अथपंचमे
रुकिपूजाप्रारंभ्यते । प्रथमोसुदर्सन
मेरो । विजयोअचलोस्थीता । चतुर्थो
मंदरोनाम: विद्युन्मालीसुपंचमो ।१
स्थापना । ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधीभ
द्रसालनंदनसोमनसपांडुक

तिभ्योनमः॥१॥ सामोदेसुहृतेतोयेसुपे
हीतसुकनेश्चंदनेसुगेसलक्ष्मी॥ लिसा
धैरक्षतैयेमलदलकुसमेरुग्रमेनीनहृ
द्यैः॥ नैवेद्येनाभजंबुनेदमदपेकामधु
पस्यतुपे॥ मऊस्तैयग्रहदिपीसुफलैष्ठजी
येमेरुबिंबान्॥१॥ अर्घं॥ जिनात्सु
संस्थापयामित्य॥ आह्वनानादिविधान
ता॥ सुदर्सनेभवान् चार्यो॥ पुष्पांजलिप्र
तसुद्दरु॥१॥ ॐह्रींसुदर्सनमेरुसंबं
धिभद्रसालनंदनसोमनसकपांडु
कवनपूर्वदक्षिणपाश्चेमऊत्तरक्षि
नेभ्योनमः॥ ॐह्रीं॥ अत्रावत्रावतर
संबोषट्कताहवाहनं॥ अत्रतिष्ट
तिष्ट ठः ठः स्थापणं॥ अत्रममसं
न्निहितोभवभववषट्सन्निधी
करनं॥ परपुष्पांजुलिंक्षिपेत॥३
अथाष्टकं॥ सुरसुरीजलनिर्मलधा
रीया॥ विसदकांतिनिसाकरभारया
प्रथममेरुसुदर्सनगोक्षितं॥ जयतिषे
डसानेत्यजिनात्रयं॥ ॐह्रींसुदर्सन
मेरुसंबंधीभद्रसालनंदनसोम
नसकपांडुकवनपूर्वदक्षिनपाश्चि
मऊत्तरस्थितनभ्योनमः॥ परीपुष्पांजु
लिंक्षिपेत॥ जालं॥१॥ मलयचंद
णमार्दितसाद्रवे॥ सुरभिकुंकुमकर्पूर

।पूजा।
।२०।

तं॥जयति०॥गंधं॥२॥ यसकलेस
मलेस्क भसाज्ञिमे बुधकरोज्वासिकांति
भिरूते॥प्रथममेरुसदरसन०॥अ
क्षितं॥३॥ भ्रमरपुष्पसुवारिजचं
पके वकुलमालतिकेतकीसंभवे॥
प्रथममेरु०॥पुष्पं॥४॥ घृतवरादि
सुगंधचरुत्करो॥कनकपात्रपितैर
सनेप्रिये॥प्रथममेरु०॥नैवेद्यं॥पु
मानिधृतेदिभवेवरदीपको॥अतलदिप्रो
विषोनितदिगाहरो॥प्रथममेरु०॥
दीपं॥६॥ अगरुदेवतलद्भवधूपके
परिमलोद्भवधुपितव्रिष्टये॥प्रथम०
धूपं॥७॥किलकलांगलचुत्कलदा
डिमो॥प्रमुखपक्कफलेसुरसोत्तमे॥
प्रथममेरु०॥फलं॥८॥विमलसालि
लदिरागंधसुभ्रा लतोये॥कुसुमनि
करीचारुस्वादनेवेद्य वागे॥प्रहतातिम
रदीपैधूपधूम्रैफलेश्च॥रचितरच्यत
मार्घं रत्नचं द्रमजेहं॥ आर्घं॥
अथजयमाल॥जंबूद्वीपधरस्य
तस्वसमद्रामेरोपिपूर्वोदिषु॥दिग्भा
गेषुचवर्षधोऽसमहा॥चेत्यालयो
सद्धनो॥नानाधध्वविभाटतैमनमये॥
भद्रादिसासात्मको॥संजुक्तस्यानिवा
सितेमनवरा॥भक्त्स्येजीमित्रवे॥१॥

२०

वीतसद्दा क्षीर देहाकुला ॥ मेरूसंवं
धिनोवीतरागोदिता ॥ स्यान्नभव्योपगा
रायसंपूजिता ॥ २ ॥ सुद्धवांगताहा
नभवोपगो ॥ सुद्धवगौ दुख्खासकुनैसाभ
रा ॥ मेरूसंवंधिनो ॥ ३ ॥ मानमायाति
गामुक्तिभावोपगा ॥ सुद्धजिवाद्यसंका
दिदोषाहरा ॥ मेरू ॥ ४ ॥ सुत्रपामोहे
कद्वेकरावानलं ॥ पोहन्नसंकौर्तना ॥ दी
यासुभासत्कला ॥ मेरू ॥ ५ ॥ पूर्णचंद्र
ग्रितेजोवारींवेसका ॥ चंद्रसूर्य्यादि
तापारवरोधेसिका ॥ मेरू० ॥ ६ ॥ घल
यतिचारित्तफलोघा ॥ प्राप्तसंज्ञान
पारा ॥ हततमदनपापः ॥ नामसर्वाम
रेंद्रा ॥ विपुलजलाधिमंदाकांतेदीप्त
दिनेंद्रा ॥ अपगातिधनमोहा संतीति सि
धोजिनेंद्र ॥ पूर्णार्घं ॥ सर्वेव्रताधि
पंसातं ॥ सर्वसौख्याकरंसतं ॥ पुष्पांज
लिव्रतंपुष्पं जन्मांसुकृतं श्रिये ॥ १ ॥
इति आशीर्वादः ॥ इति सुदर्सनमे
रुपूजासंपूर्णं ॥ ॥ अथ विजय
मेरूपूजालिख्यते ॥ जिनान् संस्था
पयामित्वा ॥ द्वीहनानादिविधानतः
धातुकीखंड पूर्वस्य मेरुविजयप्रव
र्तिते ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं विजयमेरूसंवंधीभ
द्रसालनंदनसौमनसकपांडुकव
नपूर्वदक्षिणपाश्चिम उत्तरदिक्षि

पूजा० ॥ २१ ॥

तेभ्यो अत्रावतरासंभ्योषट् आवाहनानं ॥ अत्रतिष्ठतिष्ठः ठः ठः स्थापनं ॥ अत्रममसंनिहितोभवभव वषट् सन्निधिकरने परी पुष्पांजुलिं क्षिपेत् ॥ अष्टकं ॥ सुतोये सुती पौद्गवैवितदोषैः सुगंधसभ्रंगारना लस्व संगैः ॥ द्वितीयं सुमेरं सुगंधातुक्रि स्नां ॥ जजरत्नबिंबं ज्वलारत्नं चंद्रं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं ॥ विजयमेरुसबंधीभद्रसालनंदनसौमनसकपांडुकवनपूर्वदक्षिणोत्तरपश्चिमस्थित तेभ्यो ॥ जलं ॥ १ ॥ सुगंधेगतालेद्रजेकुंकुमाद्यै ॥ द्रव्येश्चंदनैश्चंदचूर्णैभ्रमरामे ॥ द्वितीयं सुमेरु ॥ गंधं ॥ २ ॥ सुसाल्पनृतेर स्वच्युतैर्दिव्यदेहै ॥ सुगंधस्यभ्रंगसारव्चेगानैः द्वितीयं० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥ लवंगेप्रसुरौस्तस्यामोहवाग्नि ॥ सुमंदादिमालासुकुंदादिजातै ॥ द्वितीयं० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ मनोज्ञैसुषाद्यैगवीनाज्यनवैः ॥ सुसाल्योदनैमोदकैसुभक्ष्ये ॥ द्वितीयं० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥ प्रदीपेहतांधांतरत्नादिजातै ॥ ज्वलत्कीलजालेभ्रसंभासुरंगै ॥ द्वितीयं० ॥ दीपं ६ ॥ सुकृष्णागरत्यातिभी धूपधूम्रै ॥ सुगंधागतादिगाताकासधारै ॥ द्वितीयं० ॥ धूपं ॥ ७ ॥ [illegible]चै

२१

चांम्रजंवुजकामै ॥ मनोभिष्टप्रदे स

त्फलौघै ॥ इतियं ॥ फलं ॥ ७ ॥ वि

सुद्धोरष्टसाद्रव्यै ॥ र्घमुत्तारियामिह

हेमपात्रेस्थितंभत्तया ॥ विजयाश्र ॥

स्थितजिनेसकं ॥ अर्घ ॥ ८ ॥ अथ

जयमाल ॥ सकलकालिलमुक्ता

सर्वसंपात्तिसुक्ता ॥ गणधरगणसे

व्यकर्मपंकप्रनष्टा ॥ प्रहतमदनमा

नत्यक्तमिथ्यातफांसा ॥ कलितनि

षलभावासांतिसिंधौजिनेंद्रा ॥ १ ॥

विमोहविसारलिकामभुंजंग ॥ अने

कसद्दादिविभाषितअंग ॥ कषायद

वानलतत्वप्रगंग ॥ प्रसीदजिनोत्तम

मुक्तिप्रसंग ॥ २ ॥ नीरीहनिरामयनि

र्मलहंस ॥ प्रकीर्णकिरणजितप्रभुवसु

वंस अनिद्यचरित्रविमानितकंस ॥

प्रसीदजिनोत्तमभव्यनिरंस ॥ ३ ॥ प्रबो

धविबोधविजगत्रयसार ॥ अणंत

चतुष्टयसागरपार ॥ निवारितसर्व

पौरष्महभार ॥ प्रसीदजिनोत्तमभव्य

सुतार ॥ ४ ॥ तपोभाविदारितकर्म

कलंक ॥ विरोगविसोगविभोगविसंक

अखंडितचिन्मयदेहविकास ॥ प्र

शीदजिनोत्तमभव्यसुमकास ॥ ५

असंरवादिनेसमुद्रीप्रपचंउ निपच्च

पूजा
२२

स्थितारतरंड ॥ प्रसीद जिनोत्तम
भव्याजिणंद ॥ ६ ॥ घत्ता ॥ दिगधम
चारिचंद्राशिसं ज्ञानपारा ॥ सकलस
सिरभारया ॥ सर्वसोख्यादिवासा ॥
विदिताविभवरास्ते ॥ मुक्तिसाम्रा
ज्यलक्ष्मी ॥ सततजिनराजान् ॥ ज
न्ममृत्युपहारी ॥ पूर्णार्घं ॥ ७ ॥ स
र्वव्रताधिपंसारं ॥ मुक्तिसोख्याकरं
सतं ॥ पुष्पांजलिं व्रतं पुष्पं ॥ पुष्पकंसा
स्वतंश्रियं ॥ इत्याशीर्वाद ॥ इतिश्री
द्वितीयमेरुपूजासंपूर्णं ॥ २ ॥
अथ अचलमेरुपूजालिख्यते
जिणानसस्थापयामित्वा ॥ ह्रीं ह
नानादविधानता ॥ धातुकिपश्च
मासंस्थानि ॥ मेरुअचलो प्रतैते ॥ २
ॐह्रीं अचलमेरुसंबंधीभद्रसाल
नंदनसोमनसकपांडुकवनपूर्व
दक्षिणपश्चिमउत्तरस्थितेभ्यो
वपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ अथा
ष्टकं ॥ गंगानित्यैसत्वानीयै ॥ प्राण
सोख्यजंतुनं ॥ कुंभातापास्तिन
प्रातितं ॥ श्रीमद्भावेश्रीमद्भी ॥ देवादीने
कुंभाभागे कुर्वाना ने संस्थाने ॥ द्वध्या
नो भ्यचायापिताप्याप्तादानाविवा
ने ॥ ॐह्रीं अचलमेरुसंबंधीभद्रसा

पूर्वदासिरापश्चिमतःसरास्थिते
भ्यो०॥ जलं॥ १॥ साक्षाषंडैधा
पाश्रष्ठैकर्पूराद्यैसंप्राके॥ रत्नोस
न्पृष्टे॥ गंधोत्कृष्टेऽष्टानादैमा
श्री॥ देवादीनं०॥ गंधं॥ २॥ सत्सा
लिभ्यांसेजातानांसामोदानंसत्तुं
जे॥ साधुध्वीत्रीखंडोमुक्तैनाना
भक्तैर्निहिराष्टै॥ देवादीनं०॥ अ
क्षितं॥ ३॥ श्रीसंज्ञानंमेदारानं
सत्वात्मानंमानाभी॥ गंधाकिष्ट
लिम्पातानांकुंदादीनंजातीनं॥
देवादीनं०॥ पुष्पं॥ ४॥ पक्वानान
क्षीरादीनांश्चायुष्मानंनैवेद्यं माल्यो
दानांसास्वादीनं॥ सस्वादानांनैवेद्यं
देवादीनं०॥ नैवेद्यं॥ ५॥ स्नेहासं
नांमानुसकुंजे॥ प्रोक्तुतानानसंघृते॥
ज्योतिसध्वस्तो॥ ध्वानंदिग्धौतानं
संस्पोनं॥ देवादीनं०॥ दीपं॥ ६॥ गो
सबाणापात्रागानं॥ ससभ्रनाध्वां
नूसंधुपे॥ सद्गंधोत्कृष्टागारे॥
धुमव्यापासंवारे॥ देवादीनं०॥ धू
पं॥ ७॥ नारिंगाम्रैदिव्यापुंगेरवानु
राद्येकुष्मांडे॥ डिंगश्रानानंसपुत्सा
हे॥ सकुचोङ्गीसत्पाद्ये॥ देवादीनां०
फलं॥ ८॥ जलादिभिः॥ निर्मलमंध

पूजा
२३

गासरचैवरं ओजनश्चे॥ जनेजलाश्च
सुररत्न चंद्रं॥ अर्घ॥ ५॥ अथजय
माल॥ श्रीधातुकीखंड विदेहसंस्थं
त्रितियमेरुजिनसप्तजुतं॥ सुभद्रसी
पाकरत्न चंद्रं॥ सत्नेपहमकुंनवधंमं
नं॥ १॥ सुरखेचरतिन्नरदेवगणां॥ जा
त्रागतचरनमुनेंद्रगनं॥ नानाख्यनीर
चितंप्रसरं॥ वंदेगिरराजमहंविभरं
२॥ मानोषतपासजुगेसलियं॥ सु
विराजतप्रातिमाजिननस्त्रियं॥ जिण
वरमंगलगुरगागरगाकरं॥ वंदेगिरराज
महंविभरं॥ भावेकोमलभावतभाव
धुरं॥ संश्रितसुरनराश्रितधनभोगं॥ स
त्रैवद्रुजैलगुरगागरगाकरं॥ वंदेगि
रराजिमहंविभरं॥ ३॥ भद्रसालवनो
परिधवलासिलं॥ दृश्ठाविधकल्पवृक्ष
सुसीलं॥ कराभकाज्वलस्थितमुन
नजुरं॥ वंदेगिरराजमहंविभरं॥ ४॥
स्फटिकसिलापरकलसवंध॥ सीरो
दधिनीरसहांविसदं॥ नानाविभवं
जगालषेहरं॥ वंदेगिरराजमहंविभ
रं॥ ५॥ घत्ता॥ विविधिमानिनिव
धंभूषिताभद्रसालं॥ कनकरचित
भीतंवहुसोभानेपक्रं॥ स्फटिकवि
मलसाद्रपांडुकावापुहेसं॥ भजतगिर

सर्वधृताधिपंसारं सर्वसौख्याकरंस
तं पुष्पांजलिव्रतंपुण्यं पुण्यकेसास्य
मेश्रियं॥इत्याशीर्वादः॥१॥ इति श्री
चलमेरुपूजासंपूर्ण॥३॥ श्री
थमंदिरमेरुपूजालिख्यते॥ जि
नानुसंस्थापयामित्वा व्हाहना
नादिविधानता मंदिरमेरुराजा
न् पुष्पांजलिव्रतविसुद्धए॥१॥
ॐह्रींमंदिरमेरुसंबंधीभद्रसाल
नंदनसौमनसकपांडुकवनपूर्व
दक्षिणापश्चिमउत्तरास्थितेभ्यो
अत्रावतरावतरसंवौषट्कृतआह्वा
नानं अत्रतिष्ठतेठःस्थापनं अत्र
ममसंन्निहितोभवभववषट्सन्नी
धापनं॥१॥ अथाष्टकं॥ गंगाग
तोजलचयेसुपवित्रयागौ रम्येसु
निर्मलतरै भवतापभेदै मेरुजजेषि
लसुरैंद्रसमार्चिनीयं श्रीमंदिरंविदि
तपुष्करषंडसारं १॥ ॐह्रींमंदिर
मेरुसंबंधीभद्रसालनंदनसौमन
सकपांडुकवनपूर्वदक्षिणापश्चि
मउत्तरास्थितेभ्यो॥जलं॥१॥ काश्मी
रकुंकुमरसैहरीचंदनाद्यै गंधोत्क
टैवरतरैधनसारमिश्रै मेरुजजेषि
लसुरेंद्रसमार्चिनीयं श्रीमंदिरंविदित
पुष्करषंडसारं॥ ...

पूजा
२५

नसुगोरविदितेविमलेरखंडेधव
प्रियेरवितप्येकमलाद्दतेथैमेरु
जजे०॥ अक्षतं॥३॥ गंधागतालिन
विधेसुचंपकाद्यै॥ पुष्पोत्करेरमर
पुष्पघुतेमनोद्यैमेरुजजे०॥ पुष्पं
॥४॥ स्वर्णादिपात्रनिहितेघृतप
कुरवंडे॥ नानाविधेघृतवरेरसनैवे
द्यैद्यै॥ मेरुजजे०॥ नैवेद्यं॥५॥ क
पूरदीपनिहिचयेये॥ निहतांधिकारे
रुद्राह्नासितैरनकलासुभकिलआ
ले॥ मेरुजजे०॥ दीपं॥६॥ कालागु
रुत्रदसदारसुचंदनाद्यै॥ दिव्योद्भ
वेसुसुभगंधसधूपधुम्रे॥ मेरुजजे०
धूपं॥७॥ नारिंगपुंगफलसांब्रसुमो
चचोचे॥ श्री लांगलिंधमुखभव्य
फलेसुरांम्रे॥ मेरुजजे०॥ फलं॥८
जलेसुगंधाहृतचारुपुष्पे॥ नैवेद्य
दीपेवरधूपवर्गे॥ फलेमहार्घेसुघतार
यामि॥ श्रीरत्नचंद्रोजीतचंद्रसेव्यं
अर्घ॥९॥ अथ जयमाला॥ पो
घहस्रोडसहजोजनमिती॥ श्री
पुष्कराधीस्थिता॥ श्रीमतिपूर्वंवि
देहमंदिरगिरो॥ देवेंद्रविंदार्चिता
चंचीत्वंचसुवर्णरत्नजाइतं॥ नाना
[illegible]र्चिता॥ तत्संचंधीजिनेक

रा॥१॥ रेवावेद्याधराऽसुरं संचर्यि
ता॥ किन्नरीगीतकलगानसंजेभि
ता॥ निर्तितानेकदेवांगयांसुदरं॥
श्रीजिनागारंवारं भजे हं सुरं॥ २॥
जन्मकल्याणतास मांहितांवरमंग
लं॥ देस्तानेकविद्याधरं साकुलं॥
पोह्मसकीतमालाल्वैवांधरं॥ श्री
जिनागारंवारंभजे हं सुरं॥ ३॥ धूप
घटत्पतावाससोभाधरं॥ रत्नसंभो
ज्जिंतामालिभीराकुलं॥ अष्टमंगल
मलांद्रव्यसंमंगलं॥ श्रीजिनागारंवा
रंभजे हं सुरं॥ ४॥ तालबील नाम्र दं
गादिपोटिहस्वरं॥ कल्पतरुपुष्पवा
र्तिडागाकरं॥ चारुनारदमुनीसंग
तासुंदरं॥ श्रीजिनागार०॥५॥ हाची
रमानिमंडपेगोपुरे संयुतं॥ ध्वलहह
मावलीरत्नमालाभ्रसं॥ तुंगतोरन
लसतघंटिकाभिंगुरं॥ श्रीजिनागा०

घत्ता

ध॥ विविधिविविधिभव्यं भव्य
संसारसारं॥ सतमुनिकृतसेव्यंप्रा
त्तसंज्ञानपारं॥ विषमाविषयदुष्टं॥
व्यालपक्षीसमहं॥ जिनवरनिकरं
तंरत्नचंद्रं भजे हं॥ पूर्णार्घ्यं॥ ७
सर्वव्रताधिपंसारं॥ मुक्तसौख्याक
रंसतं॥ पुष्पांजलिव्रतंपुष्पं॥ पुष्क मे
शाम्बतंश्रियं॥ इत्याशीर्वादः॥

पूजा

२५

इतिश्रीमंदिरमेरुपूजासंपूर्णं॥४
अथविद्युन्मालीमेरुपूजालिख
ते॥जिनान्संस्थापयामित्वाह्वा
हनानादिविधानतः पुष्करार्धे
पश्चिमासंस्थानेविद्युन्मालीप्र
वर्तते॥१॥ॐह्रीं विद्युन्मालीमे
रुसंबंधीभद्रसालनंदनसौम
नसक पांडुकवन पूर्वदक्षिणापश्चि
मउत्तरास्थितेभ्यो अत्रावत्रावत
रसंभ्योषट्कतोह्वाननं॥अत्रति
ष्ठतिष्ठठःठः स्थापनं॥अत्रममसं
न्निहितोभवभववषट्संन्निधापनं॥
१॥अथाष्टकं॥निर्मलैसुसीतलै
महापगभवैजुराै॥सातकुंभकुंभ
गीज्ञगाज्जनागताप है॥जैनज॥
न्ममर्जनं॥भस्यलव्यवर्तिपावनं॥
पंचसुमंदिरंमहामिहंसिवप्रदं॥
ॐह्रींविद्युन्मालीमेरुसंबंधीभद्र
सालनंदनसौमनसकपांडुकवन
पूर्वदक्षिणापश्चिमउत्तरास्थिते
भ्योनमः॥जलं॥१॥चंदनैसुचंद्र
सारमिश्रभीसुगंधमी॥रक्तवर्णं
भुजभुतवर्जितैगुणोज्वलै॥जैनज
न्ममर्जनं॥भस्यलव्यवर्तिपावनं
पंचमेसुमंदिरंमहामिहंसिवप्रदं॥

मभासितैौक्षितैो। रसैतैरखंडतैःसु
लक्षसौमसुगंधिप्रियैो। जैनजन्म०॥
अक्षितं॥ ३॥ गंधलुब्धषटपितै
सुपारिजातचंपकैो। पारिजातिकुं
दंदेवपुष्पमालतीभवैो। जैनजन्म०
पुष्पं॥ ४॥ आज्यपुरितुाषितैसुखा
जुकैःसुमोदकैो। रीइ्धक्षायमुक्तिचारु
चारुभीचरुत्करो। जैनजन्म०॥ नै
वेद्यं॥ ५॥ अंधकारभानसारकारनै
दृसघरो। रत्नसोमजप्रदीपभूषि
तैःसुसोच्चलैो। जैनजन्म०॥ दीपं
६॥ सल्यकागुरुद्रवैःसुकंपकैर्नभो
गतैो। गंधतासुचक्रकैसधूंदकैपुस
स्तकैो। जैनजन्म०॥ धूपं॥ ७॥ का
मदाडमैःसुमोचचोचकैःसुभैःफलै
मातुलिंगनालिकेरपुंजुकादद्रातभि
जैनजन्म०॥ फलं॥ ८॥ जलगंधा
क्षतैःपुष्पैश्चरुभीदीपधुपकैोफ
लैरतायामार्घं। विद्युन्मालीप्रर्ततो
९॥ अर्घं॥ अथजयमाला॥
स्तवंमेदरंपंचमंसद्गुनोद्धसमंतु
गचैत्यालयांभासुगंधो। चरुतरत्न
सोपानविद्याधरीसं। नमःदेवना
गेंद्रयेतिद्वंद्यं॥ १॥ भद्रसालाविधं
रम्यसंसोभितं। कोकिलानोकिलाला
भिसंज्ञेभितं। पुष्करार्धाचलासे

पूजा
२६

स्यितं॥मंदिरंविद्युन्मालीपंचमं॥२
चंचला मालनीमिरुसंबंधिनं नंदने
नंदतानेकलोकाकरे॥भाव्यमानेबुधा
लोकवृक्षौत्करे॥पुस्करार्धा०॥३॥सौममा
नुसकेकल्पदिक्षादिभी॥राजमानबुधा
गारकैत्यालिभि॥पुस्करार्धा०४॥जंबू
येपांडकेकाननेराजिते पांडकाख्या
सिलाभिस्समालिंगतं॥पुष्करार्धा५
निर्जितानेकरत्नप्रभावासुरादिग्व
तोष्याश्रुता ऊहुहाभास्करं॥पुष्करार्धा
६॥घत्ता॥घंटातोरनतारकाष्टक
लसे छत्राष्टदिव्येपरे॥श्रीभांडलया
मेरसुरर्चितंचंद्रपिकरुनादिभौ॥चैका
ल्यावरपुष्पजापनपरैनेजनोकसर्वार्चि
तं॥भव्यैदीनपरायनेऋतदेवेपुष्पांज
लिसुद्धये॥पूर्णार्घ॥७॥बुधवरसुचं
द्रके यजुसे॥रुताचेसुरादिनरसिताम
रत्नयेंद्रेचतुष्प्यां॥धवलभृगुवासुरे
सागवादे॥पुरेंन्नजिराविषगलगलादि
सापिकादेसतोभ्यं॥इत्याशीर्वाद
इतिश्रीपंचमेरुपूजासंपूर्णा॥०॥०
अथादसलाक्षणिपूजालिख्यते
अडिल॥उत्तमाछिमामार्दवआर्जे
वभावहो॥सत्यसोचसंजिमतपत्याग
उपावहो॥आकिंचिनब्रह्मचर्यधर्मदससा
रहो॥चहुंगतिदुखातेकाडमुकतिकरत

रहै॥१॥सोरठा॥हेमाचलकीधार
मुनिचितसमशीतलसुरभि॥भौआता
पनिवारइससाछिनपूजोसदा॥जलं॥१॥
चंदनाकेसरधारहोइसुवासदसोदिसा
भौआतापनिवार।इहलाछिनपूजोस
दा॥सुगंधं॥२॥अमलअखिंडत
सार।तंदुलचंदसमानसुभ।भवआ
तापनिवार०॥अक्षितं॥३॥फूलअ
नेकप्रकार।महिकैऊरधिलोकलौ भ
वआतापनिवार०॥पुष्पं॥४॥नेवज
विविधप्रकार।उत्तमखटरससंजुग
त।भवआतापनिवार०॥नैवेद्यं॥५
बातिकपूरसुधार।दीपकजोतसुहाव
नै।भवआतापनिवार०॥दीपं॥६॥अ
गरधूपविसतार।फैलेसरवसुगंधता
भवआतापनिवार०॥धूपं॥७॥फ
लकीजातअपार।घ्राननैनमनमोह
नै।भवआतापनिवार०॥फलं॥८
अष्टद्रव्यकीरासै।भारिकैपूजोभव
सो॥भवआतापनिवार०॥अर्घं॥९
सोरठा॥पीडैदुखअनेक।बांधमार
बहुदुःखकरै॥धरियेछिमाविवेक
कोपनाकीजैप्रीतमा॥१॥चौपई॥मि
तामिलछंद॥उत्तमछिमागहो
रेभाई।इहभौजसपरभौसुखदा
ई।गालिसुनमनखेदनआनौ॥ग

पूजा
२७

ताको ओगुरु है अयानो ॥१॥ कहिहे अयानो वस्तु ही ने बाध मारवहु दुख करे ॥ यासे निकारे तन बिदारे वेरजो मन हांधरे ॥ तिकरम पूरव किये खोटे सहे क्यौं नाहि जीयरा ॥ अतिक्रोध अगनुबुझाय प्रानी साम्यक जल लेसी यरा इतिछिमा सोरठा ॥ २ ॥ मान महाविषरूप करे नीचगति जगत में कोमल सुधा अनूप सुरव पावे प्रानी सदा ॥ थ उत्तम मार्दव गुण मनमाना मान करन को कोन ठिकाना ॥ वस्यो निगोद मांहि ते आया ॥ दमरी रूकन भाग विकाया ॥ २ रूकन विकाया करम वसते देव र एकेंद्रिय भया ॥ उतेसु सुवो चंडाल हुवो भूपकीडे में गया ॥ जीवते जोबन धन गुमान कहा करे जल बुदबुदा ॥ करी विनय बहु वडे जनकी ग्यांनका पावे उदा ॥ २ ॥ इति मार्दव सोरठा ॥ २ ॥ कपट न कीजे कोय चोरन के पुरन वसे सरल सुभावी होय ताके घर बहु संपदा ३ ॥ उत्तम आर्जव रील वरवानी ॥ रंच कदगा बहुत दुखदानी ॥ मन में होय सो वचन उचरिये ॥ वचन न होय सो तनसो करिये ॥ करिये सरल तिहु जोग अपने देख निरमल आरसी मुरव करे जैसा लरवे तस कपट प्रीत अंं

गारसी॥ नहीसहै लछिमी ॥ आधिक
छलकर करमबंध। बिसेरवता॥ भैसा
गढूधविलावपीवै ॥ आपदा नहीदेख
ता॥२॥ इति आर्जवसोरठा॥ कठि
नवचनामतिबोलो॥ परनिंदा अरु
टताजि॥ साचजवाहररखो॥ सिसतवा
दीजगमैसुखी॥४॥ उत्तमसत्तबरत
पालीजै॥ परविस्वासघातनहिकीजै
सांचैझूटेमानुरवदेखो॥ आपनपुत
स्वपासनपेखो॥ पेखोतिहुंपुतपुरुष
सांचकौदरबसवन्नदीजिए॥ सुनरा
जआवककिप्रतिष्टासांचगुनलख
लीजिए॥ ऊंचैसिंघासनबैठबसुन्
पधर्मकाभूपतिभया॥ बचनझूटसेती
नरकपहूंच्यो॥ सुरगमैनारदगया॥४
इतिसत्तसोरठा॥५॥ धरिहिरदैसं
तोषा॥ करैतपस्यादेहस्यौ॥ सोचसदा
निरदोरव॥ धर्मबडोसंसारमैं॥५॥उ
त्तमसौच ... सरवजगजाना॥ लोभ
पापकाबापबरवाना॥ आसापासम
हादुरवदानी॥ सुषपावैसंतोषीप्रांणी
५॥ प्रांणीसदासुचिसीलजपतपग्यो
नध्यानप्रभावतै॥ नितगंगजमुनसमु
द्रन्हाय असुचदोषसुभावतै॥ ऊपर
अमलमदभस्यो॥ भीतरकौनविधि
घटसुचिकहै॥ बऊदेहमैली॥ सुगुनपै

तीसीसोचगुनसौधुल्ला है ॥५॥ इतिसो
चसोरठा ॥५॥ कायछहप्रतिपाल
पचेंद्री मनवसकरो ॥ संजमरतनसंभा
ल ॥ विखयचोरबहुफिरतुहै ॥ ध्रुगत
मसंजमगहूंमनमेरे ॥ भौ भौ के भाजेस
वध अघलैरे ॥ सुरगनरकपसुगतिमेंनां
ही ॥ आलसहरकरनरसुखठानैो ॥
ठाही पृथ्वी जल आगि माहूतत रखच
सकरुना धरीयो ॥ सपरसनरसना घ्राण
नेना कानमन सबवसकरो ॥ जिसबिन
नहीजिणराजसीफेलूं रुल्योजगकी
चमैं ॥ इकघरीमतिविसरोकरो आतजे
मसुरखवीचमै ॥ ६ ॥ मतिसंजमसोर
ठा ॥ तपचाहेसुरराय करमसिखर
कौ बज्र है ॥ द्वादसविधसुखदाय ॥
क्योन करै निजसकतसम ॥ ७ ॥ उत्तमत
पसबमाहिंबखाना ॥ करमसैलकौ
बज्रसमाना ॥ बस्यो अनादि निगोद
मझारा ॥ भूविकलत्रयपसुतनधारा
धारामनुखतनमहांदुर्लभा ॥ सुकल
आवनिरोगता ॥ श्रीजिनवांनीतत्व
ज्ञांनी ॥ भइविखमपयोगता ॥ अति
महांदुर्लभ त्यागाविखयकखाय
जेतप आदरै ॥ नरभौ अनुपमकनक
घरपर धरमनमई कलसाधरै ॥ ७
[illegible] उत्तमत्यागि

परकार ।। यारसंघको रीतिजेह ।। धनवि

ने -जिलिनूंहारनरभोलाहीलीजिए

५ ।। उत्तमत्यागरु हैजगसार ।। औष

धसास्त्रअभैआहार ।। निहच्चैराग

दोषनिरवारे ।। ग्यातादोनोंदानसंभा

रे ।। दानसंभारेकूपजलसमदरवघर

मेंपरनया ।। निजहाथदीअैसापलीने

खोयखोयाबहिगया ।। धनसाध

सास्त्रअभै दिवैया त्यागराग विरोध

कौ बिनुदानश्रावकसाधदोनौंलहे

नाहीबोधको ।। ८ ।। इतित्याग ।।

सोरठा ।। परग्रहचौवीसभेद ।।

त्यागकरैमुनिराजजी ।। तिसनाभा

वउछेदघटातेजानिघटाइया ।। ९

आतमआकिंचनगुनजानो ।। परि

गहाचिंतादुखहीमानो ।। फासतन

कसीतनमेंसाले ।। चाहलंगोटिकीदुख

भाले ।। भालेनसमतासुखकभीनर

बिनामुनमुद्राधरे ।। धननगनिपर

तनगनबांदे ।। सुरअसुरपायनपरे

घरमाहितिसनांजोघटावेरुचनहीं

संसारसौं ।। बहूधनपुराकूभलाकहि

येलीनपरउपगारसो ।। ९ ।। इति आ

किंचन ।। सोरठा ।। सीलवाडीनौरा

खि ।। ब्रह्मभावअंतरलखो ।। करीदोनो

अभिलाष ।। करौसफलनरभौसदा

|पूजा||

|२५|

१०॥ उत्तम ब्रह्मचर्य सर्व मांनौ॥ माता
बहन सुता पहिचानौ॥ सहै बान बरखा
बहु सूरौ॥ टिगै न नैन बान लखि
कूरौ॥ कूरे त्रिया के असुच तन मैं॥ काम
रागी रत करौ॥ बहु मृतक सरैय मसान
मांही काक ही लु चै भरौ॥ संसार मैं विष
वेलनारी॥ तजि गए जोगीस्वरा॥ द्यानत
धरम दस पैडि चढ कै सिव महल मैं पग
धरा॥ १०॥ इति ब्रम्हचार्य॥ दोह
दस लछन वंदौ सदा मनवंछित
पद दाय॥ कहूं आरति भारती हम
परहो सहाय॥ १॥ छंद चौपई॥
उत्तम छिमां जहां मन होई॥ अंतर
बाहर सत्रुन कोई॥ उत्तम मार्दव यी
नै प्रकासे॥ नाना भेद ग्यांन सब भासे
१॥ उत्तम आर्जव कपट मिटावे॥ दुर्ग
ति त्यागि सुगति उपजावै॥ उत्तम स
त्य वचन मुख बोलै॥ सो प्रानी संसा
र न डोलै॥ उत्तम सौच लोभ परहारी
संतोखी गुन रतन भंडारी॥ उत्तम संज
म पालै ग्याता॥ नरभौ सुफल करै ले
हि साता॥ ३॥ उत्तम तप निरवांछक
पालै॥ सो नर नरक सकति कौ टालै॥ उ
त्तम त्याग करै जो कोई॥ भोग भूमि सुर
सिव सुख होई॥ ४॥ उत्तम आकिंचन
[illegible] परम समाधि दसा बिस्तारे

१२

उत्तमब्रह्मचर्येमनलावे॥ नरसुरसहि
तमुकतपदपावै॥५॥ दोहा॥ करैकर्म
कीनिर्जरा। भौपिंजराविनास। अजर
अमरपदकोलहै। द्यानतसुषकीरास
६॥ इतिदसलाछिनीपूजासंपूर्ण ज
यमालासंपूर्ण॥ ॥ अथर
तनत्रयपूजालिख्यते॥ दोहा॥
चहुंगतिफनिविषहरनमनि। दु
खपावकजलधार। सिवसुखसुधा
सरोवरी। सम्यकत्रयनिहार॥ ॐ
ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन अत्रति
ष्टतिष्ठ ठः ठः स्वाहा आह्वानन
स्थापनं॥ सोरठा॥ क्षिरोदधि
उनहार। उज्जल अतिसोहना। जन
मरोगनिरवार। सम्यकरतनत्रयभ
जो॥ ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यकदर्सना
यजलं॥ निरूपाभितिस्वाहा॥ १
चंदनकेसरधार। परमलमहासु
गंधमैं। जनमरोगनिरवार। संम्यक
रत्नत्रयभजो॥ गंधं॥ २॥ तंदुल
अमलाचितार। वासमतिसुखदास
के। जनमरोगानिरवार सम्यकरत
नत्रयभजौ॥ अक्षितं॥ ३॥ माहि
केफूलअपार। अलिगुंजैज्यौंथुति
करै। जणमरोगनिरवार। सम्यक
रतनत्रयभजो॥ पुष्पं॥ ४॥ लाडू

बहुविसतार॥ चिकनामिष्ट सुगंधता
जनमरोगनि०॥ सम्यक्तरतन०॥ नैवे
द्यं॥५॥ दीपरतनमयसार॥ जोतिप्र
कासैजगतमैं॥ जनम०॥ दीपं॥६
धूपसुबासविचारा॥ चंदनअगरके
पूरका॥ जनमरोगनिरवार॥ सम्यक
रतनत्रयभजो॥ धूपं॥७॥ फल
सोभाअधिकार॥ लौंगछुहारेजाप
फल॥ जनम०॥ फलं॥८॥ सम्य
कदरसनग्यान॥ व्रतशिवमगतीनों
मई॥ पारउतारनजान॥ द्यानतपूजो
व्रतसहित॥ अर्घं॥९॥ अथद
रसनपूजालिख्यते॥ दोहा॥ सि
द्धअष्टगुणमयप्रगटमुकतीतीन
सोपान॥ जाबिनग्यानचारितफलस
म्यकदरसप्रधान॥१३॥ ॐह्रींसम्य
कदर्सनाय॥ सोरठा नीर सुगंध
अपार॥ त्रिषाहरैमलछयकरै॥ स
म्यकदरसनसार॥ आठअंगपूजौस
दा॥ ॐह्रींसम्यकदरसनायजलं॥
निर्वपामीतिस्वाहा॥१॥ जलकेस
रघसासार॥ तापहरैसीतलकरै॥ स
म्यकदरसनसार आठअंगपूजौसदा॥
सुगंधं॥२॥ अछितअनूपनिहार
दारिद्रनासैसुखभरै॥ सम्यकदरस

हितं ॥ ३ ॥ पहूपसुवास छदार। खेद
हरैमनसुचिकरौ। सम्यकदरसनसार
आठअंग० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ नेवज विवि
धिप्रकार। छुधाहरैथिरिताकरौ। सम्य
कदर०॥ आठअंग० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥ दी
पकज्योतितमहार। घटघटपरका
सैमहा। सम्यकद०॥ आठअंग० ॥ दी
पं ॥ ६ ॥ धूपघ्राणसुखकार। रोगवि
घनजडताहरौ। सम्यक०॥ आठअंग०
धूपं ॥ ७ ॥ श्रीफलआदिविथार। निह
चैसुरसिवफलकरौ। सम्यकदर०॥ आ
ठअंग० ॥ फलं ॥ ८ ॥ जलगंधाक्षि
तचार। दीपधूपफलफूलचरु। स
म्यकदरसनसार। आठअंगजुतजोसदा
॥ अर्घं ॥ ९ ॥ दोहा ॥ आपआपनिह
चैलखे। तत्वप्रीतिव्योहार। रहित
दोषपचीसहै। सहितअष्टगुणसार
१० ॥ जकरी ॥ चौपही ॥ मिलामि
लीछंद ॥ समकदरसणरतणाग
हीजे। जिणवचणामैंसंदेहनकीजे
इहभवविभवचाहिदुखदानी। पर
भवभोगचहैमतिप्रानी। प्राणीगि
लाणीनकरीअशुभलखि। धरम
गुरुप्रभुपरखिये। परदोषढकिये
धरमडिगतेकौसुथिरकरीहरखि
ये। चहुंसंगकौवाछल्लकीजे। धरम

पूजा ॥ ३१

क्रियाभावयो ॥ गुन आठ सौं गुन आ
ठ लहि कौ ॥ इहां फेरि न आगरा ॥ ९ ॥ इती
दरसन पूजा ॥ ॥ अथ ज्ञान पूजा
दोहा ॥ पंच भेद जाके प्रगट ज्ञेय प्रका
सन भान ॥ मोह तपन हरि चंद्रमा सो
ही सम्यक ज्ञान ॥ १ ॥ नीर सुगंध अ
पार ॥ त्रिषा हरे मल छय करे ॥ सम्यक
ज्ञान विचार ॥ आठ भेद पूजो सदा ॥
जलं ॥ १ ॥ जल केसर घनसार ताप
हरे सीतल करे ॥ सम्यक ज्ञान विचा
र ॥ आठ भेद पूजो सदा ॥ गंधं ॥ २ ॥ अ
छित अनूप निहार ॥ दारिद्र नासे सुख
भरे ॥ सम्यक ज्ञान विचार ॥ आठ भे
द पूजो सदा ॥ अक्षितं ॥ ३ ॥ पहुप सु
वास उदार ॥ खेद हरे मन सुचि करे ॥
सम्यक ज्ञान विचार ॥ आठ भेद० ॥
पुष्पं ॥ ४ ॥ नेवज विविधि प्रकार
छुधा हरे थिरता करे ॥ सम्यक ज्ञान
विचार ॥ आठ भेद० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥
दीपक ज्योति तम हार ॥ घट घट पर
कासे महा ॥ सम्यक ज्ञान विचार ॥
आठ भेद० ॥ दीपं ॥ ६ ॥ धूप घ्राण नें
न सुख कार ॥ रोग विघन जडता हरे ॥
सम्यक ज्ञान विचार ॥ आठ भेद पूजो
सदा ॥ धूपं ॥ ७ ॥ श्री फल आदि वि

३१

सम्यक्ग्यानाविच्यार आठभेद पूजौ

सदा ॥ फलं ॥ ८ ॥ जलगंधाक्षित

च्यार दीपधूपफलफूलचरु ॥ सम्य

क्ग्यानाविचार ॥ आठभेद पूजौ सदा

अर्घं ॥ ९ ॥ दोहा ॥ आपआप जा

नै नियत ॥ ग्रंथपठन व्योहार ॥ संस

यविभ्रममोहाबिन ॥ अष्टअंग गुणाका

र ॥ १ ॥ जकरी ॥ सम्यक्ग्यानरत

नमनभाया ॥ आगमतिजा नैनब

ताया ॥ अछरसुद्ध अरथपहचा

नै ॥ अछरअरथ उभयसंग

जानै ॥ जानै सुकालपठेसु भाविनिज

नामगुरुनछिपाईये ॥ तबरितगहि

बहुमान दैकै ॥ विनयगुणचितलाईये

ये आठभेद करमउछेदक ग्यानादरपन

देखना ॥ इसग्यानहीसौ भरतसिझा

औरसब पटपेखना ॥ इतिग्यानपू

जा ॥ ॥ अथचारित्रपू

जा ॥ दोहा ॥ विखयरोग औखदम

हा ॥ दवकखायजलधार ॥ तीर्थंकरजा

कौलिए ॥ सम्यक्चारितसार ॥ १ ॥ सो

रठा ॥ नीरसुगंधअपार ॥ त्रिखाहरै

मलछयकरै ॥ सम्यक्चारितधार ॥

तेरहविध पूजौ सदा ॥ जलं ॥ १ ॥ जल

केसरघनसार ॥ ता पहरैसीतलकरै ॥

सम्यक्चारितधार ॥ तेरहविधिपूजौ

पूजा व
॥३२॥

सदा॥ गंधं॥३॥ अक्षित अनूपनिहार शालिदुर्नासे सुख भैरौ॥ समकूचाव तेरहवि०॥ अक्षितं॥४॥ पहुपसुवासन दार॥ खेद हरै मन सुच करै॥ सम्यकचाव॥ तेरहविध०॥ पुष्पं॥५॥ नेवजविविध प्रकार क्षुधा हरै थिरता करै॥ सम्यकचाव॥ तेरहविध०॥ नैवेद्यं॥५॥ दीपज्योति तम हार॥ घटपटपरकासे महा॥ सम्यकचाव॥ तेरहविध०॥ दीपं॥६॥ धूपघ्राण सुखकार॥ रोगविघन जडता हरै॥ सम्यकचा० तेरह०॥ धूपं॥७॥ श्रीफल आदि विथार॥ निहचे सुरासिव फलकरै॥ सम्यकचारित्र धार॥ तेरहविधि पूजो सदा॥ फलं॥८॥ जलगंधाक्षित चारु॥ दीप धूप फल फूल चरु॥ सम्यक चारित्र धार॥ तेरहविधि पूजो सदा॥ अर्घं॥९॥ दोहा॥ आपआपथिरता नियम॥ तप संजम व्योहार॥ सुपरदया दोन्यौं लिये॥ तेरहि विधि दुख हार॥१॥ जकरी॥ सम्यकचारित रतन संभालो॥ पांच पाप तजे व्रत पालो॥ पंचसमिति त्रिय गुपति गहीजे॥ नरभव सुफल करो तन छीजे॥ छीजे सदा तनको जितन यह॥ येक संजम पा

करवायाविरखनटातियै॥ सुभकरम
जोगसुघाटआया॥ पारहोदिनजात
है॥ द्यानतधरमकीनाववैठेछिरसु
रीकुसलातहै॥ ३॥ अथजयमाल
दोहा॥ सम्यकदरसनग्यानव्रत
इनविनमुकतिनहोय॥ अंधपंगुअ
रआलसी॥ जुदेजुदेदवलोय॥
चौपई॥ तापैध्यानसुथीरवनिआ
वै॥ ताकोकर्मवंधकटिजावै॥ तासौ
सिवप्रियप्रीतिवढावै॥ जोसम्यकर
त्नत्रयध्यावै॥ १॥ ताकोचहूंगतिकेदुख
नाही॥ सोनपरैभवसागरमाही॥ जन
मजरामृतदोषमिटावै॥ जोसम्यक
रत्नत्रयध्यावै॥ २॥ सोईदसलाछिन
कोसाधै॥ सोईसोलहकारनआराधै
सोपरमातमपदउपजावै॥ जोसं
म्यकरत्नत्रयध्यावै॥ ३॥ सोइसकचक्र
पदलेइ॥ तीनलोककेसुखविलसेइ
सोरागादिकभावबहावै॥ जोसम्य
करत्नत्रयध्यावै॥ ४॥ सोईलोकालो
कानिहारै॥ परमानंददसाबिस्तारै॥
आपतरैऔरनितरावै॥ जोसंम्य
करत्नत्रयध्यावै॥ ५॥ दोहा॥ एकस
रूपप्रकासनिज॥ वचनकह्योनही॥
जाय॥ तीनभेदव्योहारसव॥ द्यान
तकोसुखदाय॥ ६॥ इतिरत्नत्र

यपूजानयमाल संपूर्णं ॥ ॥ अ
थ अष्टाणाका कि पूजा लिख्यते
अडिल ॥ सब पर बन मैं बडो अठ
ईप बैहै ॥ नंदिसुर सुर जाहि लिये
बहु दर्व हो ॥ हमै सकति सो नाहि इ
हां करि थापणां ॥ पूजै जिण प्रतिबिं
व सो है हित आपणां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नंदी
स्वरद्वीपे द्वापंचासज्जिनालयेभ्यो
क अंजण गिर च्यारि दधिमुख अ
ष्टरातिकर त्रयोदस चैत्यालयेभ्यो
नमः ॥ छंद ॥ कांचणमणिमय भृं
गार ॥ तीरथ नीर भरा ॥ तिहुं धार दई
निरवार ॥ जामन मरन जरा ॥ नंदीश्वर
श्रीजिणधाम ॥ बावन पूज करौ ॥ व
सुदिन प्रतमा अभिराम ॥ आनंद भाव
धरौ ॥ ॐ ह्रीं ॥ नंदीद्वीपे द्वापंचासजि
णालयेभ्य एक अंजण गिर च्यारि द्धि
मुख अष्टरातिकर त्रयोदस चैत्या
लयेभ्यो नमः ॥ जलं ॥ १ ॥ भवतापहर
सीतलवास ॥ सो चंदन नाहि ॥ प्रभु यह
गुण कि जो सांच ॥ आयो तुम ठाही ॥ नंदी
स्वर श्रीजिनधाम बावन पूज करौ व
सुदिन प्रतिमा अभिराम आनंद भाव
धरूं ॥ गंधं ॥ २ ॥ अक्षित अखंड
सुभसार ॥ सो अक्षित ल्यांऊं ॥ प्रभु यह
गुण की जो सांच ॥ अखयनिध पांउं ०॥

नंदिसुरजिन०॥ अक्षितं॥३॥ तुम
कोंमदविनासनदेव। ध्यांऊंफूलनसौं
लेऊंशीललछमीएह। छूटौंसूलनसौं
नंदिस्वरश्रीजिणधांम। याथनपूज
करौं वसुदिनप्रतिमांअभिरांम। आ
नंदभावधरौं॥ पुष्पं॥४॥ तुमकाम
विनासनदेव। नेवज इंद्रियलकार
सोतुमनेचूरा। चरुतुमढिगसोहैसार
आचिरजहैपूरा। नंदिस्वरजिन०॥ नै
वेद्यं॥५॥ दीपककीजोतिप्रकास तु
मतनमांहिलसे। टूटैकरमनकीरास।
ध्यांनकनीदरसै। नंदीस्वर जिण०
दीपं॥६॥ कस्नागरधूपसुबास द
सिदिसनीरवरौ। अतिहर्षभावपरका
स मानूंनृत्यकरै। नंदिस्वरजिन०॥धू
पं॥७॥ बहुविधफललेतिहुंकाल। आ
नंदराचतहै। तुमसबफलदेहुंदयाल
तोहुंजाचतहै। नंदिस्वरजिन०॥फलं
॥८॥ यह अरघाकियोनिजहेत। तुमको
अर्पतहौं। द्यानतकीनोनिजखेत। भू
पसमर्पतहौं। नंदिस्वरजिण धांम चा
णपूज्यकरौ। वसुदिनप्रतिमांअभिरां
मा। आनंदभावधरुं॥ अर्घं॥ ९॥ अ
थजयमाला॥ दोहा॥ कातिकफा
गुनआषाढकै। अंतआठदिनमांहि
नंदिस्वरसुरजातहैं। हमपूजैंइसठांइ

एकसौतेसाटिसुकोडिजोजनमहां ला
खचौरासीयेएकादिसमैलहा ॥ आठमेदी
पनंदीस्वरंभासुरं ॥ भवनबावन्नप्रति
मांनंमोसुखकरं ॥ २ ॥ च्यारादिसच्यारि
अंजनागिरंराजही ॥ सहसचौरासिय
एकइकछाजइ ॥ ढौलसमगोलऊपर
तलेसुदरं ॥ भौनबावन्नप्रतिमानमोसु
खकरं ॥ ३ ॥ इकइकच्यारिदिसच्यारि
सुन्नबावरी ॥ येकइकलाखजोजनअम
लजलभरी ॥ चहूदिसाच्यारिबनल
खजोजनवरं ॥ भौनबावन्नप्रतिमानमो
सुखकरं ॥ ४ ॥ सोलबापीनमधिसोलगिर
दधिमुखं ॥ सहसदसमहांजोजणलष
तहीसुखं ॥ बावरीकौनदौमांहीदोरतिक
रं ॥ भौनबावन्नप्रतिमा० ॥ ५ ॥ सोलबत्ती
सइकसहसजोजनकहे ॥ च्यारिसोलै
मिलैसरबबाबनलहै ॥ येकइकसीसपर
येकजिनमंदिरं ॥ भौनबाव० ॥ ६ ॥ विंकर
रयेकसोरतनसोसोहही ॥ देवदेवीसरव
नैनमनमोहही ॥ पांचसैधनुषतनपद्म
आसनपरं ॥ भौनबावन्नप्रतिमानमोसु
षकरं ॥ ७ ॥ लालनखमुखनयनस्यामअ
रुस्वेतहै ॥ स्यामरंगभौंहसिरकेसछबदेतहै
बचनबोलतमनुहसतकालुखहरं भौ
नबावन्नप्रतिमां० ॥ ८ ॥ कोटसासिभांनछ
बतेसछिपिजातहै ॥ महावैरागपरनांम

ठहरात है॥ येन नही कहै त्तरिव होनस म्यक धरं॥ भौन ग्रमन्न प्रतिमान मों सुखकरं॥ ९॥ सोरठा॥ नंदिस्वर जि न धाम॥ प्रतिमा महिमा कोक है॥ घा नत लीनो नाम॥ ये ही भगति सब सुख करो॥ १०॥ इति नंदिस्वर पूजा संपू र्ण॥ ग्रथ श्रीसिद्धक्षेत्र पूजा लिख्यते सोरठा॥ परम पूज्य चौवीस॥ जिहां जि हां थानक शिव गये॥ सिद्ध भूमि निसदी स॥ मन वच तन पूजा करूं॥ ॐ ह्रीं सिद्ध क्षेत्र ग्रस्य जिन ... ... तरावतर संवौ षट् ग्राव्हानन॥ ... ... तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं॥ ... मम संनिहितो भव भव वषट् संनिधापनं सांन्निधि करनं॥ ग्रथाष्टकं॥ गीता छंद॥ सुचि स्वीर दधि सम नीर निरमल क नक झारी में भरौ॥ संसार पार उतार स्व मि जोर कर विनती करौ॥ सम्मेद गड गिरनार चंपापावापुरी कैलास कौ॥ पूजों सदा चौवीस जिन निर्वाण भूमि निवास कौ॥ १॥ जलं॥ १॥ केसर कपू र सुगंध चंदन सलिल शीतल विस तरूं॥ भव पाप कौ संताप मेटो जोरि क रि बिनती करौं॥ सम्मेद गड गिरनार० गंधं॥ २॥ मोती समान ग्रखंड तंदु ल ग्रमल ग्रानंद विसतरूं॥ ग्रौगुण

पूजा ०॥ हौ गुरा करो हमकुं ॥ जोरि करि विन
३५॥ तीकरौं ॥ सम्मेदगड गिनारि ० ॥ अछतं
३ ॥ सबफूल रासि सुवास वासित खे
व दसदूमनकेहरो ॥ दुखदाम कामविनास
मेरो ॥ जोरि करि विनती करौं ॥ सम्मेदगड
गिनारि ० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ नेवज अनेक
प्रकार जोगमनोग धरि भौ पारि हरो प
कुभुधिदुखन यारि प्रभुजी जोरि करि वि
नतीकरौं ॥ सम्मेदगड गिरनारि ० ॥ नै
वेद्यं ॥ ५ ॥ दीपप्रकास उजास उज्जलति
मरसेतीनहिडरौ ॥ संसै विमोह विभ्रमत
महर ॥ जोरि करि विनती करौं ॥ सम्मेद ०
दीप ॥ ६ ॥ अति धूप सुंदर सुभ अनूप
सभावपावन अ्रा चरौ ॥ सब करम पुंज
जलाय दीजै जोरकर विनती करौं ॥ स
म्मेद ० ॥ धूप ॥ ७ ॥ बहुफल मंगाइ उ
त्तम त्यागि तिसो निरवरौं ॥ निहचै मु
कतिफल देइ गोमो ॥ जोरि करि विनती
करो सम्मेद ० ॥ फल ॥ ८ ॥ जलगंध
अछित फूल चरु फल दीप धूप अर
घकरो ॥ द्यानत करौ निरभै जगत मैं ॥
जोरि करि विनती करो ॥ सम्मेदगडगिर
नारचंपापुर पावापुर के तास कौं
पूजो सदा चौवीस जिरानिरवाराभू
मनिवासकौं ॥ स ॥ अर्घं ॥ ९ ॥ अथ

गोस॥ गिरकैलासादिकनमौं॥ तीरथ
महांप्रदेस॥ महांपुरुषनिरबांनकौ॥१॥
चौपाही॥ नामौरिषबकैलासपहारं
नेमनाथगिरनारनिहारं॥ बासपूज्यचं
पापुरबंदौ॥ सनमतिपावापुरअभिनं
दौ॥४॥ वंदौअजितअजितपददाता॥
वंदौसंभवभवदुखघाता॥ वंदौअभिनं
दनगुणनायक॥ वंदौसुमतिसुमतिके
दायक॥३॥ वंदौपदमसुकतिपदमाधरि
वंदौसुपार्सआसपासिहरि॥ वंदौचं
द्राप्रभप्रभचंदा॥ वंदौसुविधनिधिके
कंदा॥४॥ वंदौसीतलअघतपसीत
ल॥ वंदौश्रीश्रेयांसमहाबल॥ वंदौवंदौ
विमलविमलउपयोगी॥ वंदौअनंत
अनंतसुखभोगी॥५॥ वंदौधर्मधर्म
बिसतारा॥ वंदौसांतिसांतिमुनधारा
वंदौकुंथकुंथरिषपालं॥ वंदौअरअ
रगुणमालं॥६॥ वंदौमल्लिकामद
लिचूरण॥ वंदौमुनसुब्रतब्रतपूरण॥ वं
दौनमिजिननमतसुरासुर॥ वंदौपास
पासभ्रमजरहरि॥७॥ बीसौसिद्धभूम
जेऊपरि॥ सिखरसंमेदमहागिरभूपरि
के एकबारवंदेजोकोई॥ ताहीनरकपसुगति
नहिहोई॥८॥ नरगतिनृपसुरसककहा
वै॥ तिहुंजगभोगिभोगिसिवपावै॥ वि
घनविनासकमंगलकारी॥ गुणविलास

३६॥

वर्द्धेनरनारी॥ ९ ॥घत्ता॥ जोतीरथ
जावे॥पापामि टावे॥ध्यावेगावेभक्ति
करै॥ताकोजसकहियै॥संपालेलहियै
गिरिकेगुरा कोउनचरै॥१०॥घत्ता॥
इतिसिद्धक्षेत्राकि पूजासंपूर्णं॥
अथ्याअादित्यवारव्रत पूजालि
ख्यते॥इक्ष्वाकवंसकुलमंडनअस्वसे
नो॥तद्वंशभाप्रतिवृता जिनवामदेवी
तस्यानुजं विमलमूर्तिसुरेंद्रवंद्यं॥त्रैलो
क्यनाथजिनपार्श्वपदंनमामी॥१॥नागे
द्रचिह्नवरलासनकेतुसोभा पद्मा
वतीधरनयरुतिसेव्यमानं॥बानारसी
विदितश्रीजिराजन्मथानं॥त्रैलोक्यना
थजिनपार्श्वपदंनमामि॥२॥गर्भावतार
समयसुररत्नवृष्टे॥कौमारिकाविविध
यत्नपनसेव्यमाने॥मातप्रसूतीजिननिर्गु
तिभुक्तिसुक्तौ॥ त्रैलोक्य॥३॥ जन्माभि
षेकवरमंगलपूजनाद्यौ॥सकानिपांडक
सिलागतिहर्षपूर्वं॥क्षीरोधकेकलस
अवसहस्रपूज्यं॥त्रैलोक्य॥४॥छत्रत्र
यंतरुमसोकन्निमासनंच॥भामंडलंच
तुरष्टसुचामरानी॥दिव्यध्वनिं विविध
दुंदुभिपुष्पवृष्टी॥त्रैलोक्य॥५॥कंदर्प
दर्पमदनंजनधीरवीरं॥उर्द्धस्मयुगल
सप्तनवप्रदानं॥मिथ्यामतौघमठनिद्धु

धाजनम मोहनरागद्वेषं। चिंतारुजा
भयमदोरतिमृत्युनिद्रा। सोषल्लवि
स्मयजरातुचरवेदस्वेद। त्रैलोक्य०
७॥ इत्याष्टकं विविधिभक्ति करोमि
नित्यं तेसंलभंतिफलवांछित भाव
पूर्वं। श्रीकल्पवृक्षसमदानि जिनेंद्रभ
द्रं। त्रैलोक्य०॥८॥ इतिश्र्यादित्य वि
धानं मोननिर्मुक्त पूर्वं। वरनवरनपु
ष्पदेवदेवेंद्र वंद्यं। पठतिविमलभावं
देवपुष्पांजलिवं। दिणाकर घृतपूजा
स्यापयेपार्श्वनाथं॥ ९॥ ॐ ह्रीं श्रीं
पार्श्वनाथाय धरणेंद्रपद्मावती
सहिताय अतुलबलवीर्जपरा
क्रमाय सर्वदुष्टोपसर्गरोगा। जन्म
मृत्यविनासनाय श्रीरविव्रताय
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असियाउसा
यनमः तस्योपरिपुष्पांजलिंक्षि
पेत अत्रावतरावतर संवौषट् कृता
ह्वाननं। अत्रतिष्ठतिष्ठ ठः ठः स्था
पनं। अत्रममसान्निधापनं॥ ३॥
अथाष्टकं॥ भाग्यदि गंगादितीर्थो
दकहेमकुंभे। प्रक्षालितं श्रीजिन
पादपद्मै। श्रीपार्श्वनाथस्यरविव्रता
य ददेमुदा निर्मलनीरधारे॥ ॐ ह्रीं
अर्हं श्रीपार्श्वनाथाय धरणेंद्रप
द्मावती सहिताय भ्यो॥ जलं॥ १

३७

कास्मीरसं कुंकुमचंदनाद्यैः॥ सीतैसुगंधैः घनसाराममिश्रै॥ श्रीपार्श्वनाथस्य रविव्रताय॥ ददेमुदाचार्चितपादपद्मं॥ चंदन॥ २॥ अखंडितेशद्दितपंचपुंजे मुक्ताफलैर्जोतिसमानपूरे॥ श्रीपार्श्वनाथस्य रवीव्रताय ददेमुदाराजतपुंजपुंजे॥ अक्षतं॥ ३॥ कुंदावदातैकालिकाप्रसूनै॥ सत्पुष्पतैपुष्पितवेलचेगै॥ श्रीपार्श्वनाथस्य रविव्रताय ददेमुदकुसुमितपुष्पवृंदै पुष्पं॥ ४॥ पक्वानसाल्योदनक्षीरपूरै॥ नानारसैर्व्यंजनहेमपात्रै॥ श्रीपार्श्वनाथस्य रविव्रताय ददेमुदा सुद्धचरुप्रपूजा॥ [illegible]॥ चरुं॥ कर्पूरदीपैकनकावदातै॥ ज्योतिप्रकासेतममोहनासे॥ श्रीपार्श्व० ददेमुदादीपकज्योतिपूरै॥ दीपं॥ ६॥ कृष्णागरुचंदनधूपवर्गै॥ गुंजोत्तमैगुंजितदिग्विभागै॥ श्रीपार्श्वनाथस्य रवीव्रताय ददेमुदाधूपसुगंधद्रव्ये धूपं॥ ७॥ फलोत्तमा श्रीफलमातुलंगे॥ नारिंगपुंगैकदालिविचित्रै॥ श्रीपार्श्वनाथस्य रविव्रताय ददेमुदासत्फलजोगपुक्तै॥ फलं॥ ८॥ सद्वारिगंधैकुसमैसुसाले चरुप्रदीपैफलधूप

ददेमुदा अर्धमहार्घपूरौ ८७॥ अथ
अथजयमाल॥ जयजयजगवंद
ना।कर्मनिकंदन॥वामानंदनधरऽमना
रविवृतपरगासन॥ भवभयनासन
दुःखविनासनसुखकरनं॥१॥ जय
जगतानंदनजगतसार॥जगवंदन
ज्योतिअपारपार॥जगजीवनप्रांरा
अधारसंत॥ जयदिनकरवृतउपदेस
वंत॥२॥ जगनायकलाइकजगप्रधा
न॥ जगमंडनसमवसरनाविमांन॥जग
पन्नगलाछनधुजलसंत॥जयदिन
करवृतउपदेसवंत॥३॥ जयजगमोह
नसासनजिनेंद्र॥ जयजगसोभनआ
नंदकंद॥जयजगमुकटसिरोमणिगु
णअगंत॥ जयजयदिनकर०॥४॥ज
यज्योतिदिवाकरजगउद्योत॥जय
जगपारउतारनजलधिपोत॥ जयज
गचंद्रकलामृतनिर्झरंत॥ जयजयदि
नकर०॥५॥ जयइंद्रनरेंद्रफनेंद्रसेव
जयत्रिभुवनपतिदेवाधिदेव॥जय
सिद्धवधूवरनारिकंत॥ जयदिनकर०
६॥ जयरतिपतिभयभंजनप्रवीरा
कमठेसमानवसकरनदीरा॥ जगचर
राकमलवंदितमहंत॥ जयजयदिन
कर०॥७॥ जयपन्नगबालुकनागराज
धरनीधरसेवहियक्षसमाज सबजन्

करत्सकजीवजंतौ॥जयजयदिन
कर०॥८॥जयडाकिनसाकिनजा
हिनास॥रिपुभूतपिसाचनैकराहि
त्रास॥सवरोगसोगभंजाहितुरंत॥जय
जयदिनकर०॥९॥मतिसागरसे
ठिसोवृतिप्रभाउ॥गुणधरअव
धिपुरभयेठराउ॥पुनआनकु
टंवसवसुखलहिंता॥जयजयदि
नकर०॥१०॥यहरविवृतमहिमा
कहिनजाय॥तुमकीजकुभाविम
नवचनकाय॥कहिलाभविनोदी
यसुनऊसंत॥जयजयदिनकर०॥
११॥घत्ता॥इतिरविवृतपूजासु
रपदहूजा॥जेकरंतनववर्षलही
मनवचक्रमध्यावहीसुरपदपाव
ही॥पार्श्वनाथफलदेतसही॥१२
अर्घ॥इक्ष्वाकवरवंसभूषननृपो
श्रीअस्वसेनोनुजा॥वामानंदन
इंद्रचंद्रधरनीसेसेवमानंसदा॥प्रत्या
हार्यविभूषतितंवसुविधिंकल्याण
कारीसदा॥तेतुभ्यांविदधातुवांछि
तफलंश्रीपार्श्वकल्पद्रुमं॥१३॥इ
त्यासीर्वादः॥३॥इतिरविवृतपू
जासंपूर्ण॥अथआगतयोद
सपूजासंस्कृत॥समभ्यर्चजिना
धीसान॥सुरासुरसमर्चितान॥स्तुत

संचक्रतुस्तव॥ नमंतसुखदायका
नृ॥१॥ जपत्वंश्रीजिनाधीसं सर्वदे
वेंद्रवंदित:॥ जयत्वंगुणमानिक्यं
रंजिताखिलभूतला॥२॥ जिनेंद्रभव
नोद्धारं॥ प्रतिमापापनासिनी॥ ए
कारयंतिसर्वज्ञा॥ स्तेसम्यग्दृष्टयो
भुवि॥३॥ कृत्वापंचामृतैर्दिव्याम
भिषेकोजिनेसिनां॥ भव्यापूजय
सूद्ध्वैस्ते पूज्यंतेसुरादिभी॥४॥
यथ्यादेवतथ्याजैनी॥ वानीसन्मा
र्गदर्सिनी॥ गुरूनांचरनंभोज द्वंद्वं
वद्यसुखार्थिभी॥५॥ श्रांतव्रत
सारोयं॥ पूजनेनजगत्रये॥ रोग
सोगसहस्रानि॥ क्षयंयांतिस
नार्हता॥६॥ सत्रुयोमित्रतांयांति
विघ्नसर्वेप्रयांतिच॥ सांतिसंपद्य
तेविश्व॥ यान्हिचापिजलायते॥७॥
पुत्रमित्रकलित्रादि:॥ सज्जनाश्चि
तंरंजनं॥ भवंतिस्नेहीनोनित्यंव्र
तानातप्रसादत:॥८॥ सारदेवेंद्र
चक्रादिसंपदाविविधासदा मुनि
मुक्ताफलंपाया॥ संप्राप्यतेपदेपदे
॥९॥ यदायदासमायाति॥ सर्वप
र्वचतुर्दसी॥ तदातदासमारभ्यो
विधानेव्रतमुत्तमं॥१०॥ नूरनादि
विहितेपात्रे॥ पाद्येत्रैसुमनोहरौ॥ चे

दनागरुकर्पूरं॥द्रव्यनसुभकारीनि:
११॥अनंतादिमहांजेतूं॥समुघृत्यवि
धरुनै॥पूर्वाचार्योपदेसानं॥डीकां
राधेमहाद्दरै॥१२॥सौधर्मराजितंताम्र
पद्मसूत्रंचमौक्तिकां॥जिनेंद्रप्रतिमाग्रे
व॥स्थापयेनंतमुत्तमं॥१३॥नक्षयंपं
चपीयूषेसंतोयपुष्पादिभी॥दुग्धेदं
धिप्रवाहेश्च॥स्नापियित्वामहोत्सवे
१४ करपूरगरस्तकास्मीर॥चंदनेलाद
वस्तुभी॥सर्वौषधीजलेनोच्चै॥प्रसा
नापरमादरात्॥१५॥सम्यक्त्वाघगुनो
घरत्ननिलयंदेवेंद्रवृंदार्चितं॥दु:
कर्म्मारिकठोरदारुदहनंजोगेंद्रसे
वितं॥१६॥लोकालोकविलोकनेक
कुसलंसंसारसंतापहं॥भक्त्यामुक्ति
सुखैककारनमहनंतंस्तुवेहंजजे॥१७॥इ
तिपठित्वाचतुर्विंसतिकाग्रे अनंत
जंत्रोपरिपुष्पांजालिंक्षिपेत॥समस्त
तीर्थकर्तारंसंस्थाप्येरन्महाधीपा॥अ
नंतस्यसुभेजंतेघृतोसंस्थापिभक्तितो
१॥ॐह्रींअर्हंअनंतकेवलीने अत्रा
वतरावतरसंवौषट्कताहवा
नान अत्रतिष्ठतिष्ठठ:ठ:स्थाप
ना अत्रममसंनिहितोभवभव
सन्निधापना॥जायफलवंग॥जाप्य
ॐह्रींअर्हंहंस:अनंतकेवलीनेनम:

इतिजाप्यदीयते ॥ अथाष्टकं ॥ श्री
गंगानीरं स्वच्छगहीरं सौरभ्याभृतभृं
गकरं । सीतोज्वलधारं तीर्थसुसारं
तरलसुधामधप्रद्धालं । अरांतवृत
सारं दुःखार्जितमारं सुखकारं भवभृ
मणाहरं । जन्मादिनिवारं धारतजिं
संसारं । चरनारर्चितसुरभूपपरं १
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं हंसं अमृतवाहने ॥
जलं ॥ १ ॥ मलयोद्भवजातं चार्चितस
तं श्रीखंडगरूकास्मीरं । कर्पूरंसीतं
अलीकृतगीतं भवआतापमहामि
विरं । अनंतव्रतसारं ॥ सुगंधां ॥ २ ॥
सुभआदिमालिकमलविसाली
ज्योतिखंडसुप्रद्धालं । मुक्तोज्वल
रूपंचार्चितभूपंजिनचरनाग्रविरतिध
रं । अनंतव्रतसारं० ॥ अक्षितं ॥ ३ ॥
पुष्पादिअपारंपरिमलसारंघ्रानम
धुव्रतझंकारं । चंपादिनिवारं जिर्जि
तमारंसुरसुंदरमनहीतकारं । अनं
त० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ पक्वानसुसोभंलोच
णलोभंहेमामेपरिपूर्नभरं । पंचामृत
सारं । चरनोतारंसंचलार्घजिनपूज
करं । अनंतव्रतसार० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥
दीपोत्करिज्वालंरत्नविसालंघृत
कर्पूरोद्योतकरं । आरार्तिकसौभंदुं
दंभियोभंलोकालोकप्रकासकरं ॥

अनंतवृतसारं० ॥ दीप ॥ ६ ॥ धूपो
घलिवृंदकस्मीनिकंदंजन्मजरामर
नादिपहं । अतिपरमलपूरं दसाविध
धूपं । कृस्नागरुहतासदहं । अनंत
वृतसारं० ॥ धूपं ॥ ७ ॥ श्रीफलनारंगं
कदलीपुंगं चोचमोचसुंदरसुभगं ॥
नयनात्सवकारी दोषनिवारी राजित
चरनसमीपजुगं ॥ अनतवृतसारं
० ॥ फलं ॥ ८ ॥ जलचंदनचारं अ
क्षितपारं पुष्पचारु दिपादिफ
लं । कृतिलालितसुकीर्तिनिर्मलमूर्ति
विविधस्वर्गश्रीमुक्तवरं । अनंतवृ
तसारं० ॥ अर्घ ॥ ९ ॥ अथ अंग
मोहप्रध्वस्ताश्चं दिगंबरानां ग्रंप
थनिर्मुक्तसमानचित्तं । अनंतनाथ
व्रतसारसौख्यं । महांमिनित्वंभव
सांतिमोहं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अनंतजिन
अनंतानंतगुणार्णवाय ॥ अर्घं
१ ॥ पूर्वप्रकासान् श्रुतमध्यपारान्
भव्याज्वमुलाहसगुरूर्विवस्यान्
अनंतनाथं । ॐ ह्रीं अनंतजिनपूर्वांगश्रु
तप्रकासकाय ॥ अर्घं ॥ २ ॥ जीवसमा
सादिकलक्षनान् । भेदःपदार्थान्
प्रतिबोधयंति । अनंतनाथं० ॥ ॐ ह्रीं
अनंतजिनजीवसमासादिभेदकाथि

दीरयंति॥प्रवर्तमार्गान्सुभदर्सयंति
अनंत०॥ॐह्रींजिनावसन्मार्गनासिव
संकराय॥ अर्घं॥४॥प्रकीर्नकास्ये
कृतभेदभावं॥समस्तासिद्धांतमहा
नुभावा॥अनंतनाथव्रतसारसौख्यं
महांमिनित्यंभवसांतिमोदं॥५॥
ॐह्रीं अनंताजिनप्रकीर्नकप्रकासि
तायअनंतसौख्यदाय॥ अर्घं॥५
भूतादिग्रामांजिनभक्तिहेतो॥समा
गतंमष्टविधंसुराय॥ अनंत०॥
अर्घं॥६॥ ॐह्रीं अनंतजिनभूतया
मादिदेवमार्चिताय अनंतचतुष्टाय
अर्घं॥६॥आद्योकुलोकारककर्मभू
मी॥धर्मस्यपुगंसुखभाजनानि॥
अनंत॥७॥ॐह्रीं अनंतजिनकुकर
कुलाद्योतकाय॥ अर्घं॥७॥ग्रान
स्यजीवस्यसमानसास्वात् दानं
व्रताचारसुमुक्तिहेतो॥अनंत०॥८
ॐह्रीं अनंताजिनग्रानप्रकासायसुर
सुरसमर्चिताय॥ अर्घं॥८॥जि
नेंद्रबिंबंभुवनानिभावं चैत्यप्रभा
वं महीमासुभावं॥ अनंत०॥९॥
ॐह्रीं अनंतजिनभवनेरसंस्थिता
य॥ अर्घं॥१०॥रत्नाधिपाम
र्चितमेंद्रदेवा॥रत्नाकिरानंगुरा
रत्नरासि: अनंतनाथ०॥ॐह्रीं अने

४१

तजिनरत्ननिधिपतीपूजताय रत्नत्र
यमोउतिाय॥ अर्घं॥ १ ॥ मालादिमु
क्तौसुभकर्मकर्ता हर्त्ताघटोघोषम
हाधिपेता॥ अनंतनाथं॥ ॐ ह्रीं अनं
तजिनमलप्रदोषरहिताय चौतिस
अतिसयविराजमानाय॥ अर्घं
११॥ सरिस्ववाहोमुनिधर्म्मदेसो
निग्रत्यथान्याविमलाज्वकोसे अ
नंतनाथं॥ १२ ॐ ह्रीं अनंतजिन
सरितापातिगुरोभ्यौदिव्यध्वनिप्र
वाहतरंगिनीभ्यो॥ अर्घं॥ १२॥ गु
णानगिरीथ्यान्गुणाढ्यानरूढान्
कर्मारिकद्वान्दहनापदक्षान्॥ अ
नंत॥ १३ ॐ ह्रीं अनंतजिनगुणस्था
नमारूढकेवलज्ञानाय प्रातिहार्य
सोभिताय॥ १३॥ अर्घं॥ गजेसमानं
गविचारनस्या॥ अध्योर्द्धमध्यंतक
मुक्तिसिद्धान्॥ अनंतनाथं॥ १४ ॐ ह्रीं
अनंतकेवलिनेचतुर्दसराज्वसिरसिद्ध
क्षेत्राय गुणाष्टकसंजूक्ताय॥ अ
र्घं॥ इत्याघेवरपूजनायसकलंप्र
त्येकचातुर्दसं॥ वार्गंधाक्षतपुष्प
चारुवटकैर्दीपेश्चधूपेफलै॥ भक्त्या
भावविसुद्धसांतिसततरोगादिपीडा
पहा॥ रिद्धिं वृद्धी करं अनंतसुखदं
पूर्णार्घदत्तैरिया॥ १५॥ पूर्णार्घं॥ अ

अंगपूजा॥ सुरीवरनीरसुवासि
तं। कनककुंभसुपूरितराजिकं। सुभ
अनंतविधानसुखाकरं। प्रनतम
र्च्चितभूपसुरासुरं॥ जलं॥ १॥ म
लयजाद्यनकुंकमसाद्रव्ये। सुभत
ंगमधुंव्रतमाखे। सुभअनंतवि
धानसुखाकरं०॥ गंधं॥ २॥ ससि
समुद्भलमौक्तिकभासुरं। कमलसालि
ररवंडमनोहरं। सुभअनंत०॥ अक्ष
तं॥ ३॥ कुसमचंपककेतुकीमाल
ती जलजपाटलकुंदसुसेवती। सुभ
अनंत०॥ पुष्पं॥ ४॥ मधुरमोदक
सेवसुहालके। घृतसुपक्कसुस्वाद
रसान्विते। सुभअनंत०॥ नैवेद्यं॥
५॥ तमनिराकृतदीपकज्वालितं। द्युति
कपूरविबोधप्रकासितं। सुभअनंत०
दीपं॥ ६॥ अगरुधूपतरुपुष्पदसांगके
परिमलौधकृतालिबनर्तके। सुभअ
नंत०॥ धूपं॥ ७॥ फलजलो द्भवचा
म्रकश्रीफले। अमृतचोचसुकर्कटि
पुंगके। सुभअनंत०॥ फलं॥ ८॥
सुकुसुमांजलिदानमहर्घभी। सलि
तकीर्त्तिगुरुगुणरासिभी। वसुविधि
कृतपूज्यसपूज्यभी। रतराजितनाकत्रि
पान्विते। ९॥ अर्घं॥ अप्पजयमा
[illegible]

र॥भवीयनहीयइसुहंकर॥जयसि
द्धियहंवर॥नयनानंदिर॥जयऋनं
ततिर्थंकर॥१॥नमोअरहंतनमोभ
गवंत॥नमोपरमेष्ठियामहसेत॥
जयजुगनाहअनंतजिनेस॥सुज
यजिनयोमविकासदिनेस॥२॥न
मोखगरायनरामरवंद॥नमोपयपा
डियसव्वसुरिंद॥जयजगनाहअ
नंतजिनेस॥३॥सुजयर्जिनयोमवि
कासदिनेस॥३॥नमोसियलरूण
लरूणाहीण॥नमोपरमरूयप
देपवीन॥जयजजग०॥४॥नमो
गयनंगराहुंदुहिसोय॥नमोवसु
पाडिहेराजयघोह॥जयजुग०॥५
नमोजलचंदअक्षयसार॥पसून
नमोचरुदीवविसाल॥जयजुग॥६
नमोसुहधूवमहापरुलदान॥नमोज
यमंगलहोइविधान॥जयजग०॥७
नमोध्वयतोरनवंदनमाल॥नमोच
लचामरछत्रविसाल॥जयजय०
८॥नमोजयघंटसुतारकसार॥सुतव
गइअरिसदासपार॥जयजुग०॥९
सुवीनावेनुउपंगमराल॥सुभुंगलसं
वभिसानधुकार॥जयजुग०॥१०॥
सोमधरिमधरिस्वरजुइगीत॥सुखा

पंच

११ ॥ सुप्तनमेहोछेकरइआनंद। सुवं
दइदेअनंतजिनंद। जयजय० ॥ १२
सुमैजैसवारैसवकोइ। सुमनुवसुफल
ऐसीविधिहोइ ॥ जयजग० ॥ १३ ॥
घत्ता ॥ एजयमालह। पुन्यविसाल
ह। वकुअरांतवंदतहो। चित्तिजपा
विजुइ। पावविसिजइ। त्तिविहेजि
गांखंच्वतहो ॥ १४ ॥ पूर्णार्घं ॥ जा
प्यदीयते ॥ गुणागणामनहरः। सर्वं
जीवोपकारः ॥ भवभ्रमानिवारा। कर्म्म
वह्माकुठार। व्रतचरनविचार्। चारा। प्रा
प्तसंसारपार। हतमदनविकार। मंगल
सारसार ॥ पूर्णार्घं ॥ गोत्रंवंधुकुटंव
मित्रविसदं पुत्रंकालित्रादिकं। राकोप
बलवृद्धिवर्द्धनकरंनित्योत्सवंवांछि
तं। कीर्तिस्फूर्यतिमूर्तिसारनिचितंकां
तिश्चभोभाग्यतो भूपः। नागनरेंद्रस
कसुपदंदधनप्रनंत हृते। १५ ॥ इत्या
शीर्वाद ॥ इति अनंत व्रतपूजासं
पूर्णं ॥ अथपंचमेरूपूजाभाषालिख्य
ते ॥ तीर्थंकरोके न्हवन जलते भयेती
रथसर्वदा। तातेप्रद छनदेत सुरगण
पंचमेरूनकीसदा। दोजलअढाईदी
पमेसबगणनमूलविराजही। पूजोंअ
स्सीजिनधामप्रतिमा। होहिसुखदु
खहानही ॥ ॐ ह्रीं ॥ पंचमेरूसंवंधीअ

अस्सी जिणालेभयो पंचपुष्पांजुलिक्षि
पेत ॥ अथाष्टकं ॥ सीतलमिष्ट सु
वासमिलाये जलसौं पूजौं श्री जिनराय
स्वसुलहां ॥ महासुषहोयजयजय
नाथ महासुख होय ॥ पांचो मेरु असी
जिणधाम सब प्रतिमाजिकौं करौं प्रन
म महासुषहोयदेषेनाथ महासुष होय
जलं ॥ १ ॥ जलकेसरकरपूरमिलाय
घस्यौं श्री जिनवरके पाय ॥ महासुष०
पांचूं मेरु० ॥ सुगंधं ॥ २ ॥ अक्षतसू
षंड सुगंध सुहाय ॥ अक्षत पूजौं श्री
जिणराय ॥ महासुष० ॥ पांचौं मेरु ०
अक्षितं ॥ ३ ॥ वरन अनोकर है महक
य ॥ फूलन पूजौं श्री जिणराय ॥ महा सुष
जयजय० ॥ पांचौं मेरु० ॥ पुष्पं ॥ ४
मनवांछत बहु तुरत उपाय ॥ चरु सौं पू
जौं श्री जिणराय ॥ महासुष० ॥ पांचौ
मेरु० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥ तम हर उज्जल
ज्योति जगाइ ॥ दीपक पूजौं श्री जिणराइ
महासुष० ॥ पांचौ मेरु० ॥ दीपं ॥ ६ ॥
षेउं अगरतगर अधिकाये ॥ धूप
सौं पूजौं श्री जिणराइ ॥ महासुष० ॥ पां
चौ मेरु० ॥ धूपं ॥ ७ ॥ सुरससुवर्णसु
गंधसुभाय ॥ फलसौं पूजौं श्री जिणरा
य ॥ महासुष० ॥ पांचौ मेरु ॥ फलं ॥
८ ॥ आठदर्व मय अरघ बनाइ ॥ द्यान

तपूजोंश्रीजिणराइ॥ महांसुषहोय
जैजैनाथमहांसुषहोइ॥ पांचोंमेरुश्र
स्सीजिणधांम॥ सबप्रतिमाजिको
करोंप्रणांम॥ महांसुषहोइजेजेनाथ
महांसुषहोय॥ अर्घं॥ ११॥ जाप्य
दीयते॥ १०८॥ अथजायमाल
सोरठा॥ प्रथमसुदरसनस्वामि
विजयेअचलमंदिरकहा॥ विद्यु
न्मालीनाम॥ पंचमेरुजगमेंप्रगट
१॥ चौपही॥ प्रथमसुदरसनमेरुवि
राजे॥ भद्रसालवनऊपरछाजे॥ चै
त्यालेचारुसुखकारी मनवचन
नवंदनाहमारी॥ २॥ ऊपरपांचसत
कपरसोहे॥ नंदनवनदेखतमनमो
हे॥ चैत्यालय॥ ३॥ साडेबासठसह
सऊंचाई॥ वनसोमनससोभेअधि
काई॥ चैत्यालय॥ ४॥ ऊंचाजोजनरा
सछत्तीसं॥ पांडुकवनसोहेगि
रसीसं॥ चैत्यालय॥ ५॥ चारोमेरु
समांणवनकहीने॥ ऊपरभद्रसाल
चहुजाने॥ चैत्याले॥ ६॥ ऊंचेपंचस
तकपरभाके॥ चारोंनंदिणवताअभि
रांपे॥ चैत्यालय॥ ७॥ साडेपचवन
सहसऊतंग॥ वनसोमनसचारबहुरं
ग॥ चैत्यालय॥ ८॥ ऊंचेहाइसमसहस
बताये॥ पांडुकचारोवनसुभगाये॥

चैत्यालयपे० ॥२५॥ सुरनरच्यारनवंद
राध्यावै ॥ सोसोभाहमकेमुखगावै
४ ॥ चैत्यालयच्यारोसुषकारी ॥ मनव
चतसाकरवंदनाहमारी ॥ १० ॥ दोहा
पंचमेरुकीआरती ॥ पटेसुनेजोकोइ
द्यानतफलजानेप्रभुतुरतपरमसुष
होय ॥ ११ ॥ इतिपंचमेरुकीपूजा
संपूर्णं ॥ अथज्येष्ठजिनवरपू
जालिख्यते ॥ नाभिकुलमंडनमरु
देवीउररयणं ॥ प्रथमतीर्थंकरगाय
सुस्वामितुआदिजिणं ॥ ज्येष्ठजि
नंदवाडनसुरहउगवनी ॥ सुवर्णक
लसआणावइक्षीरसमुद्रभरनी
१ ॥ जुगलधर्म्मनिवारणं ॥ स्वामीतो
आदिजिनं ॥ संसारसागरतारनसेव
तसुरगणं ॥ जेष्टजिनंदवाडनसु
रपाउगवनी ॥ सुवर्णकलस० २ इं
द्रइंद्राणीदेवदेवीवहुमिलनि
मेरुजिनंद्रवानियमहोत्सवजयक
रनि ॥ ज्येष्ठजिनंद० ॥ ३ ॥ गणधरऋ
षीवरयतिवरमुनिवरज्ञानधर ॥
आर्जिकाश्रावकश्राविकापूजितच
रनवरं ॥ ज्येष्ठजिनंद० ॥ ४ ॥ निर्मल
सीतलसुगंधहउदकपूजरयं ॥ के
मैमलपसेवटालिये ॥ आतमनिर्म
लयं ॥ जेष्ठजिनंद० ॥ ५ ॥ जलं ॥ २

चंदणकर्पूरकुंकुमविलेपनपूज्यर
यं॥सुगंधसरीरलही। करिआतम
निर्मलयं॥जेष्ठजिनेंद०॥गंधं॥२
मुक्ताफलजिमउज्वलअक्षितपूज्य
रयं॥अक्षयपदलाहिकरी आतम
निर्मलयं॥जेष्ठजिनेंद०॥अक्षतं॥
३॥जाइजुईमचकुंदसेवतपुज्य
रयं॥पूज्यपदलाहिकरीआतमनिर्मि
लयं॥जेष्ठजिनेंद०॥पुष्पं॥४॥
उत्तिमअन्नवहुआनियपकवान
पूज्यरयं॥वेदनिकर्म्मवीरागासिय
आतमानिर्मलयं॥ज्येष्ठजिनेंद०
नैवेद्यं॥५॥कपूरतनीवहुज्योति
सुआरतिपूज्यरयं॥केवलज्ञानाल
हिकरआतमनिर्मलयं॥जेष्ठजि
नेंद०॥दीपं॥६॥अगरकपूरकु
ंकुमागरुधूपलपूज्यरयं॥घातिक
र्म्मपूजालयआतमनिर्म्मलयं॥
जेष्ठजिनेंद॥धूपं॥७॥आम्रना
रिंगजेवीरतोनालिकेरपूज्यरयं
मनवांछितफलपामियआतमा
निर्म्मलयं॥जेष्ठजिनेंद०॥फलं॥८
धवलमंगलगीतमहोत्सवअर्घ
हपूज्यरयं॥स्तवनकरीफलमांगसु
आतमानिर्मलयं॥जेष्ठजिनेंद०॥
अर्घं॥९॥श्रीसकलकिरतिगुर

८५॥

प्रणमिजिनवरपदजरयं॥ ब्रह्मभणेजिणदासतोआतमनिर्म्मलयं॥ ज्येष्ठजिनं

ट०॥१०॥ अथजयमाल॥ अमरनपरसमनगरीअयोध्या॥ नाभिनरेंद्रवसेनिजबुध्या॥ सुरपतिमेरुसिष रलेइधरिया॥ कनककलसक्षीरोदधिभरिया॥ १॥ तसपटराणीमरुदेवीमाया॥ जुगपतिआदिजिनेश्वरज्याया॥ सुरपति०॥ २॥ ज्येष्ठमासअभिषेकजकरीया॥ अष्टोत्तरसतकुंभकढरिया॥ सुरपति०॥ ३॥ भवकतजलधारासंचरिया॥ ललितकपोलधरनिजधरीया॥ सुरपति०॥ ४॥ जयजयप्रसुरनिकरीउचरीया॥ इंद्रइंद्राणीसिंहासनधरिया॥ सुरपति०॥ ५॥ इंद्रशुभनामहोत्सवविस्तारीया॥ कमलनयनेनंनमालागलिकाढिया॥ सुरपति०॥ ६॥ अंगविभूषणाहरिया॥ कुंडलहारहरितमनजडिया॥ सुरपति०॥ ७॥ जुगलाधर्म्मनिवारणावरिया॥ सुरनरनिकरगंधोदकमाहिया॥ सुरपति०॥ ८॥ हेमहिमांसुचंदणघणसरिया॥ भरिसुगंधगंधपरसरीया॥ सुरपति०॥ ९॥ रत्नकंचोलकुमारिनीभरीया॥ जिणचरणांबुजपूजितहरिया॥ सुरपति०॥ १०॥ अरुतअक्षतवासीलहरीया

रोहिनिकंताकिरणसमकरिया॥सुर

पति०॥१३॥दीरिवतरुचिकरीअम

रारतिकारिया॥पंचमुष्टिजिसाअंमे

धरिया॥सुरपति०॥१४॥सुंदरपार

जातमोगरीया॥कमलविकुलपा

डलसमकलिया॥सुरपति०॥१५॥

चरुवरदीपलेइअवसारिया॥जिन

वरअंगेउतारउहारिया॥सुरपति

१६॥अगरलोबंरोधुपफलफलिया

फणसरसालमधुररसमिलिया॥

सुरपति०॥१७॥कुसुमांजुलिसांस्तु

तिसमकरिया॥पंडितराजअंमत्तवच

कहिया॥सुरपति०॥१८॥त्रिभुवनकी

र्तिपदकंजभरिया॥रत्नभवनसूरम

हावरिया॥सुरपति०॥१९॥ब्रम्हके

हम जिणराजविस्तरीया॥जयजपका

रकरिउचारिया॥सुरपति०॥१८॥कुं

भकलसभरिजेजिनधरिया॥शास्व

तसमेसदाअनुसारिया॥सुरपतिमे

हसिखरलेइधरिया॥कनकलस

क्षीरोदकभरीया॥१९॥घत्ता॥या

वेतिजिनचैत्यानि॥विद्यंतेभुवनत्रयं

तावंतिसततंभक्त्यात्रिपरित्येनमाम्यहं

२०॥अर्घं॥इतिजेष्टजिणवरअ

ष्टकजयमाल॥संपूर्णं॥ ॥

अथपांसोलपाठलिख्यते॥ ॥ ॥

८६

येंमतकरहीनभगातवरूभावनाभावी
ये॥ मंगलगीतपुवंधसुजिनगुणगा
ईये॥ जोपटपढावेसुरधरगावही॥ मन
वांछतफलसोनरनिहचैपावही॥ ५॥ नाचे
सुअष्टसिद्धनवेनिधमनपालितोष्वी
सुभानकैं॥ भ्रमभावछूटेसकलजिनपके
निणसरूपसोजानकैं॥ फुनिहरेपातिक
टरेविघरण्सुहोपमंगलनितमये॥ भ
णिरूपचंदसुदेवजिणवरदेवचौसंघ
गये॥ २॥ वङ्रसिद्धणकोनमस्का
रकरणं॥ अथसांति॥ शांतजिणं
शशिनिर्मलवक्त्रं॥ सीलगुणव्रतसं
यमपात्रं॥ अष्टशताःर्चितलक्षणगा
त्रं॥ नौमिजिणोत्तममंबुजनेत्रं॥ १॥
पंचममीप्सितचक्रधराणां॥ पूजितमिं
द्रनरेंद्रगणैश्च॥ सांतिकरंगणशांतिमभि
प्सु॥ षोडसतीर्थंकरप्रणमामि॥ २॥ दि
व्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टि॥ दुंदुभिरास
नयोजनघोषो॥ आतपवारणचामर
युगमे॥ यस्यविभातिचमंडलतेजः॥ ३॥
तंजगदार्चितशांतिजिणेंद्रं॥ शांतकरं
शिरसाप्रणमामि॥ सर्वगणायतुयछ
तुशांति॥ मह्यपरंपठतेपरमोच॥ ४॥
येभ्यार्चितामुकटकुंडलहाररत्नैः॥ सक्रा ८६
दिभीःसुरगुणैःस्तुतपादपद्मा॥ तेमेजि
ग नाः प्रवरवंसजगत्प्रदीपा॥ स्तिर्थंकरा

त

सततं शांतिकरा भवंतु ॥५॥ संपूजकानां
प्रतिपालकानां । यतींद्रसामान्यत
पोधनानां ॥ देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य
राज्ञः । करोतु शांतिं भगवान् जिनेंद्र
॥६॥ अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिर्दि
व्यध्वनिश्चामरभासनं च । भामंड
लं दुंदुभिरातपत्रं सत्प्रातिहार्याणि
जिनेश्वराणां ॥७॥ क्षेमं सर्वप्रजा
नां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपा
लः ॥ काले काले च सम्यग्वरषतु मघ
वा धार्मिको भूमिपालः । व्याधियो या
तु नाशं । दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि
जगतां मास्म भूज्जीवलोके ॥ जैनेंद्रं
धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्य
प्रदायि ॥८॥ प्रध्वस्तघातिकर्माणः
केवलज्ञानभास्कराः । कुर्वंतु जगतः
शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥९॥ प्रथ
मं पार्थनाप्रथमे करणे चरणं द्रव्यं नमः
शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगति
सर्वदार्यैः ॥ सद्वृत्तानां गुणगणकथा
दोषवादे च मौनं ॥ सर्वस्यापि प्रियहि
तवचो भावना चात्मतत्त्वे संपद्यंतां
मम भवभवे यावदेते पवर्गः ॥१॥ तव
पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पाद
द्वये लीनं । तिष्ठतु जिनेंद्र तावद्यावन्नि
र्वाणसंप्राप्तिः ॥ अक्खरपयत्थहीणं

मत्ता होंयं च जे भाणीयं। ते वेम ञ्ण
ण देवय॥ मत्त विड्ड: खरकयं दिंतु॥ ३॥
दुःखखउकम्मखय॥ समाहि मरणं च
बोहलाहोय॥ मम होउ जगत बांधव
तव जिणवर चरणसरणेण॥ ४॥ दुःख
खउ कम्मखउ॥ बोहलाहो सुगइगम
ण॥ समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति हो
उमझं॥ ५॥ इहांन मस्वो स्कारकरणं
अपाविनती॥ जोपूजै त्रैकाल जिनंद
सो पावै मरभूप आनंद॥ फेरमुकतपद
पावै सही॥ पातै जिणपूजा नरकही
१॥ जोषटकर्मप्य की भवपाप॥ सोना
सै छिनमें संताप॥ समरथ होयन पूजा
करै॥ जाकै जनम कैलंउ चूरे॥ २॥ ना
मं मंत्र सो नर भवपांय॥ पंछी ग्रेह सम
देहयराव॥ षटकर्मन सें च घउपजा
य॥ जन्ममुहारचलै दुरवपाय॥ ३॥
जिणपूजासे स्वर्गविमांण॥ अनु
क्रमपद पावै नैवाण॥ जिणपूजासे
सबसुखहोय॥ जिनपूजासे पुन्यनकोइ
जो भवजन पूजे मनलाय॥ सो पावै श्री
मुक्ति ञ्चलाय॥ करके नरभव सुखके
अपार (श्रो पावै श्री मुक्ते ञ्चलाय)॥
सो निश्चे गतेरे भवपार॥ श्रृतुमतरण
तारण भवनिवारण॥ भव्यमन आनं
दनं॥ श्रीनाभनंदन जगतवंदन आदना

पजिनेस्वरो॥ तुम आदिनाथ अन
दसेउसेवकरपूजा करूकैलासगिरु
परऋषभजिणवर॥ चरणकमल
हिरदैधरूं॥१॥ तुम अजितनाथ अ
जितेजीते॥ अष्टकर्ममहाबली इम
जाणकेमैसरण आयो॥ कृपाकीजो
नाथजी॥ तुम चंद्रवंदनसुचंद्रलछ
ण॥ चंद्राभप्रभुपरमेस्वरो॥ माथेचनं
दनजगतवंदनचंद्रनाथजिणेस्व
रो॥२॥ तुमवालबोधविवेकसागर
भव्यकमलप्रकासनं॥ श्रीनेमनाथ
पवित्रातिनकरपापतिमरविणासने
तिरातजीइराजुलराजकंन्या काम
सेन्यवसकरी॥ चारित्ररथचडभ
येदुलरासिवकसिरसुंदरवरी॥३॥
इंद्रादिजन्मअष्टानातिनकीकनक
कनकाचलथये॥ गंधर्वदेवसुरस
गायोअपछरामंगलपढे इहवि
धसुरासुरनजागीसकलसेवावि
धठई॥ तुमपार्श्वप्रभुमेरीआसपूरो।
चरनसेवामैलई॥४॥ तुमकर्मघात
मोक्षदातादिनदयालदयाकरो
सिद्धार्थनंदनजगतवंदनमहावी
रजिनेस्वरो॥ तुम अतुलमहिमासि
धसाधचक्रपावनपावही॥ तव अ
सोभोतुमदासभिनमैं॥ भक्तिहितज

॥४८॥

सुगावहौ॥५॥तुमहौभवभवस्वा
मीमेरेसदाहुंसेवकरहुं॥करजोरअ
यरदानमांगुमोछफलजाचतरहुं
छत्रतीनसोहतात्रिभुवनमोहौविन
तीअवधारियौ॥करजोडभूधर
विनवैमोरीआवागमननिवारियै
६॥इतीविनतीसंपूर्णे॥अथआ
रतीलिख्यते॥जयजयअरहंताभ
गवंतादीनदयालासंता॥चरनिवो
वाछिनआरती॥आदिनाथजय
वंता॥जयजय॥१॥दीपकलाउनि
यानिर्मल॥रतनमुक्ताफल॥जडित
रंचितहेहेमपात्र॥कापूरआतिपरि
मल॥जयजय॥२॥करूनिअभिनौ
कपंच्यामृत॥कलसभरूनिअगनि
त॥परिमलरसभरूनिगंधोदक॥ल
लिन॥भावेसहित॥जयजय॥३॥
प्रातिआरियाचिबहुसोभा॥किती
वरनुतेआभा कोटिरवीकिरनतनु
तुझे॥कोमलकर्दलीगाभा॥जयज
य॥४॥अष्टकजयमालाआनंद
कीर्तिसलनिर्मलछंद॥गाइनगु
ण॥तुझेबहुसुरसे॥नाचतीपरमान
द॥जयजय॥५॥नंदीपुरनगर॥
विराजित॥आदिनाथसाक्षात॥रा
याविनवै तुझेप्रभुतुजला॥देफल

॥४८॥

मनवांछित। जयजय॥६॥ इति
आरती॥ अथविसर्जनलि०
धन्योस्मिपुन्नानिसं निलांकिलो
स्मि। संतोष्टनिष्ठविपुदस्माविपु
दस्मदेवा। श्रीमाजिनेंद्र नयतो
हितजुग्यसरणं। प्राप्तोस्मचिंत॥
अहमिंदादीयंसुरप्यकारी। हरत
हरतबुद्धिअंधंबाधिकंकायकांत दधि
तदधितदूरंमेदितामद्विग्यतो। भ
वतनवतदूरं। ध्यायतेपापनासे
परमजिनगणाप्यौभक्तिरेकोममस्तु
ज्ञानतोज्ञानतोपापीसास्योहृतं
कृतंमयात् तत्तुसंपूर्णमेवास्तु तु
त्प्रसादः। जिनेश्वरः॥ अहज्या
नामिअहज्यानामिपूजनंविसर्ज
नंनैवज्यानामिक्षमस्यपरमेश्वरः
आहूताजेपरादेवालाब्धभागा॥
जिप्याक्रमं तेमयाविर्चितामत्तया
सर्वेयोनुजज्याक्रमं॥१॥ इतीविस
र्जनसंपूर्ण॥ ॥ ॥ अथआ
रत्याजीलिखते॥ त्रैकाल्यंद्र
व्यषट्कंनवपदसहितंजीवषट्काय
लेश्या॥ पंचाणेचास्तिकाया॥ व्रत
समितिगतिज्ञानचारित्रभेदा इत्ये
तन्मोक्षमूलंत्रिभुवनमहितैः प्रोक्त
मर्हद्भिरीशैः प्रत्येतिश्रद्धातिस्प

।४८५

यतिचमतिभानृयस्यवेमुह्हिहृदि:
॥सिद्धेजयप्पसिद्धे॥चउविहारा
हणांफलंपत्ते॥वंदिताअरहंतेवो
छो॥आराहणाकम्मसो॥भत्तजो
वणामुत्तोवरोकिंचाहणसाहणं
चणिछरणं॥दंसणणाणचरित्तं
तवाणमाराहणाभणिया॥२॥
मोक्षमार्गस्यनेतारं॥भेत्तारंकर्म्म
भूभृतां॥ज्ञातारंविश्वतत्वानां वं
देतद्गुणलब्धये॥१॥सम्यग्दर्सनज्ञा
नचारित्राणिमोक्षःमार्गः॥२॥त
त्वार्थश्रद्धानंसम्यग्दर्सनं॥३॥
तन्निसर्गादधिगमाद्वा॥४॥जीवा
जीवाश्रवबंधसंवरनिर्ज्जरामोक्षा
स्तत्वं॥५॥नामस्थापनाद्रव्यभाव
तस्तन्न्यासः॥६॥प्रमाणनयैरधिग
मः॥७॥निर्देसस्वामित्वसाधिनाधि
करणस्थितिविधानतः॥८॥सत्सं
ख्याक्षेत्रस्पर्शनकालांतरभावाल्प
बहुत्वैश्च॥९॥मतिश्रुतावधिमनः
पर्य्ययकेवलानिज्ञानं॥१०॥तत्प्र
माणे॥११॥आद्येपरोक्षं॥१२॥प्रत्य
क्षमन्यत्॥१३॥मतिःस्मृतिःसंज्ञा ।४८५
चिंताभिनिबोधइत्यनर्थांतरं॥१४॥
तदिंद्रियानिंद्रियनिमित्तं॥१५॥
अवग्रहेहावायधारणा॥१६॥

बहुबहुविधक्षिप्रानिसृतानुक्तध्रु
वाणांसेतराणां ॥१७॥ अर्थस्य ॥
१८॥ व्यंजनस्यावग्रहः ॥१९॥ नच
क्षुरनिंद्रियाभ्यां ॥ श्रुतिमतिपूर्वंद्व्य
नेकद्वादसभेदं ॥२१॥ भवप्रत्ययो
वधर्देवनारकाणां ॥२२॥ यथोक्तनि
मित्तः ॥ षड्विकल्पः शेषाणां ॥
२३॥ ऋजुविपुलमतिमनःपर्यय
२४॥ विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यांतद्विशे
षः ॥२५॥ विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषये
भ्योवधिमनःपर्यययो ॥२६॥ मति
श्रुतयोर्निबंधोद्रव्येष्वसर्वपर्याये
षु ॥२७॥ रूपिष्ववधेः ॥२८॥ तदनंतर
भागेमनःपर्ययस्य ॥२९॥ सर्वद्रव्य
पर्यायेषुकेवलस्य ॥३०॥ एकादीनि
भाज्यानियुगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः
३१॥ मतिश्रुतावधयोविपर्ययश्च ॥
३२॥ सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपल
ब्धेरुन्मत्तवत् ॥३३॥ नैगमसंग्रहव्यव
हारऋजुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभू
तानयाः ॥३४॥ ज्ञानदर्शनयोस्तत्वं
नयानांचैवलक्षणं ज्ञानस्यचप्रमा
णत्वमध्यस्मिन्निरूपितं ॥३५॥ इति
श्रीतत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रे
प्रथमोध्यायः ॥१॥ औपशमिक
क्षायिकौभावौमिश्रश्चजीवस्यस्व

स्वतत्वमौदयिकपरिणामकौ च ॥१॥ द्वि
नवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथा
क्रमं ॥२॥ सम्यक्त्वचारित्रे ॥३॥ ज्ञान
दर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि
च ॥४॥ ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्च
तुस्त्रित्रिपंचभेदाः सम्यक्त्वचा
रित्रसंयमासंयमाश्च ॥५॥ गतिक
षायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञानासंय
तासिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैके
कैकषड्भेदाः ॥६॥ जीवभव्याभव्यत्वा
नि च ॥७॥ उपयोगो लक्षणं ॥८॥ स
द्विविधोष्टचतुर्भेदः ॥९॥ संसारि
णो मुक्ताश्च ॥१०॥ समनस्कामनस्काः
॥११॥ संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥१२॥
पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः
स्थावराः ॥१३॥ द्वींद्रियादयस्त्र
साः ॥१४॥ पंचेन्द्रियाणि ॥१५॥ द्विवि
धानि ॥१६॥ निर्वृत्युपकरणे द्रव्ये
न्द्रियं ॥१७॥ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियं
॥१८॥ स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रो
त्राणि ॥१९॥ स्पर्शरसगंधवर्ण
शब्दास्तदर्थाः ॥२०॥ श्रुतमनिंद्रि
यस्य ॥२१॥ वनस्पत्यंतानामेकं ॥२२॥
कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीना
मेकैकवृद्धानि ॥२३॥ संज्ञिनः समन
स्काः ॥२४॥ विग्रहगतौ कर्मयोगः

२५।अनुश्रेणिगति।२६।अविग्र
हाजीवस्य।२७।विग्रहवतीच
संसारिणः।प्राकूचतुर्भ्यः।२८।एक
समयाविग्रहा।२९।एकंद्वौत्रीन्वा
नाहारकः।३०।सम्मूर्छनगर्भोप
पादाज्जन्म।३१।सचित्तशीतसं
वृता।सेतरामिश्राश्चैकशस्तद्यो
नय।३२।जरायुजांडजपोतानां
गर्भः।३३।~~औदारिकवैक्रियिक~~
~~आहारकतैजसकार्म्मणानिशरीराणि~~
देवनारकाणामुपपादः।३४।शेषा
णांसम्मूर्छनं।३५।औदारिकवैक्रि
यकाहारकतैजसकार्म्मणानिशरी
राणि।३६।परंपरंसूक्ष्मं।३७।प्र
देशतोसंख्येयगुणंप्राक्तैजसात्
अनंतगुणेपरे।३८।अप्रतिघाते
४०।अनादिसंबंधेच।४१।सर्वस्य
४२।तदादीनिभाज्यानियुगपदे
कस्याचतुर्भ्यः।४३।निरुपभोगमंत्यं
४४।गर्भसम्मूर्छनजमाद्यं।औप
पादिकंवैक्रियिकं।४६।लब्धिप्रत्य
यंच।४७।तैजसमपि।४८।शुभवि
शुद्धमव्याघातिचाहारकंप्रमत्तसं
यतस्यैव।४९।नारकसम्मूर्छिनो
नपुंसकानि।५०।नदेवा।५१।शे
षास्त्रिवेदाः।५२।औपपादिकचरमोत्त

मदेहा संख्येयवर्षायुषोनपवर्त्यो
युषः ५३ इति तत्वार्थाधिगमे मो
क्षशास्त्रे द्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥ ॥
रत्नशर्करावालुकापंकधूमतमोमहा
तमः प्रभाभूमयो घनांबुवाताकाशप्र
तिष्ठाः सप्ताधोधः ॥ १ ॥ तासुत्रिंशत्पं
चविंसतिपंचदशदशत्रिपंचोनैक
नरकसतसहस्राणि पंच चैव यथा
क्रमं ॥ २ ॥ नारका नित्याशुभतरले
श्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः
३ परस्परोदीरितदुःखाः ४ संक्लिष्टा
सुरोदीरितदुःखाश्च प्राक्चतुर्थ्याः
५ तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वावि
सतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्वा
नां परा स्थितिः ६ द्विर्द्विर्विष्कंभाः
पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः
८ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशत
सहस्रविष्कंभो जंबूद्वीपः ९ ॥ भर
तहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्य
वतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥ १० ॥ तद्विभा
जिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहि
मवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो
वर्षधरपर्वताः ॥ ११ ॥ हेमार्जुनत
पनीयवैडूर्यरजतहेममयाः ॥ १२
मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च
तुल्यविस्ताराः ॥ १३ ॥ पद्ममहापद्मतिगि

जंबूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ७

क्मकेशरिमहापुंडरीकपुंडरीका ह्रदा
स्तेषामुपरि ॥ १४ ॥ प्रथमो योजनसह
स्त्रायामस्तदर्द्धविष्कंभो ह्रदः ॥ १५
दशयोजनावगाह ॥ १६ ॥ तन्मध्ये यो
जनं पुष्करं ॥ १७ ॥ तद्द्विगुणाद्विगुणा
ह्रदाः पुष्कराणि च ॥ १८ ॥ तन्निवा
सीन्यो देव्यः ॥ श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धि
लक्ष्म्याः ॥ पल्योपमस्थितय ॥ ससा
मानिकपरिषत्का ॥ १९ ॥ गंगासिंधु
रोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकांतासी
तासीतोदानारीनरकांतासुवर्णरू
प्यकूलारक्तारक्तोदासरितन्मध्यगा
२० ॥ द्वयोर्द्वयोः ॥ पूर्वापूर्वगाः ॥ २१ ॥ शेषा
स्त्वपरगाः ॥ २२ ॥ चतुर्दशनदीसहस्र
परिवृता गंगासिंध्वादयो नद्यः ॥ २३
भरतः ॥ षड्विंशतिपंचयोजनशत
विस्तारः ॥ षट् चैकोनविंसतिभागा
योजनस्य ॥ २४ ॥ तद्द्विगुणाद्विगुणावि
स्तारावर्षधरवर्षाविदेहांता ॥ २५ ॥
तद्द्विगुणाद्विगुणा विस्तारा वर्षधर
वर्षाविदेहांता ॥ २५ ॥ उत्तरादक्षिण
तुल्याः ॥ २६ ॥ भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ
षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पि
णीभ्यां ॥ २७ ॥ ताभ्यामपराभूमयो
वस्थिता ॥ २८ ॥ एकद्वित्रिपल्योपम
स्थितयो हैमवतकहारिवर्षकदेव

कुरुवकाः ॥२९॥ तयोत्तरा ॥३०॥ वि
देहेषु संख्येयकाला ॥३१॥ भरतस्य वि
ष्कंभो जंबूद्वीपस्य नवति शतिभागः
३२ द्विर्धातकीखंडे ॥३३॥ पुष्करार्द्धे च
३४ प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्या ॥३५
आर्याम्लेच्छाश्च ॥३६॥ भरतैरावत
विदेहाः कर्मभूमयोन्यत्र देवकुरू
त्तरकुरुभ्यः ॥३७॥ नृस्थितीपरावरे
त्रिपल्योपमांतर्मुहूर्ते ॥३८॥ तिर्यग्यो
निजानां च ॥३९॥ इति तत्वार्था
धिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोध्या
यः ॥३॥ देवाश्चतुर्णिकायाः ॥१॥
आदितस्त्रिषु पीतांतलेश्या ॥२
दशाष्टपंचद्वादसविकल्पाः कल्पो
पन्नपर्यंताः ॥३॥ इंद्रसामानिकत्राय
स्त्रिंशत्पारिषदात्मरक्षलोकपाला
नीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषि
काश्चैकशः ॥४॥ त्रायस्त्रिंसल्लोक
पालवर्ज्या व्यंतरज्योतिष्काः ॥५॥ पू
र्वयोर्द्वींद्राः ॥६॥ कायप्रवीचारा आ
ऐशनात् ॥७॥ शेषाः स्पर्सरूपशब्द
मनःप्रवीचाराः ॥८॥ परेप्रवीचाराः
॥९॥ भवनवासिनोसुरनागविद्यु
त्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीप
दिक्कुमाराः ॥१०॥ व्यंतराः किंनरकिं
पुरुषमहोरगगंधर्वयक्षराक्षस

भूतपिसाचाः॥१२ ज्योतिष्काः सूर्या
श्चंद्रमसोग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारका
श्च॥१२ मेरुप्रदक्षिणानित्यगति
योनृलोके॥१३ तत्कृतः कालविभा
गः॥१४ बहिरवस्थिताः॥१५ वैमानि
काः॥ कल्पोपन्नाः कल्पातीताश्च॥ उप
र्युपरि॥१६ सौधर्मैशानसनत्कुमा
रमाहेंद्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलांतवकापि
ष्टशुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेष्वा
नतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसुग्रे
वेयकेषुविजयवेजयंतजयंतापरा
जितेषुसर्वार्थसिद्धौच॥१७ स्थिति
प्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धींद्रि
यावधिविषयतोधिकाः॥१८ गति
शरीरपरिग्रहाभिमानतोहीनाः॥१९
पीतपद्मशुक्ललेश्याद्वित्रिशेषेषु॥२०
प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः॥२१ ब्रह्म
लोकालया लौकांतिकाः॥२२ सारस्व
तादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिता
व्याबाधारिष्टाश्च॥२३ विजयादि
षुद्विचरमाः॥२४ औपपादिकमनुष्येभ्यः
शेषास्तिर्यग्योनयः॥२५ स्थितिरसु
रनागसुपर्णद्वीपशेषाणांसागरोपम
त्रिपल्योपमार्द्धहीनमिताः॥२६ सौध
र्मैशानयोःसागरोपमेधिके॥२७
सानत्कुमारमाहेंद्रयोःसप्त॥२८ त्रिस

प्रनवैकादसत्रयोदशपंचदशभिरधि
कानि तु ॥ २९ ॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैके
न नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसि
द्धौ च ॥ ३० ॥ परा पल्योपममधिकं ॥ ३१ ॥ पर
तः परतः पूर्वापूर्वानंतरा ॥ ३२ ॥ नारका
णां च द्वितीयादिषु ॥ ३३ ॥ दसवर्षसहस्रा
णि प्रथमायां ॥ ३४ ॥ भावनेषु च ॥ ३५ ॥ व्यं
तराणां च ॥ ३६ ॥ परा पल्योपममधिकं ॥ ३७
ज्योतिष्काणां च ॥ ३८ ॥ तदष्टभागोऽपरा
॥ ३९ ॥ लौकांतिकानामष्टौ सागरोपमा
णि सर्वेषां ॥ ४० ॥ इति तत्वार्थाधिग
मे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥
अजीवकाया धर्माधर्माकाश
पुद्गला ॥ १ ॥ द्रव्याणि ॥ २ ॥ जीवाश्च ॥ ३ ॥
नित्यावस्थितान्यरूपाणि ॥ ४ ॥ रू
पिणः पुद्गला ॥ ५ ॥ आ आकाशादेक
द्रव्याणि ॥ ६ ॥ निष्क्रियाणि च ॥ ७ ॥ अ
संख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजी
वानां ॥ ८ ॥ आकाशस्यानंता ॥ ९ ॥ संख्ये
यासंख्येयाश्च पुद्गलानां ॥ १० ॥ ना
णोः ॥ ११ ॥ लोकाकाशेऽवगाहः ॥ १२ ॥ ध
र्माधर्मयोः कृत्स्ने ॥ १३ ॥ एकप्रदेशा
दिषु भाज्यः पुद्गलानां ॥ १४ ॥ असंख्ये
यभागादिषु जीवानां ॥ १५ ॥ प्रदेशसंहा
रविसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ॥ १६ ॥ गतिस्थि
त्युपग्रहो धर्माधर्मयोरुपकारः ॥ १७

आकासस्यावगाहः ॥ १८ ॥ सरीरवा
ङ्मनः प्राणापानापुद्गलानां ॥ १९
सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च
॥ १९ ॥ परस्परोपग्रहो जीवानां ॥ २०
वर्तनापरिणामक्रियापरत्वापरत्वे
च कालस्य ॥ २१ ॥ स्पर्सरसगंधवर्ण
वंत पुद्गला ॥ २२ ॥ शब्दबंधसौक्ष्मस्थौ
ल्यसंस्थानभेदतमश्छायातपोद्योत
वंतश्च ॥ २३ ॥ अणवः स्कंधाश्च ॥ २४
भेदसंघातेभ्य उत्पद्यंते ॥ २५ ॥ भेदा
दणु ॥ २६ ॥ भेदसंघाताभ्यां चाक्षुष
२७ ॥ सद्द्रव्यलक्षणं ॥ २८ ॥ उत्पादव्य
य ध्रौव्ययुक्तं सत् ॥ २९ ॥ तद्भावाव्यं
नित्यं ॥ ३० ॥ अर्पितानर्पितासिद्धे
३१ ॥ स्निग्धरूक्षत्वाद्बंध ॥ ३२ ॥ न ज
घन्यगुणानां ॥ ३३ ॥ गुणसाम्ये सदृ
सानां ॥ ३४ ॥ द्व्यधिकादिगुणानां तु ३५
बंधेधिकौ पारिणामिकौ च ॥ गुणपर्यय
वद्द्रव्यं ॥ ३६ ॥ कालश्च ॥ ३७ ॥ सोनंतस
मयः ॥ ३८ ॥ द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणा
३९ ॥ तद्भावः परिणाम ॥ ४० ॥ इति
तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पंच
मोध्यायः ॥ ॥ ५ ॥ ॥ कायवा
ङ्मनःकर्म योगः ॥ १ ॥ स आस्रव ॥ २
शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ॥ ३ ॥ स
कषायाकषाययोः सांपरायिकेर्या

५८

पथयो ॥ ४ ॥ इंद्रियकषायाव्रतक्रियापं
चचतुः पंचपंचविंसतिसंख्याः पूर्वस्य
भेदाः ॥ ५ ॥ तीव्रमंदज्ञातभावाधिकरण
वीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः ॥ ६ ॥ अधि
करणंजीवाजीवाः ॥ ७ ॥ आद्यंसंरंभसंमारंभा
योगकृतकारितानुमतकषायविशे
षैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥ ८ ॥ निर्वर्त्त
नानिक्षेपसंयोगनिसर्गाद्विचतुर्द्वि
त्रिभेदाःपरं ॥ ९ ॥ तत्प्रदोषनिह्नवमा
त्सर्यांतरायासादनोपघाताज्ञानद
र्शनावरणयोः ॥ १० ॥ दुःखशोकतापा
क्रंदनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभ
यस्थान्यसद्वेद्यस्य ॥ ११ ॥ भूतव
त्यनुकंपादानसरागसंयमादियो
गः क्षांतिः शौचमितिसद्वेद्यस्य ॥ १२
केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादोद
र्शनमोहस्य ॥ १३ ॥ कषायोदयात्तीव्र
परिणामश्चारित्रमोहस्य ॥ १४ ॥ बह्वा
रंभपरिग्रहत्वंनारकस्यायुषः ॥ १५
मायातैर्यग्योनस्य ॥ १६ ॥ अल्पारंभ
परिग्रहत्वंमानुषस्य ॥ १७ ॥ स्वभाव
मार्दवत्वंच ॥ १८ ॥ निःशीलव्रतत्वं
चसर्वेषां ॥ १९ ॥ सरागसंयमासंय
माकामनिर्जराबालतपांसिदैव
स्य ॥ २० ॥ सम्यक्त्वंच ॥ २१ ॥ योगव
क्रताविसंवादनंचाशुभस्यनाम्नः ॥ २२

॥ ५८

तद्विपरीतंशुभस्य ॥२३॥ दर्शनविशुद्धि
र्विनयसंपन्नताशीलव्रतेष्वनतीचा
रोभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौशक्ति
तस्त्यागतपसीसाधुसमाधिर्वैयावृ
त्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रव
चनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मा
र्गप्रभावनाप्रवचनवात्सल्यत्वमि
तितीर्थंकरत्वस्य ॥२४॥ परात्मनिं
दाप्रशंसेसदसद्गुणोच्छादनोद्भावनेच
नीचैर्गोत्रस्य ॥२५॥ तद्विपर्ययो
नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौचोत्तरस्य ॥२६॥
विघ्नकरणमंतरायस्य ॥२७॥ इति
तत्त्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेषष्ठो
ध्यायः ॥ ॥६॥ ॥ हिंसानृतस्ते
याब्रह्मपरिग्रहेभ्योविरतिर्व्रतं ॥१॥ देश
सर्वतोणुमहती ॥२॥ तत्स्थैर्यार्थं
भावनाःपंचपंच ॥३॥ वाङ्मनोगुप्ती
र्यादाननिक्षेपणसमित्यालोकितपान
भोजनानिपंच ॥४॥ क्रोधलोभभीरुत्व
हास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचीभाषणं
चपंच ॥५॥ शून्यागारविमोचितावा
सपरोपरोधाकरणभैक्ष्यशुद्धिसद्धर्मा
विसंवादाःपंच ॥६॥ स्त्रीरागकथाश्रव
णतन्मनोहरांगनिरीक्षणपूर्वरतानु
स्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कार
त्यागाःपंच ॥७॥ मनोज्ञामनोज्ञेंद्रिय

विषयरागद्वेषवर्जनानि पंच ॥ ८ ॥ हिंसा
दिष्विहामुत्रापायावद्यदर्सनं ॥ ९ ॥
दुःखमेव वा ॥ १० ॥ मैत्रीप्रमोदकारुण्यमा
ध्यस्थानि च सत्वगुणाधिकक्लिश्य
मानाविनयेषु ॥ ११ ॥ जगत्कायस्व
भावौ वा संवेगवैराग्यार्थं ॥ १२ ॥ प्रम
त्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ॥ १३ ॥
असदभिधानमनृतं ॥ १४ ॥ अदत्ता
दानं स्तेयं ॥ १५ ॥ मैथुनमब्रह्म ॥ १६ ॥ मू
र्छा परिग्रहः ॥ १७ ॥ निःसल्यो व्रती
॥ १८ ॥ अगार्यनगारश्च ॥ १९ ॥ अणुव्र
तोगारी ॥ २० ॥ दिग्देशानर्थदंडविर
तिसामायिकप्रोषधोपवासोपभोग
परिभोगपरिमाणातिथिसंविभाग
व्रतसंपन्नश्च ॥ २१ ॥ मारणांतिकीं सल्ले
खनां जोषिता ॥ २२ ॥ शंकाकांक्षाविचि
कित्सान्यदृष्टिप्रसंसासंस्तवाः स
म्यग्दृष्टेरतीचाराः ॥ २३ ॥ व्रतशीलेषु प
चपंच यथाक्रमं ॥ २४ ॥ बंधवधछेदा
तिभारारोपणान्नपाननिरोधाः ॥ २५ ॥
मिथ्योपदेसरहोभ्याख्यानकूटलेख
क्रियान्यासापहारसाकारमंत्रभेदाः
॥ २६ ॥ स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरु
द्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मा
नप्रतिरूपकव्यवहाराः ॥ २७ ॥ परवि
वाहकरणेत्वरिकापरिगृहीतापरि

ग्रहीतागमनानंगक्रीडाकामती
व्राभिनिवेसाः ॥२८॥ क्षेत्रवास्तुहि
रण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकु
प्यभांडप्रमाणातिक्रमाः ॥२९॥ ऊर्द्ध्वा
धस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यं
तराधानानि ॥३०॥ आनयनप्रेष्य
प्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः
॥३१॥ कंदर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमी
क्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थ
क्यानि ॥३२॥ योगदुःप्रणिधानाना
दरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥३३॥ अप्र
त्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादानसं
स्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्था
नानि ॥३४॥ सचित्तसंबंधसन्मिश्रा
भिषवदुःपक्वाहाराः ॥३५॥ सचित्तनि
क्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्य
कालातिक्रमाः ॥३६॥ जीवितमरणा
संसामित्रानुरागसुखानुबंधनिदा
नानि ॥३७॥ अनुग्रहार्थं स्वस्याति
सर्गोदानं ॥३८॥ विधिद्रव्यदातृ
पात्रविशेषात्तद्विशेषः ॥३९॥
इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशा
स्त्रे सप्तमोध्यायः ॥७॥ ७ ॥
मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादक
षाययोगाः ॥ बंधहेतवः ॥१॥ सकषा
यत्वाज्जीवाः कर्म्मणो योग्या

॥५६॥

न्पुद्गलानादत्ते स बंधः ॥२॥ प्रकृतिस्थि
त्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ॥३॥ आद्यो
ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनी
यायुर्नामगोत्रांतरायाः ॥४॥ पंच
नव द्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्वि ॥ चत्वारिंश
द्विपंचभेदा यथाक्रमं ॥५॥ मतिश्रुता
वधिमनःपर्ययकेवलानां ॥६॥ चक्षु
रचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानि
द्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्या
नगृद्धयश्च ॥७॥ सदसद्वेद्ये ॥८॥ दर्श
नचारित्रमोहनीयाकषायकषा
यवेदनीयाख्याः ॥ त्रिद्विनवषोडश
भेदाः ॥ सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्य
कषायकषायौ हास्यरत्यरतिशो
कभयजुगुप्सा स्त्रीपुंनपुंसकवेदाः ॥
अनंतानुबंधप्रत्याख्यानप्रत्याख्या
नसंज्वलनाश्च विकल्पाश्चैकशः क्रो
धमानमायालोभाः ॥९॥ नारकतैर्यग्यो
निमानुषदैवानि ॥१०॥ गतिजातिशरी
रांगोपांगनिर्माणबंधनसंघातसं
हननसंस्थानस्पर्शरसगंधवर्णानु
पूर्व्यागुरुलघूपघातपरघातात
पोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येक
शरीरत्रसशुभगसुस्वरशुभसूक्ष्म
पर्याप्तिस्थिरादेययशःकीर्तिसेतरा
णि तीर्थंकरत्वं च ॥११॥ उच्चैर्नीचैश्च

१२ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणि
च ॥१३॥ आदितस्तिसृणामंतराय
स्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः
परा स्थितिः ॥१४॥ सप्ततिर्मोहनी
यस्य ॥१५॥ विंशतिर्नामगोत्रयोः
॥१६॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्या
युषः ॥१७॥ अपरा द्वादशमुहूर्ता वेद
नीयस्य ॥१८॥ नामगोत्रयोरष्टौ ॥१९॥
शेषाणामंतर्मुहूर्ता ॥२०॥ विपाको
नुभवः ॥२१॥ स यथानाम ॥२२॥ ततश्च
निर्ज्जरा ॥२३॥ नामप्रत्ययाः सर्वतो
योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाह
स्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनंतानं
तप्रदेशाः ॥२४॥ सद्वेद्यशुभायुर्ना
मगोत्राणि पुण्यं ॥२५॥ अतोन्यत्पा
पं ॥२६॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मो
क्षशास्त्रेऽष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥
आश्रवनिरोधः संवरः ॥१॥ स गुप्तिस
मितिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचा
रित्रैः ॥२॥ तपसा निर्ज्जरा च ॥३॥ स
म्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ॥४॥ ईर्याभा
षैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितिः
॥५॥ उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्य
शौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्र
ह्मचर्याणि धर्मः ॥६॥ अनित्याश
रणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्याश्रवसंवर

॥५७॥ निर्जरालोकबोधि॥ दुर्लभधर्मस्वा
ख्यातत्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षा॥७
मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढ
व्याः परीषहाः॥८॥ क्षुत्पिपासाशीतो
ष्णदंसमसकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्या
निषद्याशय्याक्रोशवधयाचनाला
भरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्का
रप्रज्ञाज्ञानादर्शनानि॥९॥ सूक्ष्मसं
परायछद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश
१०॥ एकादसजिने॥११॥ बादरसंपरा
येसर्वे॥१२॥ ज्ञानावरणेप्रज्ञाज्ञाने॥१३
दर्शनमोहांतराययोरदर्शनालाभौ
१४॥ चारित्रमोहेनाग्न्यारतिस्त्रीर्या मा
घनिषद्याक्रोशयाचनासत्कारपुर
स्कार॥१५॥ वेदनीयेशेषाः॥१६॥ एका
दयो॥ भाज्यायुगपदेकस्मिन्नेकोनविं
शति॥१७॥ सामायिकछेदोपस्थाप
नापरिहारविसुद्धिसूक्ष्मसांपराययथ
ाख्यातमितिचारित्रं॥१८॥ अनशना
वमोदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरि
त्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा
बाह्यंतपः॥१९॥ प्रायश्चित्तविनयवैया
वृत्त्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरं ॥५
२०॥ नवचतुर्दशपंचद्विभेदायथा
क्रमंप्राग्ध्यानात्॥२१॥ आलोचनप्रति
क्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतप

च्छेदपरिहारोपस्थापनाः ॥ २२ ॥ ज्ञा
नदर्सनचारित्रोपचाराः ॥ २३ ॥ आ
चार्योपाध्यायतपस्विशैक्षग्ला
नगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानां
२४ ॥ वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नाय
धर्मोपदेसाः ॥ २५ ॥ वाह्याभ्यंतरो
पध्योः ॥ २६ ॥ उत्तमसंहननस्यैका
ग्रचिंतानिरोधो ध्यानमांतमुहूर्ता
त् ॥ २७ ॥ आर्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि ॥ २८
परेमोक्षहेतू ॥ २९ ॥ आर्तममनोज्ञ
स्यसंप्रयोगतद्विप्रयोगाय स्मृति
समन्वाहारः ॥ ३० ॥ विपरीतंमनोज्ञ
स्य ॥ ३१ ॥ वेदनायाश्च ॥ ३२ ॥ निदानं
च ॥ ३३ ॥ तदविरतिदेशविरतिप्रमत्त
संयतानां ॥ ३४ ॥ हिंसानृतस्तेयवि
षयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतिदेश
विरतियोः ॥ ३५ ॥ आज्ञापायविपाक
संस्थानविचयाय धर्म्यं ॥ ३६ ॥ शुक्ले
चाद्ये पूर्वविदः ॥ ३७ ॥ परेकेवलिनः ॥ ३८
पृथक्त्वैकत्ववितर्कविचारसूक्ष्मक्रि
याप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्तनी
३९ ॥ त्र्येकयोगकाययोगयोगानां
४० ॥ एकाश्रयेसवितर्कवीचारेपू
र्वे ॥ ४१ ॥ अविचारंद्वितीयं ॥ ४२
वितर्कः श्रुतं ॥ ४३ ॥ विचारोऽर्थव्यं
जनयोगसंक्रांति ॥ ४४ ॥ सम्यग्दृष्टि

श्रावकविरतोनंतवियोजकदर्शनमो
हक्षपकोपसमकोपशांतमोहक्ष
पकक्षीणमोहजीनां ॥४५॥ क्रमसोसं
ख्येयगुणनिर्ज्जरा ॥४६॥ पुलाकब
कुसकुशीलनिर्ग्रंथस्नातका निर्ग्रंथा
४७॥ संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थ
लिंगलेश्योपपादस्थानविकल्पतः
साध्या ॥४८॥ इति तत्त्वार्थाधिग
मे मोक्षशास्त्रे नवमोध्यायः ९
मोहक्षयात् ज्ञानदर्शनावरणांत
रायक्षयाच्च केवलं १ बंधहेत्वभा
वनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो
मोक्षः २ उपसमिकादिभव्यत्वा
नां च ३ अन्यत्र केवलसम्यक्त्व
ज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्यः ४ तदनंत
रमुर्द्धं गछत्यालोकांतात् ५ पूर्व
प्रयोगादसंगत्वाद्बंधछेदात्तथा
गतिपरिणामाच ६ आविद्धकुला
लचक्रवद्व्यपगतलेपालाबुवदेरं
डबीजवदग्निशिखावच्च ७ ध
र्मास्तिकायाभावात् ॥८॥ क्षेत्र
कालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्ये
कबुधबोधितज्ञानावगाहनांतरसं
ख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥९॥
इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे
दशमोध्यायः ॥ १० ॥ ० ॥

अक्षरमात्रपदस्वरहीनं व्यंजनसं
धिविवर्जितरेफं॥ साधुभिरत्र म
म क्षमितव्यं कोन विमुह्यति शा
स्त्रसमुद्रे॥१॥ दशाध्याये परिछिदे
तत्वार्थे पठते सति॥ फलं स्यादुप
वासस्य॥ भाषितं जिनपुंगवैः॥२
तत्वार्थसूत्रकर्त्तारं गृधपिछो
पलक्षितं॥ वंदे गणींद्रसंजातमुस्वा
मिमुनिस्वरं॥३॥ जं सक्के इतं कीरइ
जं च ण सक्केइ तहेव सद्दहणं सद्दह
माणो जीवो पावइ अजरामरं ठाणं
४॥ तवयरणं वयधरणं॥ संयमस
रणं जीवदयाकरणं॥ अंते समाहि
मरणं चउगइदुःखं णिवारेइ॥५॥ पढ
मचउक्के पढमं पंचमए जाण पुग्गलं
तच्चं छहसत्तमेसु आसव बंध
मेवं धम्माय बौ॥६॥ णवमे संवरणि
ज्जरदसमे मोक्खं वियाणेऊइ यस
त्ततच्चं भणियं तिणापरणं तं तु दह
सुत्तेसु॥७॥ इति तत्वार्थसूत्रं सं
पूर्णं॥ अथ सहस्रनाम लिख्यते
ॐ प्रसिद्धाष्टसहस्रेद्धलक्षणं त्वां
गिरांपतिं॥ नाम्नामाष्टसहस्रेण तो
ष्टमोभिष्टासिद्धये॥१॥ श्रीमान्स्वयं
भूर्वृषभः संभवः शंभुरात्मभूः स्व
यंप्रभः प्रभुर्भोक्ता॥ विश्वभूरपुनर्भ

व: ॥२॥ विश्वात्माविश्वलोकेशो
विश्वत:चक्षुरक्षर: ॥ विश्वविद्वि
श्वविद्येशोविश्वयोनिरनीश्वर:
३॥ विश्वदृश्वाविभुर्धातागविश्वेशो
विश्वलोचन: ॥ विश्वव्यापीविधि
र्वेधा ॥ शाश्वतोविश्वतोमुख: ॥४॥
विश्वकर्म्माजगज्जेष्ठो विश्वमूर्ति
जिनेश्वर: ॥ विश्वदृक विश्वभूतेषा
विश्वज्योतिरनीश्वर: ॥५॥ जिनेजि
ष्णुरमेयात्मा ॥ विष्णुरिशोजगत्प
ति: ॥ अनंतचिदचिंत्यात्मा भव्य
बंधुरबंधन: ॥६॥ युगादिपुरुषोब्र
ह्म ॥ पंचब्रह्ममय: शिव: ॥ परःपत
रसुक्ष्म ॥ परमेष्ठीसनातन ॥७॥
स्वयंज्योतिरजोजन्माब्रह्मयोनिर
योनिज: ॥ मोहारी विजयीजेता ॥ ध
र्मचक्री दयाध्वज ॥८॥ प्रशांतारि
रनंतात्मा ॥ योगी योगेश्वरार्चित:
ब्रह्मविद्ब्रह्मतत्वज्ञो ॥ ब्रह्मोद्यावि
यतीश्वर: ॥९॥ शुद्धोबुद्धप्रबुद्धात्मा
सिद्धार्थो ॥ सिद्धशासन: ॥ सिद्ध: सि
द्धांतविद्धेय: ॥ सिद्धसाध्योजगद्धित:
१० ॥ सहिष्णुरचितोनंत: ॥ प्रभाविष्णु
र्भवद्भव: ॥ प्रभो हरोजरोजर्यो भ्रा
जिष्णोविश्वरोव्यय ॥११॥ भिविभा
वसुरसंभूस्नु ॥ स्वयंभूष्णु पुरातन:

परमात्मा परंज्योतिस्त्रिजगत्परमे

श्वरः ॥ १२ ॥ इतिश्रीमन्स्मतं ॥ २ ॥ दि

व्यभाषापतिर्दिव्यः पूतवाक् पुतशा

सनः ॥ पुतात्मापरमंज्योति ॥ धर्मा

ध्यक्षोदमीश्वरः ॥ १३ ॥ श्रीपतिर्भग

वानूनर्हन्नरजाविरजाःशुचिः ॥ तिर्थ

कृतकेवलीशानः पूजार्हस्नातको

मलः ॥ १४ ॥ अनंतदीप्तिर्ज्ञानात्मा ॥

स्वयंबुद्धिप्रजापतिः ॥ मुक्तःशक्तो

निराबाधोनिष्कलः ॥ भूवनेश्वरः

१५ ॥ निरंजनजगज्योतिः ॥ निरोक्तो

क्तिनिरामयो ॥ अचलस्थितिरक्षो

भ्यो ॥ कुटस्तस्थानुरक्षय ॥ १६ ॥ अग्र

णिग्रामणिर्नेता ॥ प्रणेता न्यायना

स्त्रकृत् ॥ शास्ता धर्मपतिर्धर्मो

धर्मात्माधर्मतीर्थकृत ॥ १७ ॥ वृ

षध्वज वृषाधीशो ॥ वृषकेतुवृषा

युधः ॥ वृषः वृषः पतिर्भर्तावृषभांको

वृषोद्भवः ॥ १८ ॥ हिरण्यनाभिभूता

त्माभुतभृद्भुतभावनः ॥ प्रभवोवि

भवोभाश्वान् भवभावोभवांतकः ॥

१९ ॥ हिरण्यगर्भश्रीगर्भ ॥ प्रभुतो

विभवोद्भवः ॥ स्वयंप्रभुप्रभुतात्मा

भूतनाथोजगत्प्रभु ॥ २० ॥ सर्वादिस

र्वदृक्सर्वः ॥ सर्वज्ञः सर्वदर्शनः ॥ स

र्वात्मासर्वलोकेशुसर्ववित्सर्वलोक

जित॥२१॥सुगतिः कृतकृतः सुश्रुत
सुवाक्सुखदृश्वनः॥विश्रुतः विश्व
तःपादो विश्वशीर्षः शुचिश्रव॥२२
सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सह
स्रपात्॥भूतभव्यभवद्भर्ता विश्ववि
द्यामहेश्वरः॥२३॥इति श्री दिव्या
शतं॥४॥स्थविष्टः स्थविरोज्ये
ष्टः॥प्रष्टः प्रेष्टः वरिष्ठधी॥स्थेष्टो
गरिष्ठो बंहिष्ठः श्रेष्ठो निष्ठो गरिष्ठ
गीः॥२४॥विश्वभृद्विश्वसृड्विश्वेट्
विश्वभुग्विश्वनायकः॥विश्वासी
विश्वरूपात्मा॥विश्वजिद्विजि
तांतकः॥२५॥विभवो विभयो वि
रो विशोको विजरो जरन्॥विरागो
विरतो संगो विविक्तो वीतमत्सरः
२६॥विनेयजनता बंधु॥विलीन
नाशेषकल्मषः॥वियोगो योगवि
द्विद्वान्॥विधाता सुविधीः सुधी॥
२७॥क्षांतिभाक्पृथ्वीमूर्ति॥
शांत[illegible]भाक्सलिलात्मकः॥
वायुमूर्तिरसंगात्मा॥वन्हीमूर्ति
रधर्मधीक्॥२८॥सुयज्वा यजमा
नात्मा॥सुत्वा सुत्रामपूजितः ऋत्वि
ग्यज्ञपतिर्यज्ञो यज्ञांगममृतं ह
वि॥२९॥व्योममूर्तिरमूर्तात्मा
निर्लेपो निर्मलोचलः॥सोममूर्तिर

सोम्यात्मा ॥ सूर्यमूर्तिमहांप्रभः
२० ॥ मंत्रकृन्मंत्रविन्मंत्री मंत्र
मूर्तिरनंतकः ॥ स्वतंत्रतंत्रकृत्
स्वांतः ॥ कृतांतः कृतांतकृत् ॥ २१
कृति कृतार्थसत्कृत्य कृतकृत्य
कृतक्रतुः ॥ नित्यमृत्युंजयोमृत्यु
रमृतात्मामृतोद्भवः ॥ २२ ॥ ब्रह्म
निष्ठ परब्रह्मः ॥ ब्रह्मात्मा ब्रह्मसं
भवः महाब्रह्मपतिर्ब्रह्मेड् महाब्र
ह्मपदेश्वरः ॥ २३ ॥ सुप्रसन्नप्रसे
न्नात्मा ॥ ज्ञानधर्मदमप्रभुः ॥ प्र
सन्नात्माप्रसतात्मा पुराणपुरु
षोत्तमः ॥ २४ ॥ इति स्थविष्ठश
तं ॥ ३ ॥ महाशोकध्वजशोकः ॥ कः
श्रेष्ठापद्मविष्टरः ॥ पद्मेसपद्मसं
भूति ॥ पद्मनाभिरनुत्तरः ॥ २५
पद्मयोनिर्जगद्योनिरित्युस्तुत्य
स्तुतीश्वरः ॥ स्तवनार्हो हृषीकेशो
जितजेय कृतः क्रियो ॥ २६ गणाधि
पोगणज्येष्ठो ॥ गण्यपुण्यगणा
ग्रणी ॥ गुणाकारो गुणांभोधि ॥ गुण
ज्ञगुणनायकः ॥ २७ ॥ अगण्य
पुण्यधीर्गुण्यः ॥ पुण्यकृत्पुण्य
शासनाः ॥ धर्मारामगुणग्रामः ॥ पु
ण्यपुण्यनिरोधकः ॥ २८ ॥ पापा
पेतो विपापात्मा विपात्मा वितकल्म

६१

धाः॥ निर्द्वंद्वो निर्म्मदः शांतो निर्मो
हो निरुपद्रव ॥ ७०॥ निर्निमेषो नि
राकारो निष्क्रियो निरुपाश्रयः
निःकलंको निरस्तैनो निर्धूतांगो
निरास्रवः॥ ७१॥ विशालं विपुलं
ज्योतिरतुलो चिंत्यवैभवः सुसं
वृतः सुगुप्तात्मा सुभृत्सुनयतत्
त्ववित्॥ ७२॥ एकविद्यो महाविद्यो
मुनिः परिवृढः पतिः॥ धिशो विद्या
निधिः साक्षी विनेता विहितांत
कः॥ ७३॥ पिता पितामहः पाता
पवित्रः पावनो गतिः॥ त्राताभिष
ग्वरो वर्यो॥ वरदः परमः पुमान्
॥ ७४॥ कवि पुराणपुरुषः॥ वर्षि
यान्वृषभः पुरुः॥ प्रतिष्ठाप्रभवो
हेतुर्भुवनैकपितामहो॥ ७५॥ इति
महाशते॥ ६॥ श्रीवृक्षलक्षणः
श्लक्ष्णलक्षण्य शुभलक्षणः॥
निरक्षः पुंडरीकाक्षः॥ पुष्कलः पुष्क
रेक्षणः॥ ७६॥ सिद्धिदः सिद्ध
संकल्प॥ सिद्धात्मा सिद्धशासनः
बुद्धबोध्यो महाबोधी॥ वर्धमा
नमहर्द्धिकः॥ ७७॥ वेदांगो वेदवि
द्वेद्यो॥ जातरूपो विदांवरः॥ वेदवि
द्योस्वयंविद्यो विवेद्यो वदतांवरः
॥ ७८॥ अनादिनिधनो व्यक्तो व्य

त्कवाग्व्यक्तनुशासन ॥ युगादिः
युगाधारो ॥ युगादिर्जगदादिजः
४९ ॥ अतींद्रो तींद्रो धींद्रो म
हींद्रोतिंद्रीयार्थदृक् ॥ अनिंद्रि
योमहींद्रा च्यौमाहिंद्रो महितो म
हान् ॥ ५० ॥ उद्भवः कारणांकर्ता पा
रगोभवतारकः ॥ अगाद्यगहनं
गुत्य ॥ परार्द्धं ॥ परमेश्वरः ॥ ५१ ॥ अ
नंत्पर्द्धिरमेयर्द्धिराचिंत्यर्द्धिसमग्र
धीः ॥ प्राग्र ॥ प्राग्महरो भ्यग्य ॥ प्रत्ये
ग्रसेग्रोग्रिमोग्रिजः ॥ ५२ ॥ महातपा
महातेजा ॥ महार्द्र्कौमहोदयः ॥
महा येशा महाधामा ॥ महासत्वो
महाधृति ॥ ५३ ॥ महांधैर्योमहा
वियोमहासंपन्महाबला ॥ महा
शक्तिः महाज्योति ॥ महाभुतिर्महा
द्युति ॥ ५४ ॥ महामतिर्महानितिः
महाक्षांतिर्महोदयः ॥ महाप्राज्ञो
महानंदौ ॥ महाभागो महाकवि
५५ ॥ महामहा महाकीर्ति ॥ महा
कांतिर्महावपु ॥ महादानो महा
ज्ञानो महायोगो महाःगुणा ॥ ५६
महामहापतिः प्राप्त ॥ महाकल्याण
पंचकः ॥ महाप्रभुर्महाप्रातिहार्या
धीशोमहेश्वर ॥ ५७ ॥ इति वृक्षम
तं ॥ ५ ॥ महामुनिर्महामौनि ॥ महा

ध्यानिर्महादमः ॥ महाक्रोधो महाशीलो
महायज्ञो महामखः ॥ ५७ ॥ महावृत्त
पतिर्मध्यो ॥ महाकांतीधरोऽधिपः
महामैत्रो महामेयो ॥ महापायो महो
दयः ॥ ५८ ॥ महाकारुणिको मंता ॥ म
हामंत्रो महायतिः ॥ महादानो महा
धीरो महाज्ञो महाशापतिः ॥ ६० ॥
महाध्वरो धरो धुर्यो महाधार्यो महि
स्थावरः ॥ महात्मा महेसाधामा ॥ म
हार्षिर्महितोदयः ॥ ६१ ॥ महाक्लेशांकु
शः शूरो ॥ महाभूतिपतिर्गुरुः ॥ महा
पराक्रमोनंतो ॥ महाक्रोधारिपूर्वसि
॥ ६२ ॥ महाभवब्धिसंतारि ॥ महामो
हाद्रिसुदनः ॥ महागुणाकरः क्षांतो
महायोगिश्वरः समी ॥ ६३ ॥ महाध्या
नपतिर्ध्याता ॥ महाधर्म्ममहव्रतः
महाकर्मारिहात्मज्ञो महादेवो म
हेश्विता ॥ ६४ ॥ सर्वक्लेशापहः साधुः
सर्वदोषोहरो हरः ॥ असंख्येयोप्रमे
यात्मा ॥ समात्मा प्रशमाकरः ॥ ६५ ॥
सर्वयोगिश्वरोचिंत्य ॥ श्रुतात्मा
विष्टरश्रवः ॥ दांतात्मा दमतिर्थेषु
योगात्मा ज्ञानसर्वगः ॥ ६६ ॥ प्रधा
नात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः ॥ प्र
क्षीणबंधकामारि ॥ क्षेमकृत्क्षेम
शासनः ॥ ६७ ॥ प्रणवः प्रणयः

प्राणः ॥ प्राणत ॥ प्राणतेश्वरः ॥ प्र
माणं प्रणधिर्दक्षो ॥ दक्षिणो ध्वर्यु
ध्वरः ॥ ६९ ॥ आनंदो नंदनो नंदो ॥ वं
द्योनंद्योभिनंदन ॥ कामहा ॥ कामदः
काम्यः ॥ कामधेनुररिंजय ॥ ६९ ॥
इतिमहामुनिनामे ॥ ६ ॥ असं
स्कृतः ॥ सुसंस्कारो ॥ प्राकृतो वै
कृतांतकृत ॥ अंतकृत् कांतगुः
कांतश्चिंतामणिरभिष्टदः ॥ ७० ॥
अजितो जितकामारिरमितो जि
तशासनं ॥ जितक्रोधो जितामित्रः
जितक्लेशो जितांतक ॥ ७१ ॥ जिने
न्द्र परमानंदो मुनींद्रो दुंदुभिः
स्वरः ॥ महेंद्रो वंद्य योगींद्रो ॥ यतींद्रो
नाभिनंदन ॥ ७२ ॥ नाभियोनाभि
जातः सुव्रतो मुनरुत्तमः ॥ अभेद्यो
नत्ययोनाश्वान् ॥ निधी को धि
गुरुः सुधीः ॥ ७३ ॥ सुमेधा विक्रमी
स्वामि ॥ दुराधर्षो निरुत्सुकः ॥ विसि
ष्टसिष्टभुक् शीष्ट ॥ प्रत्ययो कमनो
नघः ॥ ७४ ॥ क्षेमि क्षमंकरो क्षे
क्षेमधर्म्मपति क्षमि ॥ अग्राह्यो
ज्ञाननिग्राह्यो ॥ ध्यानगम्य निरु
त्तरः ॥ ७५ ॥ सुकृति धातुरिज्यार्हः
सुनयश्चतुराननं ॥ श्रीनिवासश्च
तुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतुर्मुखं ॥ ७६ ॥

६३

सत्यात्मासत्यविज्ञान॥सत्यवाक्
सत्यसासन॥सत्यासिसत्यसंध्यो
शा॥सत्यसत्यपरायणः॥७७॥स्थे
यान्स्थविष्ठानेदीयान्दवियान्
दूरदर्शनः॥अणुरणीयान्ननुः गु
रुराद्योगरियसां॥७८॥सदायोगः
सदाभोगः सदातृप्तः॥सदाशिवः
सदागतिः सदासौख्यः॥सदाविध
सदोदय॥७९॥सुघोष॥सुमुखो
सौम्य॥सुखदः सुहितान्सुहृत
सुगुप्तोगुप्तभ्रत्गुप्तो॥लोकाध्यक्षो
दमीश्वरः॥८०॥इति सस्कृत
सतं॥७॥बृहत्बृहस्पतिर्वामि॥वा
चस्पतिरुदारधि॥मनिषिधिषणाधी
मान॥शेमुखीशोगिरांपतिः॥८१॥नैक
रूपोनयस्तुंगो॥नैकात्मानेकधर्मस्र
त्॥अविज्ञेयोप्रतिकयात्मा॥कृतज्ञः
कृतलक्षणः॥८२॥ज्ञानगर्भोदया
गर्भो॥रत्नगर्भप्रभास्वरः॥पद्म
गर्भोजगद्गर्भो हेमगर्भोसुदर्शनः॥
८३॥लक्ष्मीवान्त्रिदशाध्यक्षोदृढ
ढयाऽणिनयीशीतो॥मनोहरोमनो
ज्ञांगो॥धिरगंभीरशासन॥८४॥ध
र्मयुपोदयायांगो॥धर्मनेम मुनी
श्वरः॥धर्मचक्रायुधोदेवो॥कर्मरा
धर्मघोषणः॥८५॥अमोघवाघभ

घज्ञो॥निर्म्मलौमोघशासनः॥सु
रूपा॥सुभगस्त्यागी॥समयज्ञे
समाहिता॥ ८ ॥ सुस्थित: स्व
स्थभाक् स्वस्थोनिरंजस्कोनिरुद्ध
व:॥अलेपोनिःकलंकात्मा॥वित
रागोगतःस्पृहः॥ ८७ ॥ वस्येंद्रि
यो विमुक्तात्मानिः सपन्नो जितेंद्रि
य॥ प्रशांतोनंतधामर्षि मंगलो
मलहानघ॥ ८८ ॥ अनिद्रोभुत्य
माभुतोदीप्ष्टिदैवमगोचर॥ अमु
र्त्तोमुर्त्तिमानेको॥नैकान्यानेक
तत्वदृक्॥ ८९ ॥ अध्यात्मगम्य
गम्यात्मा॥योगविद्योगवंदितः
सर्वत्रगसदाभावि॥त्रिकालविष
यार्थदृक्॥ ९० ॥ शंकरसंवदोदांतो
दमिक्षांतिपरायणो॥अधिपः
परमानंदो परात्मज्ञ परात्परः॥
९१॥ त्रिजगद्वल्लभोभ्यर्च्यो॥त्रि
जगन्मंगलोदय॥त्रिजगत्पति
पुजांह्री॥त्रिलोकाग्रसिखामणि
९२॥ इति श्री दृहत्सतं॥ ९०
त्रीकालदर्सिलोकेशो॥लोकधाताद्द
ढव्रत॥ सर्वलोकातिग पूज॥सर्वलो
केकसारथि॥ ९३॥ पुराण: पुरुषपु
र्व॥ कृतपूर्वांगविस्तरा:॥ आदिदेव
पुराणाद्यो॥पुरोदेवोधिदेवता॥ ९४

६४ युगमुख्यो युगाद्यै ष्ठो ॥ युगादिस्थि
तिदेशकः ॥ कल्पाणवर्णा कल्पाणा
कल्यकल्याणलक्षणा ॥ ६४ ॥ कल्या
णप्रकृतिर्दिव्यः ॥ कल्याणात्मा विक
ल्मषः ॥ विकलंकः कलातीतः कलिल
प्रकलाधरः ॥ ६५ ॥ देवदेवजगन्ना
थ ॥ जगद्बंधुर्जगद्विभुः ॥ जगद्धितैः
षी लोकज्ञो ॥ सर्वगो जगदामजः ॥ ६७
चराचरगुरुर्गोप्य ॥ गुढात्मा गुढ
गोचरः ॥ सद्योजातप्रकाशात्मा
ज्वलज्ज्वलनसप्रभः ॥ ६८ ॥ आदि
त्यवर्णाभर्माभा ॥ सुप्रभः कनकप्रभः
सुवर्णवर्णारुक्माभः ॥ सूर्यकोटि
समप्रभः ॥ ६९ ॥ तपनीयनिभस्तुं
गो ॥ बालार्काभो नलप्रभः ॥ संध्या
भवभ्रु हेमाभ ॥ स्तप्तचामिकरच्छ
वि ॥ १०० ॥ निष्टप्तकनकच्छाय
कनत्कांचनसंन्निभिः ॥ हिरण्य
वर्णास्वर्णाभ ॥ शातकुंभनिभः प्र
भः ॥ १ ॥ द्युम्नाभो जातरूपाभो ॥ दिप्त
जांबोनदद्युति ॥ सुधौतकलधौतश्री
प्रदीप्तो हाटकद्युति ॥ २ ॥ शिष्टेष्ट
पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः ॥ स्पष्टाक्ष
रः ॥ क्षमः सत्रुघ्नोप्रतिघोमोघः
प्रशास्ता शासिता स्वभुः ॥ ३ ॥ शांति
[illegible]

प्रद॥ शांतिदः शांतिकृच्छांति
कांतिमान्कामितः प्रदः॥ श्रेयो
निधिरधिष्ठानमप्रतिष्ठः प्रति
ष्ठितः॥ सुस्थिरः स्थावरः स्था
णुप्रथीयान्प्रथितः पृथुः॥१८॥ इति
त्रिकालशतं॥१९॥ दिग्वासावा
तरसनो निर्ग्रंथेशो दिगंबरः निः
किंचनो निराशंसो ज्ञानचक्षुर्मोमुहः॥ स
मुच्चितान्यनुध्यायन् पुमान्पूते
स्मृतिर्भवेत्॥२०॥ गोचरोपि गिरामा
सां त्वमोवागोचरो मतः॥ नोतात
थाप्यसंदिग्धं ततो भिष्टफलं भवे
त्॥२१॥ त्वमतोसि जगद्बंधुस्त्व
मतोसि जगद्भिषक्॥ त्वमतोसि जग
द्धाता त्वमतोसि जगद्धितः॥२२
त्वमेकं जगतां ज्योतिस्त्वं द्विरूपो
पयोगभाक्॥ त्वं त्रिरूपैकमुक्तांगः॥
स्वोत्थानंतचतुष्टयः॥२३॥ त्वं पंच
ब्रह्मतत्वात्मा पंचकल्याणनाय
कः॥ षड्भेदभावतत्वज्ञो त्वं सप्त
नयसंग्रहः॥२४॥ दिव्याष्टगुणमू
र्तिस्त्वं नवकेवललब्धिकः॥ दशा
वतारनिर्धार्यो मां पाहि परमेश्वरः
२५॥ युष्मन्नामावलिदृब्ध विलसत्
स्तोत्रमालया भवंतं वरिवस्याम
प्रसीदानुगृहाण नः॥२६॥ इदं स्तो

मनस्मृतिं। पुतोभवति भाक्तिकः
यः संपाठंपठंतेनसस्यात्कल्याणभ
भाजनः॥ २७ ततः संदेह पुरायार्थी
पुमानुपक्षतुपुसंध्यायपधी॥ पारकृ
तेश्रीयंप्राप्य परमानुभिलापुषः॥
२४॥ स्तुत्वेतिमघवादेवो चराचर
जगद्गुरुं॥ ततः स्तीर्थविहारस्य
वंध्यात्प्रस्तावनामिमां॥ २५ त्वं
देवं त्रिदशाधिपार्चितपदं घातिक्ष
यानंतरं प्रोत्थानंतचतुष्टयेजिनमि
नं भव्याब्जिनिनामिनं॥ मानस्तं
भविलोकनानतजगन्मान त्रिलो
कीपतीं प्राप्ताचिंत्यवहिर्विभुति
मनघं भक्त्याप्रवंदामहे॥ २३०॥
इतिश्रीजिनसेनाचार्यविरचित
सहस्रनामसमाप्तः॥ ॥ ॥
अथश्रीसम्मेदसिषरविधान
लिख्यते॥ दोहा॥ सिद्धक्षेत्रतीर
थपरमहैउत्कृष्टसुथ्थांन॥ सि
खरसम्मेदसदानमो होइपापकी
हांनि॥ १॥ अगनितमुनराजहंसेग
ये लोकासिखरकेतीर॥ तिनकेपद
पंकजनमो नासेभवकीपीर॥ २
अडिल्ल॥ हैउज्जलवह क्षेत्रसु
अति॥ निर्मल सही॥ परमपुनी
तसुठौर महागुनकीमही॥ सक

त्तासिद्धिदातार महा रमनीक है
वंदौं निजसुखहेत॥ अचलपद
देतहै॥ ३॥ सोरठा॥ सिखरसम्मेद
महान॥ जगमें तीर्थ प्रधान है
महिमा अद्भुत जान॥ अल्पमती में
किमकहौं॥ ४॥ सुंदरी छंद॥ स
रसउन्नत छेत्र प्रधान॥ अतिसु
गजिलतीर्थमहान है॥ करहि
भक्ति सुजे गुन गायके॥ वरहि सु
रसिवके सुखजाइके॥ ५॥ अरि
ल्ल॥ सुरहरनरइन आदि और
वंदन करैं॥ भवसागर सैं तिरैं नाहिं
दुखमैं परैं॥ सुफल होइ जो जन्म
जो जेदरसन करें॥ जन्म जन्म केपा
पसकल छिनमैं टरें॥ पद्धडी
छंद॥ श्रीतीर्थंकर जिन वर जु बीस
अरमुनअसंख्य सब गुननईस
पहुँचे जहसें केवल धाम॥ तिनको
मेरी हे अब प्रनाम॥ ७॥ गीतका
छंद॥ सम्मेदगढ है तीर्थ भारी॥ सब
हीको निर्मलकरै॥ चिरकाल के जे
करम लागे दरसते छिनमैं टरै॥ हैं
परमपावन पुन्नदाइ॥ अतुल महिमा
जानिये॥ है अनूप स्वरूप गिरवर
तासु पूजन ठानिये॥ ८॥ दोहा॥
श्रीसम्मेद सिखरसदा॥ पूजों मन

६७

बचकाइ॥हरनचतुर्गतदुष्यको
मनवांछितफलदाइ॥ ॐ ह्रीं सम्मे
दसिखरसिद्धक्षेत्रेभ्योपरिपु
ष्पांजलिं क्षिपेत॥ अथ अष्टकं॥
अडिल्लछंद चालछंद॥ छीरोद
धिसमनीरसुनिर्मलनी मिणकन
ककलसमेंभरकेधारदीजोये॥ पूजों
सिखरसम्मेदसुमनवचकाइजी
नरकादिकदुखटरे अचलपदपा
इजी॥ ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरसि
द्धक्षेत्रेभ्यो॥ जलं॥ निर्वपामीति
स्वाहा॥१॥ पयसोंघिसमलया
गिरचंदनल्याईये केसरआदि
कपूरसुगंधमिलाईये॥ पूजों सिख
रसम्मेदमनवचकाइजी॥ नरकादि
कदुखटरो अचलपदपाइजी॥ सुगं
धं॥२॥ तंदुलधवलसुखासैउज्ज
लधोइके॥ हेमरतनकेथारभरोसु
चहोइके॥ पूजों०॥ अक्षितं॥३॥
फूलसुगंधमईल्याइहरषसों आंन
चडाये॥ रोगसोकामिटजाइमदनसर
दूरपलाये॥ पूजों सिखर॥ पुष्पं॥४
षटरसजुतनैवेदकनकथारीभरल्या
वे क्षुधानिवारनहेतुपूजौंमनहर
षाये॥ पूजोंसिषर०॥ नैवेद्यं॥५॥
लेकरमनमयदीपसुज्योतउद्दोत

६८

है॥ पूजत होत सुखं। नमो दतनम
नास है॥ दीपं॥ ६॥ दस विध धूप
अनूप अगन माहि खेवज्ये॥ अष
करम के नास होत सुख पावजू॥ पूजो
सिखर०॥ धूपं॥ ७॥ येला लौंग सु
पारी श्रीफल ल्याईये॥ फल चडाइ
सुख वांछमो छ फल पाईये॥ पू
जौ सिखर०॥ फलं॥ ८॥ जल गंध
अछित फूल चरु अवलीजिये
दीप धूप फल लेकर अर्घ चडईये॥
पूजो सिखर सम्मेद सुमन वच काइ
जी॥ नरकादिक दुख टरै॥ अचल
पद पाईजी॥ अर्घं॥ ९॥ पद्धडी छं
द॥ श्रीविंसती तीर्थंकर जिनेंद्र॥ अ
र असंख्यात वहुते मुनींद्र॥ जिनको
कर जोर कर प्रनाम॥ जिनको पूजो
तज सकल काम॥ ॐ ह्रीं श्री सम्मेद सि
खरा सिद्ध क्षेत्रेभ्यो॥ पूर्णार्घं॥ चा
ल जोगीरासे की॥ श्री सम्मेद सि
खर गिर उन्नत सोभा अधिक प्रमानौ
विंसति तिह पर कूट मनोहर॥ अद्भु
त रचना जानौ॥ श्री तीर्थंकर वीस तहां
तै सिवपुर पहुंचे जाई॥ तिनके पद प
कज जुग पूजौ प्रत्येक अर्घ चडाई
चाल॥ ॐ ह्रीं श्री सम्मेद सिखर
सिद्ध क्षेत्रेभ्यो॥ अर्घं॥ चाल जो

६८

गीरासाकी॥ प्रथमासिद्धिजुकूटसुजा
नोआनंदमंगलदाई॥ अजितप्रभु
जहसैसिवपहुंचे॥ पूजोंमनवचका
ई॥ कोडिजुअसीएकअरवमुनचौ
वनलाषजुगाई॥ कर्मकाटिनिरवांन
पधारे॥ तिनपदअर्घचडाई॥ ऊंह्रीं
श्रीसम्मेदसिखरासिद्धिकूटपैअ
जितनाथजिनेंद्रादिमुनएकअ
रवअस्सीकोडिचौवनलाष
मुनिसिद्धिपदप्रापतिसिद्धक्षेत्रे
भ्यो॥ अर्घं॥ चालजोगीरासेकी
धवलकूटसुनामदूसरोहैसबकोंसु
षकारी॥ श्रीसंभवप्रभुमुक्तपधारेपा
पतिमरकौहारी॥ धवलदत्तहैआदि
मुनीस्वरनौकोडाकोडीजांनौ॥ ब
हत्तरिसहससवियालिसपंच
सतकरिषआनौ॥ कर्मनासकरि
अमरपुरीगये॥ वंदौंसीसनवाईति
नकेपदजुगजजौभावसौ॥ हरषह
रषाचितल्याई॥ ऊंह्रींश्रीसम्मेद
सिखरधवलकूटतैसं८भवना
थजिनेंद्रादिमुनकोडाकोडीवहत्त
रिलाषवियालीसहजारपांचसैमु
नासिद्धिपदप्रापतिसिद्धक्षेत्रेभ्यो
अर्घं॥ चौपाहीछंद॥ आनंदकू

६९

सिवपुर आई ॥ कोड कोड बहतरि जि
न ॥ सत्तर कोडि लाष छहतिमांन
सहस्र बियालिस सतक सुसात
कहे जिनआगम मैं इस भांति ॥ परिष
कर्म काटि सिव गये तिनके पद
जुग पूजत भये ॥ ॐ ह्रीं श्रीसमेद
सिषर आनंद कूटपै अभिनंदन
जिनेंद्रादि मुन बहत्तरि कोडाको
डी अरु सत्तरि कोडि लाष छत्ती
स ब्यालीस हजार सात सै मुन सि
द्धिपद प्राप्ति सिद्ध छेत्र भ्यो ॥ अ
र्घं ॥ ४ ॥ अरिल छंद ॥ अवच
ल चौथो कूट महासुखधाम जी
जहसे सुमति जिनेस्वर गये निरवां
ण जी ॥ कड कोडाकोडी एक मुनी
स्वर जानिये कोडि चौरासी ला
ष बहत्तरि मानिये ॥ ७ सहस इ
क्यासी और सात से गाइये ॥ कर्म
काट सिव गये नमो सिर नाइये
सो थानक मैं पूजो मन वच काइ
जी ॥ पाप दूरि हो जाय अचल पद
पाइ जी ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं ॥ श्रीसम्मेद सि
षर अवचल कूटपै श्रीसुमति जिने
द्रादि मुन एक कोडाकोडी अरचौ
रासी कोडि बहत्तर लाष इक्यासी
हजार सात सै मुन सिद्धिपद प्रा

पतिसिद्धिक्षेत्रेभ्यो ॥ अर्घं ॥ ४ ॥
अरिल्ल ॥ मोहनकूटमहांरा परम
सुंदरक ह्यो ॥ पद्मप्रभुजिणराय ज
हां सिवपुर लह्यो ॥ कोडि निन्यां०
नवे लाष सत्तासी जानियै ॥ सहस
तेतालिस और मुनी अरमानिये ॥ १ ॥
सत्तसे कहात लख्षपरवीसजू ॥ मो
क्ष गये मुन तिनको नामी नित सीसजू
कहे जवाहरिदास जु दुई कर जोर के
अब नासी पहदै प्रभु कर्म नषोइके
ॐ ह्रीं श्री सम्मेद सिखर मोहनकू
टथे पद्मप्रभ जिनेंद्रादि मुन निन्या
नवे कोडि सत्तासी लाष पेतालीस सह
जार सातसै सत्तर अरवीस मुनसि
द्धिपद प्राप तिसिद्धि क्षेत्रेभ्यो ॥ अ
र्घं ॥ ५ ॥ सोरठा ॥ छंद ॥ कूटप्रभा
सम हांन ॥ सुंदर जगमन मोहनो ॥
श्री सुपार्श्व भगवान ॥ मुक्त गये अघ
नास करि ॥ १ ॥ कोडाकोडिकुनचा
स कोडि चोरासी जानीये ॥ लाष बह
त्तर मान ॥ सात सहस है सात से ॥ २ ॥
और कहे ब्यालिस ॥ जहसे मुन मुक
ते गये ॥ तिनको नाम नित सीस दा
स जवाहर जोर कर ॥ ॐ ह्रीं ॥ श्री सम्मेद
सिखर प्रभासकूट पै सुपार्श्वनाथ
जिनेंद्रादि मुन ऊन चास कोडाकोडी

अर्धचौरासीकोडिवहत्तरिलाष
सातहजारसातसैब्यालीसमुनासि
द्धपदप्रापतिसिद्धिछेत्रेभ्यो ॥ अ
र्घं ॥ ६ ॥ दोहराछंद ॥ पावनपर
मउतंगहो ॥ ललितकूटहैनाम ॥ चं
द्रप्रभुमुकतेगये ॥ वंदौश्रुतौजाम
॥ १ ॥ नौसैअरयगुआनिये ॥ चौरासी
रिषमान ॥ कोडिवहत्तरिइमकहै
अस्सीलाषपरवान ॥ २ ॥ सहसचौ
रासीपिचसतपचवनकहेमुनिंद्र
वसुकर्मनिकौनासकरि ॥ पायोसु
षकौकंद ॥ ३ ॥ ललितकूटपोसिका
येवंदौसीसनवाइ ॥ तिनपदपूजौ
भावसैनिजहितअर्घचढाय ॥ ॐह्रीं
सम्मेदसिरवरललितकूटतेचंद्रा
प्रभुजितेंद्रादिमुननौसैअरयअर
चौरासीवहत्तरीकोडिअस्सीलाष
चौरासीहजारपचवनपांचैसेमु
नसिद्धिपदप्रापतिसिद्धिछेत्रेभ्यो
अर्घं ॥ ७ ॥ पद्धडीछंद ॥ सुप्रभकू
टजुनामजाण ॥ जहपुष्पदंतकौमु
क्तथान ॥ मुनकोडाकोडीकहैसुभाष
अरकहैनिन्यानवैअरुलाष ॥ १ ॥ सा
तसतकहसहससान ॥ रिषअस्सी
औरकहेविष्यात ॥ मुनमोक्षगयेव
सुकर्मकाटि ॥ वंदौकरजोरनवाइमा

७०

ला॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदसिखर
सुप्रभकूटपैं पुष्पदंतजिनेंद्रादि
मुनएककोडाकोडीनिन्यांवेलाष
सातहजारच्यारसेअसीमुनासि
द्धिपतिप्राप्ताय॥अर्घं॥ चा॥ सुं
दरीछंद॥ सुभगाविद्युतिकूटसु
जानियैं॥ परमअद्भुततापरमानि
यै गयेसिवपुरसीतलनाथजी॥
नमऊंतिनपदकरधरमाथजी॥१॥ मु
नसुकोडाकोडीअठारजू॥ पुनजु
कोडिवियालिसजांनहुं॥ कहेओ
रजुलाषवत्तीसजू॥ सहसवियां
लिसकहेजनीसजू॥२॥ अरनवसे
पाचजुजानियै॥ गयेमुनासिवपुरकों
मानियै॥ करिहिपूजाजेमनल्यारके
धरहिजन्मनभवमेआइकों॥३॥ ॐ
ह्रीं श्रीसम्मेदसिखरविद्युतकूटतें
श्रीसीतलनाथजिनेंद्रादिमुनकोड
कोडिअठारहअरकोडिव्यालिस
लाषवत्तीसव्यालीसहजारनोसै
पंचमुनसिद्धिपदप्राप्तिसिद्धि
क्षेत्रेभ्यो॥ अर्घं॥ चालजोगीरा
सेकी॥ दुसरीचालसनेहसा
गरकी॥ कूटसंकुलपरममनोहर
श्रीश्रीयांसजिनराज॥ कर्मनासकर
सिवपुरपउंचे नितप्रतसीसनवाई

७१

९

कोडाकोडिकहे छ्यानवे॥ छिन
वैकोडिप्रमांनो॥ नारव छ्यानवे सा
ठैनवैसहस्रमुनीसुरजानो॥१॥ ना
ऊपरव्यालीसकहेहै॥ श्रीमुनके
गुनगावै॥ त्रिविधजोगकरजोको
ऊपूजे॥ सहजानंदपदपावै॥ सिद्ध
नमीसुखदाईजगतमै॥ आनंदमं
गलगुराई॥ जजोभावसैचरनजिने
श्वरहातजोरसिरनाई॥२॥ पावन
परमसुथानमनोहर॥ देषतविघ
नपरलाई॥ तीनकालनितनमैज
वाहर॥ मेटोभवभटकाई॥ जिससैग
जहसेजमुनासिद्धभयेहैं॥ तिन
कोसरनगहाई॥ जोपदकोतुमप्राप
भयेहो॥ सोपददेहूमिलाई॥ ॐ
ह्रीं॥ श्रीसम्मेदसिरवरसंकुलकूट
पैश्रीश्रेयांसजिनेंद्रादिमुनछ्यानवे
कोडाकोडिश्रर छ्यानवेकोडि छ्या
नवे लाष साढेनवेसहस्र आरव्या
लीसमुनिसिद्धिपदप्रापति सिद्ध
क्षेत्रेभ्यो॥ अर्घ॥ १०॥ अथ छ
दकुसमलता की चाल॥ श्रीसु
भसंकुलपरमसुंदरसुपदाई॥ वि
मलनाथभगवानजेपंचमगतिपा
ईकोडिकुमस त्तरिसात लाषषटुसह
हसजुगारी॥ सातसतकमुनिऔर

७१

आसिस जो तोभाई॥ दोहा॥ अवक रमकौ नासिकरि मुन अव मोषित पाय तिन प्रति अघ घंघडावहूं जनमम रण दुखजाइ १ विमल देव निरम लकर सवजीवन सुखदाइ मोती सुत वंदत अरसाहात जोर सिरनाय २ ॐ ह्रीं॥ श्री सम्मेद सिखर सांकूल कू टपे श्री विमलनाथ जिनेंद्रादि मुनस तरि कोडि असा तलाष छह हमार सातसे व्यालीस मुनसिद्ध पद प्राप ति सिद्ध क्षेत्रेभ्यो॥ अर्घं॥ ११॥ अ डिल्ल छंद॥ कूट स्वयंभू नाम परम अदभुत कह्यौ प्रभ अनंता जिननाथ जहा सिवपुर लह्यौ मुन तुकोडाकोडी छ्यानवे जानिये सत्तरि कोडि जु सत्तरि लाख वखानिये १ सत्तरस हस जु और सातसे गाईये मुक्ति गये मुन तिन कौ सीस नवाईये कहै ज वाहर दास सुनौ मन ल्याइके गिरवर कौ नित पूजो अति सुख पाइके २ सो रठा॥ पूजत विघ्न पलाय रिद्धि सि द्धि आनंद करै सुरा सिवपद सुषदा इ जो मन वच पूजा करै १ ॐ ह्रीं श्री सम्मेद सिखर स्वयंभू कूट पे श्री अनं तनाथ जिनेंद्रादि मुन छ्यानवे कोडा कोडी अरसत्तर कोडि सत्तर लाष स

७१

नरहजारसातसैमुनिसिद्धिप
दप्रापतिसिद्ध छेत्रभ्यो॥ अर्घ
२२॥ चौपही छंद॥ कूटसुदत्त
महासुभजान॥ श्रीजिनधर्मनाथ
कौथान॥ मुनकोडाकोडीउनचा
स॥ औरकहैरिषकोडिभनेस॥१॥ ला
षजुनवनो सहसजुजान॥ सात
सतकपच्चानवेमान॥ मोछगये
वेकरमनचूर॥ दिवसरेननमह
भरपूर॥२॥ महिमाजाकीअतुल
अनूप॥ ध्यावतवरइंद्रादिकभूप
सोभतमहाअचलपरदाइ पूजो
आनंदमंगलगाइ॥३॥ दोहा॥
परमपुनीतिपवित्रअति॥ पूज
तसतसुरराइ॥ तिहथानककौ
देषके मोतीसुतगुनगाइ॥४॥ पाव
नपरमसुहावनो॥ सबजीवनसुख
दात सेवतसुरहरनरसकलमन
वांछितफलपात॥७॥ जैसी॥ श्री
सम्मेदसिखरसुदत्तकूटतैं श्रीधर्म
नाथजिनेंद्रादिमुनउनतीसकोड
कोडीअरुभनेसकोडिनोलाषनौ
हजारसातसेपंचानवेमुनसिद्धिप
दप्रापतिसिद्धछेत्रभ्यो॥ अर्घ
२३॥ गीतका छंद॥ हे प्रभासी
कूटसुंदरअतिपवित्रसुजानियै॥

॥७२॥

सोतनाथ जिनेंद्र जहंसे परम धाम पधारिये॥ नवजु कोडाकोडि मुनवर लाष बत्तिस जानि ये॥ नौसहसस्से नौ जो मुन निन्यानवे अवमानिये॥१॥ दोहा॥ कर्मनास मुकते गये तिन पद अर्घ चढाय॥ त्रिविधि जोगकर पूज हो मन वांछित फल पाव॥२ ॐ ह्रीं श्री सम्मेदासिखर प्रभास कूट ते श्री सोतनाथ जिनेंद्र आदि मुन नौ कोडाकोडी नौ लाष नौ हजार से नौ निन्यानवै मुन सिद्ध पद प्राप्ति सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घं॥१८॥ गीतका छंद॥ ग्यांनधर सुभ कूट सुंदर परम मन मोहन सही॥ जहंसे श्री प्रभ कुंथ स्वामी॥ गये सिवपुर की मही॥ कोडा जु कोडी छयानवे मुन कोड छिनवे जानिये॥ लाष बत्तिस सहस छिनवे॥ ध्यरु से सात प्रमानिये॥१॥ दोहा॥ और कहे ब्यालीस मुन सुमरो लिये मझार॥ तिन पद पूजो भाव से भव दधि से पार॥ ॐ ह्रीं श्री सम्मेदसिखर ग्यान धर कूट ते श्री कुंथनाथ जिनेंद्र आदि मुन छयानवे कोडा कोडी अरु छयानवे कोडी बत्तीस लाख छियानवे हजार सात से सात आ ब्यालीस मुन सिद्ध पद प्राप्ति सिद्ध क्षे

७

त्रैम्यो ॥ अर्घं ॥ १५ ॥ दोहा ॥ कूटजु

नाटकपरमसुभसोभा अपरंपार

जहपे अरजिनेसजी ॥ पहुंचे मु

कतिमझार ॥ १ ॥ कोडि निन्यानवे

जान ॥ मुनलाषनिन्यानवे और क

है सहसनिन्यानवे ॥ वंदौकरजुगजो

र ॥ २ ॥ अष्टकरमकोनासकर अव

नासीपदपाय ॥ तेगुरममहिरदैबसौ

भवदधिपारलगाय ॥ ३ ॥ सोरठा

तारनतरन जिहाज ॥ भवसमुद्र

के बीचिमें ॥ पकरोमेरी बांह बूड

तथे राखौमुझे ॥ १ ॥ अष्टकरमदुष

दाय ॥ तुतुमने चूरसे ॥ केवलग्यान

उपाय ॥ अवनासी सुषपाईयो ॥ २

मोती सुतगुनगाइ ॥ चरननसीस

नवाइकै ॥ मेटौभवभटकाव ॥ मागत

अववरदारा जो ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ॥ श्री

सम्मेदसिखरनाटककूटपे श्री

अरहजिनेद्रादिमुननिन्यानवेका

डिनिन्यानवेलाषनिन्यानवेहजार

मुनासिद्धिपदप्रापतिसिद्धछेत्रेभ्यो

अर्घं ॥ १६ ॥ छंदद्रुतविलंबित

सुंदरी छंदकी चाल ॥ कूटसंबल

परमपवित्रजू ॥ गयेसिवपुरमल्ले

जिनेसजू ॥ मुनजुछयानवेकोडिप्र

मानिये ॥ पदजजतहिरदैसुखआ

नियो॥१॥ छंद मोतीदांम॥ भजोप्रभ नां
मसदासुषरूप॥ जपीमनमैंधरभावअनू
प॥ टरैंअघपातिक जाहि सु दूर सदाजन
कौसुखआनदपूर॥१॥ डरैंज्योनागलु
गडुराहि देष॥ भजैगेगजसुपजुसिंघहि
पेष॥ तुवनामप्रभुदुषहनैसदा॥ सुख
पूरअनूपम होइसुदा॥२॥ तुमदेवसदा
असरनसरनं॥ भटमोहवलीप्रभजूहर
नं॥ तुव सरनगहीहम आइअबे मुरके
कर्मवलीरिढचूरसबे॥३॥ ॐ ह्रीं॥ श्री
सम्मेदसिखरसंबलकूटपेश्रीम ल्लि
जिरां द्यादिमुन छयानवे कोडीसिद्धिपद
प्राप्तिसिद्धक्षेत्रेभ्यो॥ अर्घं॥२७
छंद मदविलिप्तिकपोल॥ मुनसुव्र
तजिनराजसदासुआनंदकेदाई॥ सुदरनि
र्जरकूटजहासेसिवपुरजाही॥ निर्व्यांन
वेकोडाकोडीकहेमुनसस्याना॥ नौला
षनौडिमुनिदककहे नोसेनिर्व्याना॥१॥
सोरठा॥ कर्म[illegible]नासरिषराज॥ पंच
मगतिकेसुखलहे॥ तारनतरनजिहाज
मोदुषदूरकरौसकल॥२॥ छंद भुजंग
प्रयात॥ बलीमोहकीफौजप्रभुजी
भगाई॥ जग्योग्यांनापंचममहासुष
दाई॥ समोसर्नधरनेंद्रनेंअबबनायो
तहांदेवसुरपतिसवैसीसनायो॥३॥ अ
यजयजिनेंद्रसवद्रउचारी॥ भयेआ

७४

जदसिनसबैसुषकारी॥ गयेपापपा
तिकसबैमूरहीपे॥ जबैदरसकीनोप्रभु
हूरहीपे॥४॥ सुनीनाथअबयात्नुते
रीबडाई॥ महोसनेहममेतुमारीसुआ
ई॥ बलीकर्मनासैजबमुक्तिपाई ति
न्हैहाथजोरंसीसनाइ॥५॥ ॐह्रीं॥ श्री
सम्मेदासिषरानिर्जरकूटथेमुनसुव्र
तनाथजिनेंद्रादिमुननिन्यानवे
कोडाकोडीअसत्यानवेकोडिनौ
लाषनोसैनिन्यानवैमुनसिद्धपदप्रा
पतिसिद्धिछेतेभ्यो॥ अर्घं॥१८॥
अथचालजोगीरासेकोदुसरी
सनेहसागरकी॥ इहिमित्रधरकूट
मनोहरसुंदरअतिछबछाई॥ श्री
नमिनाथजिनेस्वरजहथेअबनासी
पदपाई॥ नौसैकोडाकोडमुनवरस्व
अरबरिषजानौ॥ लाषपैतालिससा
तसहसअबनौसैब्यालिसमानौ
१॥ दोहा॥ वसुकर्म्मनकोनासकर
अविनस्वरपदपाइ॥ पूजौचरनस
रोजजौमनवांछितफलदाइ॥२॥
ॐह्रीं श्रीसम्मेदसिषरमित्रधरकूट
तेश्रीनमिनाथजिनेंद्रादिमुननौसै
कोडाकोडीएकअरबपैतालीससला
षसातहजारनौसैब्यालिसमुनासिद्धि
पदप्रापतिसिद्धिछेतेभ्यो॥ दोहा

कूटपै श्रीप्रभपारसनाथ॥
...पुरकौंगये। नमोंजोरजुगहा
...ॐ ह्रीं॥ श्रीसम्मेदसिखरसुभरन
भद्रकूटपै श्रीपारसनाथजिनेंद्रादि॥
मुनसिद्धपदप्रा
पपातिसिद्धक्षेत्रेभ्यो॥ अर्घ॥ २०॥
अथ श्रीअंगपूजालिख्यते। दोहा
याविधबीसजिनेसकेबीसोसिखरमहांन॥ और असंखमुनीसमहापुरुषै
सिवपदथांन॥१॥ ॐ ह्रीं सम्मेदसिखरतें असंखमुनिसिद्धिपदप्रापति
तिनकेचरनारविंदनकीपूजापरपुष्पांजलिंक्षिपेत॥ चालछंद
गीतका पदमद्रहकौनीरानिर्मलसुचकटोरीमैंभरौ। त्रषारोगनिवारवेकौंचरनतरधाराकरौ॥ सम्मेदगडतेमुनअसंख्यो॥ कर्महरसिवपुरगये
सोथांनपरमपुनीतपूजौं॥ तासुफलपुनसंचये॥ जलं॥१॥ चंदनाकपूरमिलनाकेसरनीरसोंघिसल्याइयो॥ प्रभुसीतलकरउहमकौं॥ भवतापमिटाईयौ॥ सम्मेदगडतेंमुनअसंखे
कर्महरसिवपुरगये॥ सोथानपरमपुनीतपूजौं॥ तासुफलपुनसंचये॥
सुगंधं॥२॥ चंद्रकेसमल्याइतंदुलकनकथारनमैंभरौं॥ मोक्षपदके

कारनेमैंप्रभुपदपूजाकरों॥ सम्मेद० ॥ अक्षितं ॥ ३ ॥ कुंदकमलादिकच मेलीगंधकरमधुकरफिरैमदन बानविनासवेकोप्रभुचरनअगें धरै॥ सम्मेद० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ नेवज मनोहरप्यारमैभरहर्षकरलैआवनें करकरपूजाभावसेनरछुधाउप्यमिटा वनें॥ सम्मेद० ॥ नैवेद्य ॥ ५ ॥ दीपजो तप्रकासकरकैप्रभुकेगुनगावनै मो हअंधविनासकरकेग्यानभानप्रकास नें॥ सम्मेद० ॥ दीपं ॥ ६ ॥ वरधूपसु दरलैहसांगीज्वलनमध्यजुषेईये कम्मनासनकेसुकारनदजपभुकी कीजिए॥ सम्मेद० ॥ धूपं ॥ ७ ॥ उत्कृ ष्टफलजगमांहिजेतेहरषकरलेआ वेनै नेत्ररसनालगेसुंदरफलअनूप चढावणे॥ सम्मेद० ॥ फलं ॥ ८ ॥ फ लअर्घलैवसुदर्वसंजुतमनप्रफुल्ल्ति तकीजिए॥ दासजोवरदासमांगे मुक्तिलछमीदीजिए॥ सम्मेद० ॥ अ र्घं ॥ ९ ॥ गीताकाछंद ॥ कोजेनर नारपूजाभावभक्तसुल्याइकै॥ ति नकोसुजसकहककैहैजवाहरहरष मनमैधारकै॥ इसुरेसनरेसषगपति समसपूजाफलदही॥ प्यारमनवच कायपूजापावहोसिवपुरमही॥ पूर्णार्घं

अडिल्ल॥ चालजलदीमें॥ परमासिखर सम्मेदसवाहिकैसुखकारना॥ वंदैजु नरनारताहिकैअघसबहरना॥ नरक पसुगतटरैसुष्यजगकेबहूपावै॥ नरपातिसुरपातिहोइफेरीसिवपुरकोजावै॥ इत्याशीर्वाद॥ दोहरा॥ जिनतीरथवंदैनहीं॥ सुनोधरमनहिसार॥ तेभववनमेंभ्रमाहिंगे॥ कबहुनपावैपार॥१॥ नरभवउत्तमपाइकै॥ श्रावककुलअवतार॥ पूजाजिनवरकीकरे॥ तेउतरेभवपार॥२॥ सवविधजोगमैपाइकै॥ सिखरनवंदैसार॥ रतनपदारथपाइकै॥ देतसमुद्रमेंडार॥३॥ ढार कातिककी॥ प्रानीहो आदीस्वरमहाराजजी श्रीअष्टापदसिवथांन हौ॥ पूजतसुरहरनरसकल॥ सोपावैपदनिर्वानहोप्रानी॥ हमपूजतइतहीसदा॥ इहनासेसबभयभीतिहोप्रानी॥ हमपूजतइतहीसदा॥ इहनासैसबभयभीति हौप्रानीपूजौमनवचकायकर॥ ॐ ह्रीं श्रीकैलासगीरथे श्रीरिषभनाथजिनेंद्रादिसिद्धपदप्रापतिसिद्धक्षेत्रेभ्यो॥ अर्घ॥ सोरठा॥ वासपूज्यजिनराराइ॥ चंपापुरथैसिवगये॥ मनवचजोगलगायपूजौपदजुगअर्घलै॥ ॐ ह्रीं॥

म्या

श्रीचंपापुरक्षेत्रात्स्य पूज्यजिनेंद्रादि
सिद्धपदप्राप्तिसिद्ध छेत्रेभ्यो ॥ अ
र्घं ॥ २ ॥ दोहा ॥ नेमप्रभुतजराजम
ति लई तपस्याजाय ॥ सिद्धभयेगिर
नारतैं पूजो अर्घबनाइ ॥ ॐ ह्रीं श्री
नेमप्रभुगिरनारतेंसिद्धपदप्रापति
सिद्धछेत्रेभ्यो ॥ अर्घं ॥ ३ ॥ सुंदरी
छंद ॥ वर्धमानजिनेस्वरपूजिए
सकलपातिकदूरकरीजिए ॥ गएपा
वापुरक्षेमोछमें ॥ तिनहीपूजतअर्घ
सजोरके ॥ ॐ ह्रीं श्री पावापुरक्षेत्रवर्ध
मानस्वामीसिद्धपदप्रापतिसिद्धछे
त्रेभ्यो ॥ अर्घं ॥ ४ ॥ दोहा सिद्धछे
त्रजेऔरहैं भरतछेत्रकेठाह ॥
औरजुअतिसयछेत्रहैं कहेजि
नागममांह ॥ १ ॥ तिनकोनेमसुलेतहीं
पापदूरहोजाय ॥ तेसबपूजोअर्घ
दे भवभवकोसुषदाइ ॥ ॐ ह्रीं श्री
भरतक्षेत्रसंबंधीसिद्धछेत्रअ
तिसयछेत्रेभ्यो ॥ अर्घं ॥ १
सोरठा ॥ द्वीपअढाईमांहिसिद्ध
छेत्रजेऔरहैं ॥ पूजोअरघचढाय
भवभवकेअघनासहे ॥ ॐ ह्रीं अ
ढाईद्वीपसंबंधीसिद्धछेत्रेभ्यो
अर्घं ॥ २ ॥ अरिल्लछंद ॥ पूजो
तीसचौबीसमहासुषदायजी

भूतभाविष्यतवर्तमांनगुनगाइजू।
कहेविदेहकेवीसनमोसिरनाइजू।
अरघअघचढायेसुविघ्नबिलाइजू।१
।ॐह्रींतीसचौवीसीभूतभाविष्यतव
र्तमांनवविदेहकेवीसजिनेंद्रेभ्यो अ
र्घं।दोहा॥कीर्तांकीर्तमजैकहे।तीनलो
ककेमाह।तेसवपूजोअर्घलै।हातजो
रसिरनाइ॥ॐह्रींतीनलोकविषेभग
वांनकेचैत्यालयकीर्तांकीर्तमभ्यो
अर्घं॥अथजयमाल॥छंदलो
लतरंग॥मनमोहनतीरथसुभजांनो
पावनपरमसुक्षेत्रप्रमानौ।उन्नत
सिखरअनूपमसोहे।दिषतताहसुरा
सुरमोहे॥दोहरा॥तीरथपरमसुहा
वनौ।सिषरसम्मेदविसाल।कहतअ
लपवुद्धिउक्तसेसुषदाइजयमाल॥छं
दवेसरी॥चौपहीछंदजयमालकी
ढार॥१॥सिद्धक्षेत्रतीरथसुषदाई।
वंदतपापदूरहोजाइ।सिषरसीसपर
कूटमनोग्य।कहेवीसअतिसोभाजोग्य
१।प्रथमासिद्धसुभकूटसुजांन।अजित
नाथकौमुक्तिसुथांन।कूटतनौदसेन
फलल[illegible] ह।कोडिवतीसउपासजुले
हा।दूजोधवलकूटहेनांम।संभवप्र
भजहसैसिवधांम।कूटदरसफलप्रो
षधजांन।नाषावियालिसकहोवषान

२॥ आनंदकूट महासुषदाइ॥ जहथै
अभिनंदन सिवजाई॥ कूटतनौ वंदन
इमजांन॥ लाषउपासतनो फलमांन॥३
अवचलकूट महासुषकारथैस मुक्ति
जहाथै सुमतिजिनेस॥ कूटभावधर
पूजेकोइ॥ एककोडि प्रोषदफलहोइ
४॥ मोहनकूट मनोहर जांन॥ पदम
प्रभुजहाथै निरवांन॥ कूटपूज्यफल
लेहुसुजांन॥ कोडिउपासकहो भगवा
न॥५॥ मनमोहनकूट सुवास॥ मुक्तेज

५

हांसे श्रीसुपार्श्व॥ पडकूटमहाफलले
इ॥ कोडिबतीसउपासजुसोइ॥६॥ चंद
प्रभको मुक्तिसुधाम॥ परमथिसाल ललि
तघरनाम॥ दरसनकूटतनो फलमांन॥
प्रोषदसोलालाषप्रमांन॥७॥ सुप्रभ
कूटमहासुषदाई॥ जहथै पुष्पदंतसि
वजाई॥ पूजोकूटमहाफललेव॥ कोडि
उपासकहो जिनदेव॥८॥ सोविद्युतव
रकूट महांन॥ मोक्षगयेसीतलधर
ध्यांन॥ पूजो त्रिविधजोगकरकोइ॥
कोडउपासतनो फलहोइ॥९॥ संकूल
कूटमहासुभजांन॥ जहथैश्रीयांसभ
गवांन॥ कूटतनोअवदरसनसुनो को
डिउपासजिनेस्वरभानो॥१०॥ संकुल
कूटपरमसुषदाई॥ विमलजिनेसज
हांसिवपाई॥ मनवचदरसनकरैजुकोई

७७॥

कोडिउपासतनौ फलहोइ॥ ११॥ कूटस्व
यंभूसुभगसुनांम॥ गये अनंत अमरपुर
धांम॥ इहीकूटकोदरसनकरै॥ कोडउप
सतनौफलधरै॥ १२॥ हैसुदत्तवरकूट
महांन॥ जहथेधरमनाथनिरवांन॥ पर
मविसालकूटहैसोइ॥ कोडिउपासदरस
फलहोइ॥ १३॥ परमप्रभासकूटसुभकहो॥
सांतिप्रभूजहसेसिवलहो॥ कूटतनौद
रसनहैसोइ॥ एककोडिप्रोषदफलहोइ॥
१४॥ धर्मगंभधरहैसुभकूट॥ सिवपुरकुं
थगयेअघछूट॥ इनकौपूजैजोकरजो
ड॥ फलउपासकहोएककोडि॥ १५॥ नाटक
महांसुभजांन॥ जाथेमोछअरप्रभग
वांन॥ दरसनकरैकूटकोजोइ॥ छिनवैको
डिउपासफलहोइ॥ १६॥ संवलकूटम
ल्लिजिनराइ॥ तासौमोछगयेनिजका
ज॥ कूटदरसफलकहोजिनेस॥ कोडि
एकप्रोषदसुभवेस॥ १७॥ निर्ज्जरकूट
कहोसुषदाइ॥ मुनसुव्रतजहसेसिवजा
इ॥ कूटतनौदरसनअवसोइ॥ एककोडिप्रो
षधफलहोइ॥ १८॥ कूटमित्रधरतेनमि
मोछ॥ पूजंत आइसुरासुरजछ॥ कूटत
नोफलहैसुषकंद॥ कोडिउपासकहोजिन
चंद॥ १९॥ श्रीप्रभपार्श्वनाथजिनराइ
हैगततेछूटेमगराज॥ सुवरनभद्रकूट
कोनाम॥ तासौमोछगयेसिवधांम २०

द क

॥७८

तीन लोकहितकरन अनूप। वंदितना
हसुरासुरभूप। चिंतामनसुरतरुबह
समांण॥ रिद्धिसिद्धिमंगलसुखदा
न॥१॥ पारसओरकामदुधेन॥ नाना
विधिआनंदकोदेन॥ व्याधिव्यका
जाहिसबभाज॥ मनचिंतपूरेहैका
ज॥ भविदुःखहरणविनासकवोही॥
औषदजगमेंऔरनकोई॥ निरमल
रसमयधाराजलपछ॥ वंदतपाप--भजे
अरूदुष॥ जोनरध्यावतपुन्यकमाय
जसगावतरचकर्मनसाय॥ कोटनना
दिकालकेपाप॥ भजेसकलछिनमें
संताप॥४॥ सुरनरइंद्रफनेंद्रसुसेवे
औरखगेंद्रमनेंद्रसुनावे॥ नितसुरसुरी
करेउछार॥ नाचतगावतविविधप्र
प्रकार॥५॥ बहुविधभक्तिकरेमनलाई
विविधप्रकारवाजत्रवजाई॥ द्रुम
द्रुमद्रुमताबजेमृदंग॥ घनघंटाघटाव
जेमुहचंग॥ झुनझुनझुनझुनकिंगायांस
सो॥ सरसरसरसारंगीधुनै॥ मुरलीबी
नबजेधुनमिष्ट॥ पटहातूररवरावजत
पुष्ट॥७॥ सबसुरगनपुतिगावतसार
सुरगननाचतवहुतप्रकार॥ झनाननन
नननानूपुरबाजे॥ तननाननननननना
टोरततानु॥८॥ नाचैइथैइथैइथैई
सुचाल॥ सुरनाचतनाचतनिजभाल

७८

भारी॥ गावत नाचत नाना रंग॥ खेत जहां सुरनर आनंद संग॥ २९॥ नित प्रत सुर जह वंदन आइ॥ नानाविधि मंगल कीं गार॥ घन हरह धुन सुन मन मोद जु होइ॥ ता प्रति षषकी आ(?)ति ही होइ॥ ३०॥ नाते हमकों सुष है सोई॥ गिरवर वंदौ कर धर दोइ॥ मारुत मंद सुगंध चलेइ॥ गंगोदिक जह बरसे सोइ॥ ३१॥ जियकी जाता पैरो धन होइ॥ गिरवर वंदौ कर धर दोइ॥ साराचरसात प्रसाधन साधन सोइ॥ निज अनुभव कौ ध्यान धरेई॥ सिवमंदिरकौ द्वारी सोई॥ गिरवर वंदौ कर धरि दोइ॥ ३२॥ सुर अनादिम भजो मन मालि॥ अनोभ(?) भजन तु माचित ल्याई॥ ३३॥ जो भव वंदे एक जु वार॥ नरक निगोद पसु गति टार॥ सुर सिवपद कौं पावे सोइ॥ गिरवर वंदो कर धर दोइ॥ ३४॥ जाकी महिमा अगम अपार॥ गणधर कह तन पावै पार॥ तुछ बुधु मैं मत करही न॥ कही भक्ति वसु केवल लीन॥ ३५॥

घत्तानंद छंद॥ श्री सिद्ध खेतं अति सुषदेतं सुरतंभावे ध(?) द्धि पार करे॥ अरकर्मा विदारन सिवसुष कारन जय गिर धर जगताता रं १॥ अर्घं॥

अथ आशीर्वाद॥ दोहा॥ १॥

सिखरसंम्मेदगिरे सदं ॥ जो मन वच तन साच ॥ दास जवाहर यो कहे ॥ सुरासिख सुष विलसाइ ॥ इत्यासीर्वाद ॥ चरित्र ॥ पितासु मोती लाल जवाहर के कही ॥ ककासु हीरालाल गुन पूरे लहे भाकपूरी गोत सुभा रित्र जानिये ॥ सरना जिनेस्वर धर्म इही उस्थानिये ॥ ॥ दोहा ॥ जस केला नेनहीं कही ॥ कही धरम के काज ॥ श्री जिनवर की भाक्ति पे ॥ मिल है सुष्ष समाज ॥ १ ॥ अरिल्ल ॥ रहै छ चपुर सहर जवाहलाल सी ॥ मुक्तागिर कौ चले हैं रषवरधार जी ॥ वंदन कर के आये फिर अमरावती ॥ मामा के हम रहै मास दो तीन अथ ॥ २ ॥ देषो सिषरविलास कछु माते हिर दैधरी ॥ ताके अक्षर अनुस्वार सिषरपूजा करी ॥ सुनियो वुधजन विनती वालक मे सही ॥ सुद्ध असुध जो होइ समझ लीजो इही ॥ ३ ॥ ती जो चतुर सुधार सुवुध जन भव्यजू ॥ मोह दोस मत दीजो कीजो सुधजू ॥ मो मे नहीं विवेक सुमत का ही नही ॥ पंडित चतुर सुजान तुम परखी नहीं ॥ ४ ॥ दोहरा ॥ अमरावत नग्री विषे ॥ पूजसमापत कीन ॥ छिमा जु सव जन तुम करो ॥ मोह दोस मत दीन ॥ १ ॥

विनतीएहीपूजामेंकी॥दोहा॥ कर
जिनपूजा अष्टविधिभावभक्तिमनिया
इ मोतीसुतअस्तुतकरै हाथजोरसि
रनाइ॥१॥ चालावेनतीमें॥ प्रभुजी
महिजगसमरथकोइ॥ गुनसमुद्रनस
धारास्वामीकोवर्ननहोइ॥ पंवेमुनग
णअसेग्यानी॥ हमसेमंदकहाकह
सकतेवुधकरअग्यानी॥१॥ इहीगरन
नतहैदीनो॥ अगमअपारकहीजिन
महिमावरननकोहीनो॥ किम्अबतुमभक्ति
करतोवाचाला॥ तिसवसहोइप्रभुकी
गुनकीगुनहैगुनमाला॥२॥ श्री प्रभु अनु
पनकेनाथा॥ जग चंद्रोपदचूडामनसम
परमधरमदाता॥ कर्म्मप्रभुतुम सूरन
करडारे॥ जयासिवकामिनकेधजिनेस्व
रसवहीकेप्यारे॥३॥ प्रभुतुमअगनित
बलधारी॥ अतुलअनलचतुष्टयधा
रकसबकोसुषकारी॥ प्रभुतुमतपल
छमीधरता॥ धर्मधुरंधरधीराजिनेस्व
रस्वरगमुकतदाता॥४॥ प्रभुतुमरत्न
त्रयधारी॥ तारनतरन॥ जिनेस्वरस्वामी
सबकोहितकारी॥ प्रभुतुमसंसेमदहा
री॥ निरविकारनिर्दोषजिनेस्वरगुनअ
नंतधारी॥५॥ प्रभुतुमकामसुभटवि
जइ॥ धरसंयमव्रतपालाजिनेस्वरपा
रितदलसजइ॥ प्रभुतुममोहमहामा

रो ॥ क्रोधमानमायाकौंत्यागौसिव
पदकौंधारौ ॥ ६ ॥ प्रभुगुनसागरहे भा
ति ॥ ध्यानजिहाजबैठकरगणधरप
ऊंचैभौपारौ ॥ प्रभुगुनकौरतवे ति
यदौ ॥ जतनबिनांजगमेंडपऊपर
आपाहिसेजुयदौ ॥ ७ ॥ सेवकुदेव
जुजसकौनित्यरहे ॥ पेअपनेघरही
केभीतरजसकौनहिलहे ॥ प्रभुतुमस
वकौसुषदाई ॥ जन्मजन्मकेपापकट
तेहेतुमरेगुनगाई ॥ ८ ॥ जगतमेंवहुप
दार्थजांनौ ॥ सुरतरुचिंतामनपारसहै
नवनिधिकौमांनौ ॥ ऐइकभवजानौ
भाई ॥ जेनिजोगजेजीऊकौहोइकिं
चतसुषदाई ॥ करेजेप्रभुचरननसेवा
जनमजनमसुषदाईप्रभुजीतुमहीहो
देवा ॥ तुमहीहोकृपानाथस्वामी
तुमवांधवजगतातदयानिधिअंत
रकेजांमी ॥ १० प्रभुतुमसवसुषकेदा
ता ॥ जगजीवनकेपालनवारदेतेसु
मसाता ॥ तुमहीहोगुनरतननषांनी
तुमपुनीतसवदरसीप्रभुजीतुम
हीसवजांनो ॥ ११ ॥ प्रभुविनतीनका
लमांही ॥ नहिसरनजीऊकौकोईपा
जगकेमांही ॥ प्रभुतुमकरुनानिधि
नाथा ॥ तुवसनमुरवहमठाडेतिसु
दिन ॥ जोरेंजुगहाथा ॥ १२ होइनही

जोसोनिरवांनो॥ जगनिवास छूटै अव
नारिदुषकोजो दांना॥ प्रभुतुमचरनां
बुजवासा॥ भवभयामे ते परतपा प्र
रजीहैजवाहरदासा॥३॥ श्रीगनेहिमं
गत प्रभुतुमसे॥ हेदयालद्दी जेवर
दानाधुसी सो हमसे॥ दोहा॥ त्रभु
वनपत अरजीसुनो॥ किरपानाथनि
धांन॥ भवसागरसे काढियो॥ सिव
पद दे भगवांन॥ विनतीसंपूर्णो
आरिष्ता॥ अब वैसाषवदीनवमी
सुभजानिये॥ सुक्रवारकेदिनांसमा
पतमानिये॥ इकसुनव को अंक ए व
कफेरालिषो॥ संवत इहै प्रमांणासर
समनमे नषो॥१॥ इति निपतमुर
सीधरि अमरमकवारन नेनी
गुरकीवैठक॥ आरिष्ता॥ अवभा
दोसुदी अष्टमी सुभजांनियो॥ बुधवा
रकेदिनां समापतमानियो॥ इकण व
को अंक इकांनो प्र॥ चारन वफिराल
षो॥ संवत इहै प्रमांणसरसमनमेल
षो॥ इति लिष्यतेसंपूर्णं भूलचू
क होयेतोपंडितजनसुधारलेने जीमे
रऊपरछिमाकरनेजी॥ इति

अथ अर्घ्यं लिख्यते॥ श्रीमंधर जिनं नत्वा लोकालोकप्रकाशकं तस्य पादयुगं चार्चे शुद्धसम्यक्त्वहेतवे॥ ॐ ह्रीं श्रीमंधर जिनदेवाय अर्घं॥ साकेतामंडनस्वामी देवदेवैं द्रवंदितं युगमंधर जिनाधीशा तस्य पूजा करोम्यहं॥ ॐ ह्रीं श्रीजुगमंधर जिनदेवाय॥ अर्घं॥ २॥ विदेहपार्श्वमेस्वामी विजयाराधिगिरे प्रभु पूजयामी अहं बाहू सोभिमान जगत् गुरुं॥ ॐ ह्रीं श्रीबाहूजिनदेवाय अर्घं॥ ३॥ सुष्ट गुणा सुबाहू स्वा सुस्थ पूजा करोति ये ते भव्या सभंते मो दं सौख्याचित जिनेश्वरं॥ ॐ ह्रीं॥ श्रीसुबाहू जिनदेवाय अर्घं॥ ४॥ धातुकीखंडे मध्ये सुसंजा तस्य स्वयं बुधा पूजयामि अहं भक्त्या देवदेवो सिरोमनी॥ ॐ ह्रीं॥ श्रीसुजात जिनदेवाय॥ अर्घं॥ ५॥ स्वयंप्रभ प्रभाक्रांते त्रैलोक्याधिपति जिनं कोटिसूर्यप्रभाजित्वा पूजयामि यहं प्रभु ॐ ह्रीं॥ श्रीस्वयंप्रभ जिनदेवाय अर्घं ६॥ रिषभानन अहं चार्चे रिषिमध्ये रिषी श्वरा सप्ततत्वानिरूपाय भव्यानां प्राते बोधये॥ ॐ ह्रीं श्री रिषभानन जिनदेवाय॥ अर्घं॥ ७॥ अनंतदर्श संज्ञा अनंतसुखसागरः अनंत

श्रीयेऽर्हंचाये अनंतगुणहेतवे॥ ॐ
ह्रीं॥ श्री अनंतवीर्यजिणदेवाय अ
र्घं॥ ८॥ सूरप्रभाप्रभुकांति भामंडल
विराजते रविकोटिप्रभाजित्वा पूजयां
मी अर्हंप्रभु॥ ॐ ह्रीं श्री सूरप्रभजिणदे
वाय॥ अर्घं॥ ९॥ विश्वविघ्नविना
शाय विश्वज्ञानप्रकासकं विशालाधि
श्वर्हंचार्येविश्वकर्मविनासये॥ ॐ ह्रीं
श्री विशालकीर्तिजिणदेवाय अ
र्घं॥ १०॥ वज्रधरः धराधराः पूजया
मिपदाकमं भवानंतसुखासीनं छत्र
त्रयविराजिते॥ ॐ ह्रीं श्री वज्रधरजिन
देवाय॥ अर्घं॥ ११॥ चंद्राननअर्हंचा
ये चंद्ररेषायतेप्रभु चंद्रकांतिप्रभा
जित्वा पूजयामिजिनेश्वरा॥ ॐ ह्रीं श्री
चंद्राननजिणदेवाए॥ अर्घं॥ १२
पुष्कराद्धिसुद्वीपेषु चंद्रबाहुविराज
ते पूजयामीअर्हंचैव भव्याणांसुखदा
यकं॥ ॐ ह्रीं श्री चंद्रबाहुजिणदेवा
य अर्घं॥ १३॥ भूयंगम अर्हंचाये के
वलज्ञानबोहिये भुजाभ्यंतरलेयेनः
संसारार्णवतारकं॥ ॐ ह्रीं श्री भूयंग
मजिणदेवाय॥ अर्घं॥ १४॥ ऐश्वर्य
ईश्वरोजातः पूजाणांतसुयंसुरा समो
सरणविभूत्याये शोभितेनहिंसया
ॐ ह्रीं श्री ईश्वरजिणदेवाय॥ अर्घं

१५ नेमीप्रभुजिनावंदे नेमीमानिसु
रासुरं तस्यपूजाम्यहंकृत्वा अष्ट
कर्मरिजासने॥ ॐह्रीं श्री नेमीप्रभजिरा
देवाय॥ अर्घं॥१६॥ वीरवीरमहांवी
रं वीरसेनमहंभटं पूजयामिप्रभावे
ण वीरवीर्यंपराक्रमं॥ ॐह्रीं॥ श्री
वीरसेनाजिणदेवाय॥ अर्घं॥१७॥
भद्रभद्रमहाधीरो महंतोसुखसा
गरं केवलज्ञानराजंते पूजयामीपद
क्रमं॥ ॐह्रींश्री महंभद्रजिणदे।वाय
अर्घं॥१८॥ देवजसयजस्य: कांति
प्रगटिकरतें: भूतले पूजयामी अहं
भक्त्या अष्टद्रव्यसुखाप्तये॥ ॐह्रीं
श्रीदेवजससजिणदेवाय॥ अर्घं
१९ अजितवीर्यवीर्यस्य जित्वामा
हिमहारिपु: ममरागादिहाति कृत्वा
पूजयामी जगत्प्रभु॥ ॐह्रींश्री अजि
तवीर्येजिणदेवाय अर्घं॥२०॥
अथअष्टकं॥ विमलसीतलस
जलकुंभकै मरराजनभजरामरना
शने विहरमानजिणभावपूजये वि
गतिदोषनिकर्मभिचूरये॥ जलं
१॥ मलयकेसरसुद्धसुगंधकं द
लितमोहमहांअरिनाशनं विह
रमान॥०॥ गंधं॥२॥ धवलतंदुल
पुंजसुनिर्मलै गुणसमूहसुअक्षै

८२

यछायके विहरमांणाजिणभाविपूजि
ए विगतदोषानिकर्मनचूरये॥ स
हतं॥ ३॥ विमलवोलसुकोतिकिकुं
दके मदनमूलविनासनिपुष्पके वि
हरमांनजि०॥पुष्पं॥ ४॥ घ्रतवपूरिज
मोकसुमोदके मतसुक्षीर सुषोव
उव्यंजने विहरमांन०॥नैवेद्यं॥ ५॥
रतनदीपकंचणसोभिते तिमिर
मोहविनासनदंसके॥ विहरमांन०॥
॥दीपं॥ ६॥ अगरचंदनसर्वसुधू
पके दहनिकर्मकलंकलभमगल
विहरमांन०॥धूपं॥ ७॥ सुरवरफल
सुसोभितसत्फले सुजनपूजतंपप
शिवाश्रिये: विहरमांन०॥फलं॥ ८
जलसुचंदनाक्षतपुष्पके चरुसु
दीपसुधूपफलार्घके विहरमांन०
अर्घ॥ अथजयमालवूर्वेलिष
आयेसोजानने॥ अथसिद्धपू
जाकेअंग॥ ऊर्ध्वाधोरयुतंसविंदुसपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं
...

विंदुनिवक्षरं नानाधस्यपिपूर्षविंदु
वदमनाहतअनाहतनक्षरं॥ १ गा
था॥ नजोपुरसायारो अयवोमिय
सरीरगत्यथो सियकिरनविस्फुर
तो अप्पापरमप्पसरूवो १ अर्हंमि
त्याक्षरंब्रह्म वाचकंपरमेष्ठिनां
श्रीसिद्धचक्रस्यसद्बीजं सर्वतः प्र

नमाम्यहे जस्यानुग्रहतो ग्रहपरि
तत्कात्मरूपात्मनः साद्रव्यंचिदचि
त्रकालविषयस्वोस्वरभी दंगुने सा
र्थं व्यंजनपार्थयेसमवया: जाणा
तिबोधासमं तत्सम्यक्तमसे॥१॥षक
र्मभिदुरं सिद्धायरंनौमिवा॥१॥ ॐ ह्रीं
सम्मताये नमः॥ अर्घं॥१॥ जस्सा
मान्यविसेषयो: सहप्राप्यैकस्वामि
स्वछयोर्दीपवा चिंतंद्योतकमुडिगरा
नमुदनौराज्यतेहष्टिव धांबात्यमि
तेत्प्रसीदनुवीवा: भावोद्धुयपीपि
ताष्ठनम भ्याप्रनमामिव पालित: २ गर
स्युक्तिमुक्तिश्रीये: २॥ ॐ ह्रीं अग्रालगं
नायेनमः॥ अर्घं॥२॥ सेवालोचन
मात्रमित्यविनोरा: वारंसतंदर्संनं सा
कारंचिविशेषगोचमिति: ज्ञानंप्रवा
दीदयांतेनेचेक्रमातिनीसरजेस: प्र
देसकेसरेना स्फुजंतिजुगतपुर्विरज
सांयुष्माकमंगातिका:॥ ॐ ह्रीं श्वरां
तदर्संनाये॥ अर्घं॥३॥ सार्त्तिव्यार्ति
यिभाक्तिविश्वार्थीर्था विविधाकारो
धकम्मीरिता संतानंतभवस्थमुक्तपुरु
षो: स्याद्वाविवाधोव्यवात् सत्वंत
त्वमसंवरव्यतिकरं कन्दात् ह्वानं
प्रत्ययो: भोक्तनचत्वयास्मरामिपर
मार्गजेग्रविनो: सवा॥ ॐ ह्रीं व्रि॥

तवीर्यायनमः॥ अर्घं॥४॥ जघ्ना हं
तीनजातु किंचिदपिना: व्याहन्यते के
नापि धाम्नि: पीतसमस्तोपिसद्राकैनो
पिनस्पृश्यते जत्सर्वज्ञसमस्तमप्य
विग्रहेस्तस्यापिवार्ष्याहिरं नद्भुतसु
स्मतमंस्वतत्त्वप्रभवाः भव्यंभवो
त्छित्तये॥ ॐह्रींअनंतसौक्ष्म्याय
नमः॥५॥ अर्घं॥ गत्वासौसिरस्य
धर्मवृत्तते चंद्रोपमेयान्मुखः प्रा
ग्भारा हृासिलातलोपरिमनो: गोनै
कपरापृतिके योगोनंगदेरानिमित्य
पिमप्यो सेवाद्येवाच्युल ध्या यानै
नामितोपितिष्टतिसवागुन्नावगाहो
गुना॥ ॐह्रीं अवगाहनायनमः
अर्घं॥६॥ सिद्धात्मेदुरवोनिरा
श्रयाः प्रासंतपापिंडवा तेधवस्वेला
धवोकेनूलवदिनाध्यतेर्थ्यचंद्रेन
तुं क्षिपातितनुवात आतवलये:
नत्पुक्तियुक्तद्भुते नक्कोऽजपमपी
स्तेगुरुः लघु:रु द्रोकथंयोप्रुला
ॐह्रींअगुरुलघुत्वायनमः॥ अ
र्घं॥७॥ जचापाचयहेत भैरव भवाःश्व
दर्थिसमयाश्रमो पुष्माभिर्विदधे
व्ययच्यतनतूःयाबाधमत्तधपं
येनेङ्घोलसुखामृतानैवनिरा:तु
कामिपेको छन्नसा चित्कायीवेल

यासिवः कलशत्वं शम्पत्तिभोगी
श्वरः ८ ॥ ऊँ ह्रीं अव्याबाधाय
नमः ॥ अर्घं ॥ एतेनंतगुनाद्गुना
स्फुटमपि ध्वत्याद्यदिष्वाभवाः
तत्वाज्ञावपितृस्ततं यवहदिः
प्रधान्यतस्तान्विकेः एतज्ञाव
नायातिरंतरगलाद्यौन्यजाल स्यमे
स्तादस्यंतलथासनंतानिरूदाः
नंदात्मभिश्वात्मनी ॥ ८ ॥ पूर्णा
र्घं नक्षीराभेवमर्लितामिवहृदिः
न्यस्तामिवालोकबा नेतासिद्ध
ला गुंस्छतीवगतीयामस्वाछिवा
रत्यापुष्पीदि ॥ अथ षोडस
कारनके अर्घलिख्यते ॥ ॥ ॥
ऊँ ह्रीं दर्सनविसुद्धायेनमः ॥ अर्घं
१ ॥ ऊँ ह्रीं विनयसंपन्नतायेनमः ॥ अ
र्घं ॥ २ ॥ ऊँ ह्रीं सीलव्रतेष्वनतीचारायेनमः
॥ अर्घं ॥ ३ ॥ ऊँ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानो
पयोगायनमः ॥ अर्घं ॥ ४ ॥ ऊँ ह्रीं संवे
गायेनमः ॥ अर्घं ॥ ५ ॥ ऊँ ह्रीं शक्ति
स्त्यागायेनमः ॥ अर्घं ॥ ६ ॥ ऊँ ह्रीं
शक्तितपसेयेनमः ॥ अर्घं ॥ ७ ॥ ऊँ ह्रीं
साधुसमाधायेनमः ॥ अर्घं ॥ ८ ॥ ऊँ
ह्रीं वैयावृत्तकरनायेनमः ॥ अर्घं ॥ ऊँ
ह्रीं अर्हद्भक्त्यायेनमः ॥ अर्घं ॥ १०
ऊँ ह्रीं आचार्यभक्त्यायेनमः ॥ अर्घं ॥

यासिवं कलखात्वं अप्यतिजोगी
श्वरा ८॥ ॐ ह्रीं अव्याबाधाय
नमः॥ अर्घं॥ एतेनंतगुनाहूना
स्फुटमपि धत्याष्टदिव्या भवाः
तद्वाज्ञावयितुं सतंयवहृदिः
प्रधान्यतस्त्वान्विके एतज्ञाव
नायानितंतगलाद्दोल्यजालस्यमे
सादस्यंतलयासनंताचिरृद्दाः
नंदात्मभिश्यात्मनी॥ १०॥ पूर्णा
र्घं भक्त्यैराम वरलिंतामिवहृदिः
यस्त्रामिवालोकबा नेतासिद्ध
ता गुरुछत्ती पगतियामस्वाद्दिवा
स्त्वाद्दोद्दीद॥ अथ सोलह
कारनके अर्घ लिख्यते॥ ॥ ॥
ॐ ह्रीं दर्सनविसुद्धायेनमः॥ अर्घं
१॥ ॐ ह्रीं विनयसंपन्नतायेनमः॥ अ
र्घं॥ २॥ ॐ ह्रीं सीलव्रतेष्वनतीचारायेनमः
अर्घं॥ ३॥ ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानो
पयोगायेनमः॥ अर्घं॥ ४॥ ॐ ह्रीं संवे
गायेनमः॥ अर्घं॥ ५॥ ॐ ह्रीं सक्ति
स्त्यागायेनमः॥ अर्घं॥ ६॥ ॐ ह्रीं
सक्तितपसेयेनमः॥ अर्घं॥ ७॥ ॐ ह्रीं
साधुसमाधायेनमः॥ अर्घं॥ ८॥ ॐ
ह्रीं वैयावृत्तकरनायेनमः॥ अर्घं॥ ९॥
ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तयायेनमः॥ अर्घं॥ १०
ॐ ह्रीं आचार्यभक्तायेनमः॥ अर्घं॥

११ ह्रीबहुश्रुतभक्त्यायेनमः॥ अर्घं॥१२॥ ॐह्रींप्रवचनाभक्त्यायेनमः॥ अर्घं॥१३॥ ॐह्रीं आवश्यकापरीहाण्यायेनमः॥ अर्घं॥१४॥ ॐह्रीं मार्गप्रभावनायेनमः॥ अर्घं॥१५ ॐह्रींप्रवचनावात्सल्यंकृतायेनमः अर्घं॥१६॥ एताषोडसभावनायतिवरा कुर्वंतीतेमंगले तैतीर्थंकरस्यनामपदवीमायुर्लभंतेपरं विस्तंके चनपर्वतेसुविधिनास्नानार्चनंदेवता राज्यसौख्यमनेकधापरितयो मोक्षस्यसौख्यस्पदं॥१॥ पूर्णार्घं॥ इतिसंपूर्णं

करनायेनमः ॥ अर्घं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं
अर्हद्भक्त्यायेनमः ॥ अर्घं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं
आचार्जभक्त्यायेनमः ॥ अर्घं ॥ १२ ॥
ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्त्यायेनमः ॥ अर्घं ॥ १३ ॥
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्त्यायेनमः ॥ अर्घं ॥
१३ ॥ ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणियेन
मः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनायेनम ॥
अर्घं ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं प्रवचनावातसल्यं
कतायेनमः ॥ अर्घं ॥ १६ ॥ एताषोड
सभावना जातिवरा ॥ कुर्वंती तीमंगलं ॥
तेवैती र्थंकरस्यनामपदवी ॥ मायुल्लभं
तेपरं ॥ विन्नंकेंचगापर्वते सुविधना ॥
स्नानार्थनंदेवता ॥ राज्यंशोकमनेधा
परितयोः ॥ मोक्षस्यसोरव्यास्पदं ॥
१७ ॥ पूर्णार्घं ॥ दोहा ॥ षोडसकारन
गुणकरै ॥ हरैस्यतुर्गति वास ॥ पापपु
न्यसवनासिकै ॥ ग्यांनभांनपरकास
१ ॥ जयमाला ॥ धरसविशुद्ध धोरैजो
कोई ॥ ताकोआवागमननहिहोई ॥ वि
नेमहाधारैजोप्रानी ॥ सिववनताकीस
खीवरवानी ॥ २ सोलसदादिढ जीनर
पालै ॥ सोस्रोरनिकोव्राघदाटालै ॥ ग्यां
नअभ्यासकरैमनमांही ॥ ताकेमोहम
हातमनांही ॥ ३ जोसमय्गभावविस्ता
रै ॥ सुरगमुकतिपुरआपनेहोवै ॥ दान
देयमनहरषविसेखै ॥ इहभवजसपरभ

[OrderDescription]
,CREATED=15.10.20 12:42
,TRANSFERRED=2020/10/15 at 14:02:16
,PAGES=168
,TYPE=STD
,NAME=S0004012
,Book Name=M-2156-PANCH MANGAL PUJA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF
,FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF
,FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000026.TIF
,FILE27=00000027.TIF
,FILE28=00000028.TIF
,FILE29=00000029.TIF
,FILE30=00000030.TIF
,FILE31=00000031.TIF

FILE32=00000032.TIF
,FILE33=00000033.TIF
,FILE34=00000034.TIF
,FILE35=00000035.TIF
,FILE36=00000036.TIF
,FILE37=00000037.TIF
,FILE38=00000038.TIF
,FILE39=00000039.TIF
,FILE40=00000040.TIF
,FILE41=00000041.TIF
,FILE42=00000042.TIF
,FILE43=00000043.TIF
,FILE44=00000044.TIF
,FILE45=00000045.TIF
,FILE46=00000046.TIF
,FILE47=00000047.TIF
,FILE48=00000048.TIF
,FILE49=00000049.TIF
,FILE50=00000050.TIF
,FILE51=00000051.TIF
,FILE52=00000052.TIF
,FILE53=00000053.TIF
,FILE54=00000054.TIF
,FILE55=00000055.TIF
,FILE56=00000056.TIF
,FILE57=00000057.TIF
,FILE58=00000058.TIF
,FILE59=00000059.TIF
,FILE60=00000060.TIF
,FILE61=00000061.TIF
,FILE62=00000062.TIF
,FILE63=00000063.TIF
,FILE64=00000064.TIF
,FILE65=00000065.TIF
,FILE66=00000066.TIF
,FILE67=00000067.TIF
,FILE68=00000068.TIF
,FILE69=00000069.TIF
,FILE70=00000070.TIF
,FILE71=00000071.TIF

FILE72=00000072.TIF
,FILE73=00000073.TIF
,FILE74=00000074.TIF
,FILE75=00000075.TIF
,FILE76=00000076.TIF
,FILE77=00000077.TIF
,FILE78=00000078.TIF
,FILE79=00000079.TIF
,FILE80=00000080.TIF
,FILE81=00000081.TIF
,FILE82=00000082.TIF
,FILE83=00000083.TIF
,FILE84=00000084.TIF
,FILE85=00000085.TIF
,FILE86=00000086.TIF
,FILE87=00000087.TIF
,FILE88=00000088.TIF
,FILE89=00000089.TIF
,FILE90=00000090.TIF
,FILE91=00000091.TIF
,FILE92=00000092.TIF
,FILE93=00000093.TIF
,FILE94=00000094.TIF
,FILE95=00000095.TIF
,FILE96=00000096.TIF
,FILE97=00000097.TIF
,FILE98=00000098.TIF
,FILE99=00000099.TIF
,FILE100=00000100.TIF
,FILE101=00000101.TIF
,FILE102=00000102.TIF
,FILE103=00000103.TIF
,FILE104=00000104.TIF
,FILE105=00000105.TIF
,FILE106=00000106.TIF
,FILE107=00000107.TIF
,FILE108=00000108.TIF
,FILE109=00000109.TIF
,FILE110=00000110.TIF
,FILE111=00000111.TIF

FILE112=00000112.TIF
,FILE113=00000113.TIF
,FILE114=00000114.TIF
,FILE115=00000115.TIF
,FILE116=00000116.TIF
,FILE117=00000117.TIF
,FILE118=00000118.TIF
,FILE119=00000119.TIF
,FILE120=00000120.TIF
,FILE121=00000121.TIF
,FILE122=00000122.TIF
,FILE123=00000123.TIF
,FILE124=00000124.TIF
,FILE125=00000125.TIF
,FILE126=00000126.TIF
,FILE127=00000127.TIF
,FILE128=00000128.TIF
,FILE129=00000129.TIF
,FILE130=00000130.TIF
,FILE131=00000131.TIF
,FILE132=00000132.TIF
,FILE133=00000133.TIF
,FILE134=00000134.TIF
,FILE135=00000135.TIF
,FILE136=00000136.TIF
,FILE137=00000137.TIF
,FILE138=00000138.TIF
,FILE139=00000139.TIF
,FILE140=00000140.TIF
,FILE141=00000141.TIF
,FILE142=00000142.TIF
,FILE143=00000143.TIF
,FILE144=00000144.TIF
,FILE145=00000145.TIF
,FILE146=00000146.TIF
,FILE147=00000147.TIF
,FILE148=00000148.TIF
,FILE149=00000149.TIF
,FILE150=00000150.TIF
,FILE151=00000151.TIF

FILE152=00000152.TIF
,FILE153=00000153.TIF
,FILE154=00000154.TIF
,FILE155=00000155.TIF
,FILE156=00000156.TIF
,FILE157=00000157.TIF
,FILE158=00000158.TIF
,FILE159=00000159.TIF
,FILE160=00000160.TIF
,FILE161=00000161.TIF
,FILE162=00000162.TIF
,FILE163=00000163.TIF
,FILE164=00000164.TIF
,FILE165=00000165.TIF
,FILE166=00000166.TIF
,FILE167=00000167.TIF
,FILE168=00000168.TIF
,